ऑनलाइन डिजिटल मासिक बाल पत्रिका

पायस

अगस्त, 2021

- झंडा ऊंचा रहे हमारा
- आज़ादी मेरी आज़ादी
- मैं बाँधूँगी राखी
- कोरोना को चुनौती देता टोक्यो ओलंपिक

TOKYO 2020

ऑनलाइन डिजिटल मासिक बाल पत्रिका

पायस

अगस्त 2021
वर्ष : 1, अंक : 8

इस अंक की रचनाएं

कहानियां

क्षमा शर्मा :	आज़ादी मेरी आज़ादी	8
देवेंद्र कुमार :	दोस्ती के रंग	14
डा. सुनीता :	विजयन का बगीचा	16
मनोहर चमोली 'मनु' :	आमने-सामने	18
अनिल जायसवाल :	टुम्टू की राखी	20
डॉ. शील कौशिक :	आज़ादी का जश्न	24
अर्चना त्यागी :	राष्ट्रभक्ति	26
डॉ. मोहम्मद अरशद खान :	कोहन के औज़ार	28
शैलेन्द्र सरस्वती :	होशियारो की नाक	32
विनीता मोटलानी :	खिड़की वाली गिलहरी	34
शिखर चंद जैन :	वेस्ट का बेस्ट उपयोग	36

कविताएं

सन्तोष कुमार सिंह :	होती बुरी दासता	5
प्रकाश मनु :	भैया, मैं बाँधूंगी राखी	12
शिवचरण सरोहा :	पर्व स्वतंत्रता	13
डॉ सुरेन्द्र विक्रम :	प्यारा रीशू	18
नलिन खोईवाल :	रोशन है इससे जग सारा	23
डॉ. फ़हीम अहमद :	पतंग लहराए	38
शिखा सक्सेना :	आशाएं आकाश न छूतीं	39

आज़ादी पर विशेष

झंडा ऊंचा रहे हमारा : 6
बच्चे भी थे आज़ादी के दीवाने :10

ओलंपिक विशेष

कोरोना को चुनौती देता टोक्यो ओलंपिक	42
ओलंपिक का इतिहास	45
ओलंपिक की कुछ रोचक बातें	47
ओलंपिक में भारत	48
कारनामे कमाल के	50
यह भी जानो	52

जानकारी

पुरी : 30
हमसे नाम है ज़ेब्रा क्रासिंग : 40

बाल मंच

चित्र : (54-56) : ख़ुशी कौशिक, रुद्रांजलि राजे मिश्रा, ऐशानी हल्दर, प्रभाकर कुमार, लिली यादव, आन्या, तानिया कौशिक, सिद्धि
कहानी : अलीशा सक्सेना : पछतावा 57
कविता : काजल धारीवाल : बारिश का मौसम 57
एलकॉन इंटरनेशनल के सितारे (58-63): ध्रुव, त्विशा पुजारा, वाणी अरोड़ा, श्रेयान गुप्ता, वंशिका तिवारी, अनुष्का झा, अरनव जैन, रिदम अग्रवाल, रिदिमा भटनागर, गुरनूर कौर, निमरत, प्रीशा अग्रवाल, अनविका शर्मा, टियाना गुप्ता, भूमि सिंह, लावण्य श्रीवास्तव, प्रजेश रस्तोगी,

कवर इलस्ट्रेशन : इंदिरा

संपादकीय

चुनौतियों से न डरेंगे

वैसे कहने को सिर्फ एक तारीख है 15 अगस्त, पर यह तारीख हर देशभक्त भारतीय के दिल में बसता है। यह वो दिन है, जब गुलामी के अंधेरों से निकलकर हम सब फिर से आजाद हुए थे।

आज आजाद हुए हमें 70 से ज्यादा साल हो गए। इन सत्तर सालों में गरीबी, भुखमरी, जात-पात, भ्रष्टाचार, पड़ोसी देशों की कुटिलता से लड़ते हुए, हम उस मुकाम पर पहुंचे हैं, जहां अन्य देश हमें इज्जत की नजरों से देखते हैं।

पर सोशल मीडिया के इस दौर में कोई प्रामाणिक पुस्तकें पढ़ने में अपना समय खराब नहीं करना चाहता। इंस्टेंट नूडल्स की तरह इस दौर में लोग इंस्टेंट खबरों पर निर्भर करने लगे हैं। देश और देश के इतिहास पुरुषों का चरित्र हनन करने के लिए इस सोशल प्लेटफार्म का बहुत दुरुपयोग हो रहा है। आज देश को इससे भी आजादी की जरूरत है। तो बच्चो, इस स्वतंत्रता दिवस पर प्रण करो कि प्रामाणिक माध्यम से मिली खबरों पर ही विश्वास करोगे, उन्माद और भ्रम फैलाने वाली खबरों पर ध्यान नहीं दोगे।

इस बार का अगस्त महीना सावन, ओलंपिक, राखी और जन्माष्टमी का महीना भी है। और ये सब कोरोना की तीसरी लहर को फैलने में मदद कर सकते हैं, जिस लहर के अगस्त में ही आने की बात कही जा रही है। अब कोरोना से बचाव के तरीके बताने की किसी को जरूरत नहीं, यह अब हम सबको रट गए हैं। पर लोग इन बचाव के तरीकों पर कितना अमल करते हैं, यह हम पिछले दिनों देख चुके हैं, जब वीकएंड पर लोग हजारों की संख्या में मनाली, मसूरी और शिमला पहुंच गए थे। दरअसल हम खुद गैर जिम्मेदार हैं और अपनी नाकामी को सरकार के मत्थे मारने में माहिर हैं। तुम सबके लिए यह चुनौती है कि खुद का ध्यान रखते हुए परिवार का भी ख्याल रखो ताकि वे भी कोरोना के खिलाफ जंग को भूलकर उसके सहायक न बन बैठें।

हर चार साल बाद होने वाला ओलंपिक भी इस महामारी के कारण पांच साल बाद हो रहे हैं। 2021 में होने के बाद भी ये 2020 के ओलंपिक ही कहलाएंगे। एक साल देरी से होने पर भी इस ओलंपिक पर कोरोना का खतरा बुरी तरह मंडरा रहा है। खेल शुरु होने से पहले कोरोना से संक्रमित एक अधिकारी और दो खिलाड़ी मिल चुके हैं। सच्चाई तो यह है कि कोरोना के खतरे से जूझते हुए इस ओलंपिक को बिना स्थगित किए पूरा करना हाल के दिनों की सबसे चुनौती है। इस चुनौती में भाग लेने भारत से भी 200 से ज्यादा खिलाड़ी और अधिकारी टोक्यो पहुंचे हैं। उनके साथ अन्य देशों के खिलाड़ी भी सही-सलामत ओलंपिक में खेलकर अपने घर लौटें, यही कामना है।

अनिल जायसवाल

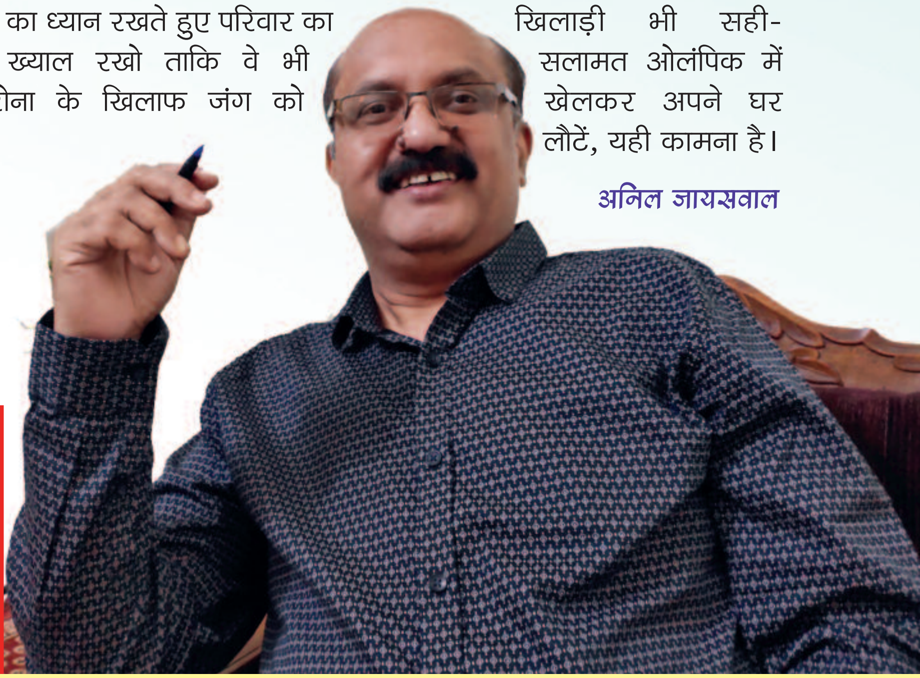

एक अपील

यह पत्रिका आप तक निशुल्क पहुंच रही है। अगर आप को लगे कि पत्रिका तैयार करने में मेहनत की गई है, तो कृपया पढ़ने के बाद इसका 20 रुपए शुल्क मानकर सहयोग करें। धन्यवाद

ऑनलाइन डिजिटल मासिक बाल पत्रिका **पायस**

संपादक : अनिल जायसवाल

Email : payasmagazine@gmail.com
Facebook : https://www.facebook.com/payasbaalpatrika
Whatsapp : 7982014609
Youtube : payas magazine
https://youtube.com/channel/UCvXDRK5Xz_dwnFfGwtfGLJg
Blog : https://payasbaalpatrika.blogspot.com/

- लेखक व बच्चे रचनाएं भेजने के लिए ईमेल का प्रयोग करें।
- ह्वाट्सएप पर रचनाएं स्वीकार नहीं की जाएंगी।

संपादकीय पता : **PAYAS MAGAZINE**
Anil Jaiswal, 174-B, DDA Lal Qtrs,
West Punjabi Bagh, New Delhi-110026

धन्यवाद ज्ञापन

आप सबके सहयोग से जनवरी 2021 से बच्चों के लिए एक ऑनलाइन निशुल्क बाल पत्रिका निकालने की जो योजना थी, वह मूर्त रूप लेने में सफल रही। अब पायस का नया अंक आप सबके सामने है।

इस राह पर आप सबके भरोसा चला। सब साथियों का सहयोग मिला। जिन साहित्यकार साथियों से रचना मांगी, उन्होंने सहर्ष अपनी रचना के साथ शुभकामनाएं भी दीं। कुछ साथियों ने निशुल्क रचना देकर हिम्मत बंधाई, तो कुछ चित्रकार साथियों ने नाम मात्र का शुल्क लेकर कहानियों के लिए सुंदर चित्र बनाए। बहुत से साथियों ने पत्रिका को आर्थिक मदद दी, जिससे पत्रिका के लिए आवश्यक खर्चों को पूरा किया गया।

यहां उन साथियों को नमन, जिन्होंने पत्रिका के लिए आर्थिक मदद की।

1. क्षमा शर्मा
2. डॉ. प्रकाश मनु
3. रमेश तैलंग
4. मोनिका अग्रवाल
5. दीप्ति मित्तल

एक अपील

पत्रिका तैयार करने में धन की आवश्यकता होती है। तमाम खर्चों के बावजूद यह पत्रिका आप तक निशुल्क पहुंच रही है। अगर आप को लगे कि पत्रिका तैयार करने में मेहनत की गई है, तो पढ़ने के बाद 20 रुपए इसका शुल्क मानकर सहयोग करें।

धन्यवाद

भुगतान करना चाहें, तो

1 प्रति : 20 रुपए, एक वर्ष : 240 रुपए

एकमुश्त सहयोग : इच्छानुसार

आगे भी आप सबका सहयोग रहा, तो हम सब मिलकर इस पत्रिका को एक ऐसी ऊंचाई देने में सफलता प्राप्त करेंगे कि लोग हर महीने इस पत्रिका का बेसब्री से इंतजार करेंगे।

ONLINE TRANSFER / UPI

STATE BANK OF INDIA

Anil Kumar Jaiswal

S/A no- 20155811729

Ifsc code SBIN0005943

Mobile number associated with account 9810556533

PAYTM : 7982014609

PHONEPE : 9810556533

GOOGLE PAY : 9810556533

ANIL JAISWAL

संपादक : अनिल जायसवाल

9810556533, 7982014609

email : **payasmagazine@gmail.com**

अपने लेखक को जानिए

सन्तोष कुमार सिंह : सेवानिवृत्त इंजीनियर। अब स्वतंत्र लेखन। बाल कविताएं, बाल गीत, बाल कहानियां और बाल पहेलियां लेखन। बाल साहित्य की 29 पुस्तकें प्रकाशित।

होती बुरी दासता

दादाजी जब पास बिठाते।
बुरी दासता हो, समझाते।।
अंग्रेजों की जब थी सत्ता।
भारतीय की कुछ न महत्ता।।
खोई आजादी जब पाने।
निकल पड़े कोटिक दीवाने।।
खुदीराम, सावरकर आए।
कोटि-कोटि जन-जन को भाए।।
गोरे उनको सजा सुनाते।
फाँसी फंदे में लटकाते।।
कुछ को भेजा काला पानी।
कुछ की बीती वहीं जवानी।।
कोल्हू का भी बैल बनाते।
ऊपर से कोड़े बरसाते।।
लाला लाजपत राय बिचारे।
सिर में लाठी दे दे मारे।।
गांधी चाह रहे आजादी।
पर थी नीति अहिंसावादी।।
क्रांतिवीर हर रहा खिन्न था।
वैचारिक बन गयी भिन्नता।।
लात के भूत बात कब मानें।
सिर्फ लात का भय ही जानें।।
क्रांतिकारियों ने तब ठानी।
अब न चले इनकी मनमानी।।
भले क्रांतिकारी थे थोड़े।
काँप उठे पर इनसे गोरे।।
गोरा अफसर मिलकर मारा।
लंदन जा डायर संहारा।।
शेरे दिल थे ऊधम सिंह।
बिस्मिल, आसफ, रोशनसिंह।।
घटना बड़ी हुई काकोरी।
दहली पुलिस बहुत ही गोरी।।
शेखर जिंदा पकड़ पाई।
खुद गोली खा जान गँवाई।।
राजगुरू, सुखदेव, भगतसिंह।
गरज उठे ज्यों वे थे सिंह।।
चाहे फाँसी पर लटकाए।
गोरे इनको झुका न पाए।।
कई दशक तक चली लड़ाई।
तब हमने आजादी पाई।

झंडा ऊंचा रहे हमारा

अनिल जायसवाल

पंद्रह अगस्त वो दिन है, जब हमने सदियों की गुलामी के बाद आजादी पाई। 14 अगस्त की रात के 12 बजे आज के विजय चौक पर हजारों लोग इस शुभ घड़ी के इंतजार में खड़े थे। जैसे ही रात के बारह बजे और पंडित जवाहरलाल नेहरू ने भारत के प्रथम प्रधानमंत्री के रूप में शपथ ली, भारत आजाद देशों की पंक्ति में खड़ा हो गया। उस समय नेहरू जी का दिया गया भाषण दुनिया के सर्वोत्तम भाषणों में से एक माना जाता है।

15 अगस्त को लाल किले पर झंडा फहराकर नेहरू जी ने करोड़ों भारतीय दिलों की आजाद भारत में सांस लेने की इच्छा पूरी की।

पर यह पावन दिन आया कैसे? किस तरह भारतीय कहलाने का हक पाने के लिए लोगों ने अपना सब कुछ देश के लिए कुर्बान कर दिया, इसका एक लंबा इतिहास है।

1857 के स्वतंत्रता संग्राम की पहली लड़ाई के बाद 90 साल लगे भारत को आजाद होने में। इसमें गांधी नेहरू के शांतिपूर्ण प्रयासों का हाथ था, तो चंद्रशेखर आजाद, भगत सिंह और खुदीराम बोस जैसे क्रांतिकारियों की कुर्बानियों का भी कम बड़ा हाथ न था। उस समय नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने आजाद हिंद फौज बनाकर अंग्रेजों के मन में डर बैठा दिया कि भारत की जनता आजादी पाने के लिए किसी भी हद तक जाने को तैयार है।

भगत सिंह की कुर्बानी

गांधी जी शांतिपूर्ण तरीके से अंग्रेजों को भारत छोड़ने के लिए मजबूर करना चाहते थे। पर भगत सिंह और चंद्रशेखर आजाद जैसे नौजवानों का मानना था कि अंग्रजों का तब तक भारत छोड़ने पर मजबूर नहीं किया जा सकता, जब तक उन्हें उनकी भाषा में जवाब नहीं दिया जाएगा। इन नौजवानों ने हिंसा का रास्ता अपनाने से परहेज नहीं किया। अंग्रेजों के मन में डर पैदा करने व इंग्लैंड तक अपनी आवाज पहुंचाने के लिए, पहले लाहौर में बर्नी सैंडर्स की हत्या की और उसके बाद दिल्ली की केंद्रीय संसद में भगत सिंह ने सुखदेव व राजगुरु के साथ मिलकर बम-फेंका व अपनी बात पहुंचाने के लिए पर्चे गिराए। इन्होंने भागने से मना कर दिया। अंग्रेज सरकार ने इन्हें 23 मार्च 1931 को फांसी पर लटका दिया गया।

लाहौर अधिवेशन की धमक

स्वतंत्रता पाने से करीब 18

वर्ष पूर्व 1929 में अपने लाहौर अधिवेशन के सत्र में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने पूर्ण स्वराज की घोषणा की और 26 जनवरी को स्वतंत्रता दिवस के रूप में घोषित किया।

इस तरह के स्वतंत्रता दिवस समारोह का आयोजन भारतीय नागरिकों के बीच जोश जगाने और अंग्रेजों पर स्वतंत्रता देने के लिए दबाव डालने के लिए किया गया।

स्वतंत्रता के बाद

जब भारत आजाद हुआ, तो देश तहस-नहस की हालत में था। एक तो सैकड़ों रियासतें, उस पर देश का दाएं और बाएं दोनों तरफ से विभाजन किसी भी नए-नए स्वतंत्र हुए देश की हालत खराब करने के लिए काफी था। उस पर लाखों लोगों की विभाजन के वक्त हत्या और लाखों शरणार्थी को बसाने का दायित्व। पर भारत के नेता और नई सरकार सारी मजबूरियों का सामना करते हुए देश को विकास के मार्ग पर डालने पर सफल रही।

तिरंगे का निर्माण

भारत आजाद हुआ और सरदार वल्लभ भाई पटेल के प्रयास से कुकुरमुत्तों की तरह उगे रियासतों को एक करके अखंड भारत का सपना पूरा किया गया। भारत की आजादी की तैयारी होते ही अखंड भारत के लिए एक झंडे की भी जरूरत को महसूस किया गया था।

गांधी जी के कहने पर 1921 में कांग्रेस के लिए पिंगली वेंकैया ने एक झंडे का निर्माण किया था। इसमें केसरिया और हरा रंग हिंदू और मुसलमान धर्म के प्रतीक के रूप में रखा गया। अन्य धर्मों को स्थान देने के लिए गांधी जी ने सफेद रंग को दोनों के बीच में रखवाया। चरखे को बीच में स्थान दिया गया। स्वतंत्र भारत के लिए इसी झंडे को थोड़ा संशोधित करते हुए स्वीकार कर लिया गया। चरखे का स्थान अशोक चक्र को दिया गया और उसमें 24 तीलियां रखी गईं।

स्वतंत्र भारत के सपने

देश को आजाद होने के बाद विकास की राह पर डालने के लिए समय-समय पर कई योजनाएं बनीं। अन्न के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनने के लिए हरित क्रांति का आह्वान हुआ, तो बाद में श्वेत क्रांति के द्वारा दूध के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता प्राप्त की गई। देश में कृषि और बिजली उत्पादन को ध्यान में रखते हुए नहरों और विशाल बांधों का डाल बिछाया गया।

देश और युद्ध

ऐसा नहीं कि देश स्वतंत्रता के बाद शांति के साथ प्रगति करता रहा। आजादी के कुछ ही महीने बाद कश्मीर में पाकिस्तान से युद्ध हुआ। इसके बाद 1965 और 1971 में भी उनसे युद्ध हुआ पर भारतीय सेना तीनों युद्ध में तिरंगे को फहराने में सफल रही। हां, 1962 के चीन युद्ध ने जरूर देश को धक्का पहुंचाया। इसके बाद भी 1999 में कारगिल युद्ध और आजकल चीन के साथ खटपट चलती रही है। पर भारत के तिरंगे को आंच नहीं आने दी गई।

खेलों में भी तिरंगा फहराया

भारत ने अपना झंडा खेलों में भी खूब फहराया। टीम खेलों हॉकी और क्रिकेट में हम विश्व चैंपियन बने, तो एकल खेलों में अनेक खिलाड़ियों ने विश्व चैंपियन बनकर तिरंगे की शान को बढ़ाया।

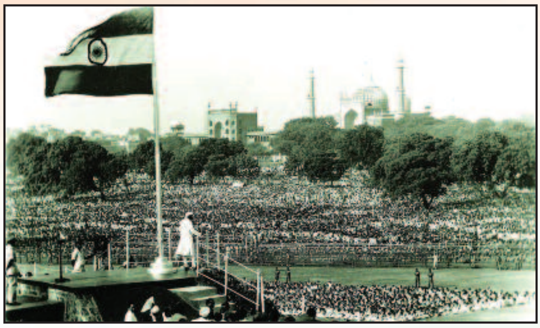

आजादी मेरी आजादी

आज भोलू बड़ा खुश था। अगले हफ्ते पंद्रह अगस्त था। स्कूल में आजादी का त्योहार मनाया जाने वाला था। बच्चों को न केवल तरह-तरह से इसे मनाना था, बल्कि ये भी बताना था कि वे आजादी से क्या मतलब समझते हैं?

उसने अक्सर मां के मुंह से सुना था कि काश मैं भी चिड़िया होती और आसमान में आजादी से उड़ती फिरती। तो क्या आजादी माने चिड़िया की तरह उड़ना होता है? एक बार पापा ने कहा था कि उनके जमाने में 'अ' से अमरूद और 'आ' से आम पढ़ाया जाता था। मास्टर जी पढ़ाने के बाद कहते थे कि इन फलों को देखना जरूर। लेकिन अब तो 'आ' से आजादी पढ़ाई जाती है।

उनकी बात सुनकर भोलू ने कहा था, "अमरूद और आम तो आप देख लेते होंगे। आजादी कैसे देख सकते हैं, कैसी होती है, कहां दिखती है?"

भोलू की बातें सुनकर पापा भी सोच में पड़ गए कि आजादी को कैसे देख सकते हैं?

खैर, एक दिन पापा भोलू को पंद्रह अगस्त के लिए सामान खरीदने बाजार ले गए थे। भोलू ने न केवल स्कूल बल्कि घर सजाने के लिए भी झंडियां और फूल खरीदे थे। भोलू हर बार पंद्रह अगस्त को पापा से पतंग दिलाने की जिद करता था, मगर वह मना कर देते थे। वह बेचारा शाम को रंग-बिरंगी पतंगों से भरे आसमान को देखता और सोचता कि कब वह भी अपने दोस्तों की तरह पतंग उड़ा सकेगा। लेकिन इस बार तो पापा खुद ही उसे दुकान पर ले गए थे। तरह-तरह की कई पतंगें और मांझा दिलवा दिया था। लेकिन शर्त यह थी कि छत पर पतंग पापा के साथ ही उड़ानी होगी।

भोलू की खुशी का ठिकाना नहीं था। उसने कहा, "तो क्या आसमान में पतंग जिस तरह से उड़ती हैं, उसे आजादी कहते हैं?"

"अरे कहां, वह तो

चित्र : नीतू खोहवाल

मांझे से बंधी होती है। मांझा टूटने के बाद थोड़ी देर ही तो ऊंचा-ऊंचा उड़ती है, फिर जमीन पर आ गिरती है। यानी कि आजादी से उड़ने के लिए जैसे पतंग को मांझे का साथ चाहिए, हमें भी एक-दूसरे का साथ चाहिए। अपनी आजादी का मतलब दूसरे की आजादी भी।"

भोलू जोर से हंसा, "जैसे आपने मुझे पतंग उड़ाने की आजादी दी, मगर अपने साथ।

बाजार में बहुत चहल-पहल थी। बातें करते हुए पापा और भोलू आगे बढ़े, तो देखा एक आदमी जमीन पर बैठा था। उसके पास तीन पिंजरे थे। एक में सफेद कबूतर, दूसरे और तीसरे में नीला और हरा तोता था।

पापा ने पास जाकर कहा, "अरे भले आदमी, पंद्रह अगस्त आ रहा है। अपने देश में सब आजादी की खुशी मना रहे हैं और तुमने इन्हें पिंजरे मे कैद कर रखा है। उड़ा क्यों नहीं देते?"

"कैसे उड़ा दूं साहब। आप खरीद लो। फिर चाहे उड़ाओ या पालो। सबकी आजादी की चिंता कर रहे हैं कुछ मेरे और बच्चों के पेट की भी चिंता कर लेते। भूखे पेट हों, तो कैसी आजादी।"

पापा ने कुछ सोचा, फिर जेब से पैसे निकालकर कबूतर और तोतों को खरीद लिया। तीनों पिंजरों के दरवाजे खोलते हुए कहा, "जाओ, आज से तुम सब आजाद हो। जहां चाहे उड़ो, बगीचों में जाकर मनचाहे फल खाओ।" तीनों पिंजरे बेचने वाले को लौटाते बोले, "भइया, अब से किसी पंछी को कैद में मत रखना। सोचो कि कोई तुम्हें पिंजरे में कैद कर दे, तो कैसा लगे।"

वह आदमी कुछ कहता कि पापा भोलू के साथ घर की ओर लौट पड़े। भोलू ने पूछा, "तो तोते और कबूतर आजाद हो गए?"

"और क्या। अब जब चाहे जहां, उड़कर जा सकेंगे। कोई रोक-टोक नहीं।

"तो अगर मैं भी घर से बाहर घूमूं तो आप या मम्मी मुझे रोकेंगे नहीं। मैं भी तो जहां मन करे, वहां जाना चाहता हूं।"

पापा बोले, "देखो, अभी तुम छोटे हो। अपना अच्छा-बुरा नहीं समझते। जब बड़े हो जाओ, तो खूब घूमना, जहां चाहे जाना, कौन रोकेगा? अभी छोटे बच्चे हो। अकेले कहीं जाओ और रास्ता भटक जाओ, कोई तुम्हें पकड़ ले जाए, किसी मुसीबत में फंस जाओ, तो क्या करोगे?"

"कबूतर और तोते भी तो छोटे थे। उन्हें क्यों उड़ा दिया? उन्हें भी तो कोई पकड़ सकता है, पिंजरे में फिर बंद कर सकता है।" भोलू ने कहा।

"किसने कहा, वे छोटे थे? वे तो खूब बड़े थे। मेरी और तुम्हारी मम्मी की तरह किसी के मम्मी-पापा होंगे। अरे भाई इस प्रकृति में सबका अलग-अलग आकार-प्रकार होता है। जैसे हाथी अलग और मधुमक्खी अलग। अब तोता चाहे, जितनी उम्र का हो जाए, वह हाथी तो नहीं बन सकता।"

"तो मैं कब बड़ा होऊंगा?"

"जब मुझे जितने लंबे हो जाओगे।"

"आप जितना लंबा, ओह।" निराश हो गया बेचारा भोलू । कहां तो वह भी कबूतर और तोते की तरह आसमान में उड़ने की आजादी चाह रहा था और कहां पापा ने कह दिया कि जब वह उन जितना लंबा हो जाएगा, तब ही अपने मन से जो चाहे वह कर सकेगा।

"स्कूल में पंद्रह अगस्त के दिन जब आजादी पर बोलना है, तो यही बता दूंगा कि बच्चों को पूरी आजादी तब ही मिलेगी, जब वे अपने पापा जितने लंबे हो जाएंगे।"

रचनाकार से मिलिए

क्षमा शर्मा : नंदन पत्रिका के संपादन से चार दशकों तक जुड़ी रहीं। बच्चों के साथ बड़ों के लिए भी बहुत लिखा। हिंदी साहित्य की विशिष्ट साहित्यकार। दस कहानी संग्रह, चार उपन्यासों के साथ कई अन्य पुस्तकें प्रकाशित। रोजाना किसी न किसी अखबार में कॉलम लिखती हैं।

सवेरे जब मां और पापा सोकर उठे, तो मां बोली, "अरे, गाय और बकरी कहां हैं? लगता है, रात को रस्सा तुड़ाकर भाग गईं। अब कहां जाकर ढूंढ़ें।"

पापा ने कहा, "कितनी बार तुम से कहा है कि रस्सी के बजाए लोहे की सांकल से बांधा करो।"

पापा-मम्मी की बातें भोलू भी सुन रहा था। वह बोला, "वे भागी नहीं हैं, मैंने उनकी रस्सी खोल दी। उन्हें भी तो हमारी तरह आजादी चाहिए। पापा ने पंछियों को आजाद कर दिया, मैंने गाय, बकरी को।"

भोलू की बात सुनकर मम्मी गुस्से से भर उठीं लेकिन पापा जोर से हंसने लगे, "वाह भोलू, मानना पड़ेगा। आजादी का असली पाठ तो तुमने ही पढ़ा।"

"तेरी आजादी मन रही है। आजादी का ये मतलब कब से हो गया कि घर का नुकसान करते फिरो?" मम्मी ने गुस्से से कहा।

नुकसान क्या? कल पापा ने भी तो कबूतर और तोते का पिंजरा खोल उन्हें आजादी दी थी।" भोलू बोला।

यह सुनकर मम्मी भी हंसने लगीं। लेकिन अभी गाय, बकरी को भी ढूंढ़ना था। ✪

बच्चे भी थे आजादी के दीवाने

जब देश गुलाम होता है, तो देशवासियों का कुछ भी अपना नहीं रह पाता। ऐसे में हर कोई चाहता है गुलामी की जंजीरों को तोड़ फेंकना। भारत में तो पुरुषों के साथ महिलाओं ने भी कदम से कदम मिलकार देश की स्वतंत्रता का लड़ाई में भाग लिया था। जब माएं देश के लिए लड़ने आगे बढ़ती थीं, तो स्वाभाविक है कि बच्चे भी उनके साथ होते थे। बड़ों को देश के लिए लड़ते देखकर बच्चे भी अपने बचपन में ही आजादी की लड़ाई से जुड़ने लगते थे। यहां हम उनमें से कुछ के बचपन की कहानी दे रहे हैं।

गुलामी सबसे बड़ी बीमारी

खुदीराम बोस का जन्म 3 दिसंबर 1889 को हुआ। खुदीराम के माता-पिता के संतान तो होते थे, पर वे जीवित न रह पाते थे। उनकी केवल एक पुत्री ही जीवित बची थी। खुदीराम बोस जब छह साल के थे, तभी उनके माता-पिता चल बसे। उनकी विवाहित बड़ी बहन अनुरूपा देवी ने उनकी परवरिश की जिम्मेदारी संभाली।

खुदीराम ने जब से आंखें खोलीं, गुलामी में तड़पते लोगों को देखा। भारतीयों को साथ होते जुल्मों ने नन्हे खुदीराम को इतना परेशान कर दिया कि वह सपने में भी अंग्रेज सिपाहियों की ज्यादतियों को देखते। सात-आठ साल के खुदीराम सोचते, "यह तो हमारा देश है, पर अंग्रेज हम पर राज क्यों कर रहे हैं?" अब वह रात-दिन स्वतंत्रता की बात सोचने लगे।

एक बार खुदीराम एक मंदिर में गए। देखा, बीसीयों लोग नंगे पैर मंदिर के द्वार पर बैठे हैं। नन्हे खुदीराम ऐसे बैठने का कारण समझ में नहीं पाए, तो एक आदमी से कारण पूछ लिया।

उत्तर मिला, "ये बीमार हैं। भगवान के द्वार पर मन्नत मांगने आए हैं। इनका कहना है कि जब भगवान सपने में आकर उनको उनकी बीमारी से निजात दिलाएंगे, तभी वे यहां से उठेंगे और कुछ खाएंगे-पिएंगे। नहीं तो भूखे रहेंगे।"

खुदीराम कुछ देर सोचते रहे। फिर बोले, "एक दिन मैं भी यहां नंगे पैर आकर रहूंगा और तब तक नहीं जाऊंगा, जब तक भगवान मुझे मेरी बीमारी से मुक्ति नहीं दिला देंगे।"

वह आदमी सोच में पड़ गया। फिर नाराजगी से बोला, "मजाक करते हो? तुम्हें कौन सी बीमारी है?"

खुदीराम गंभीरता से बोले, "क्या दुनिया में गुलामी से बड़ी कोई और बीमारी हो सकती है?"

अपनी बात पर खुदीराम अटल रहे। उन्होंने आनंदमठ उपन्यास पढ़ा, तो उनके जीवन पर बहुत प्रभाव पड़ा। उन्होंने ठान लिया कि अपना जीवन इस देश के लिए बलिदान करना है। उन्नीस साल की उम्र में वह गोली कांड में पकड़े गए और बाद में 8 अगस्त 1908 को उन्होंने देश के लिए अपनी जान कुर्बान कर दी।

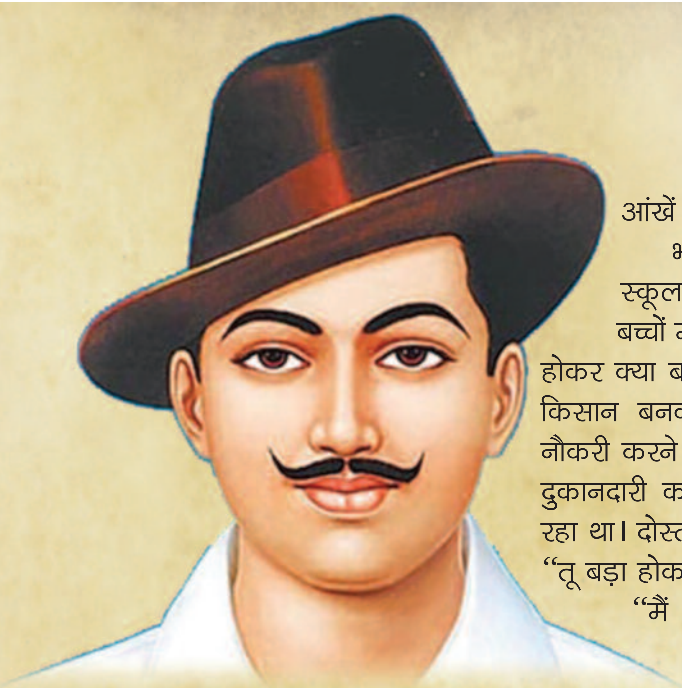

बंदूक की खेती

पंजाब के लायलपुर (अब पाकिस्तान में) में 1907 में सरदार किशन सिंह के घर एक बालक का जन्म हुआ। किशन सिंह का पूरा परिवार देश की स्वतंत्रता संग्राम में भाग ले रहा था। उसके दोनों भाई व पिता विभिन्न आंदोलनों में भाग लेने के कारण जेल में थे। जिस दिन बालक का जन्म हुआ, उसी दिन किशन सिंह के दोनों भाइयों और पिता को जमानत मिल गई। बच्चे को बड़ा भाग्यशाली माना गया और इसी कारण दादा-दादी ने प्यार से बच्चे नाम रखा भगत सिंह।

जब भगत सिंह तीन साल के थे, तब एक बार अपने पिता के साथ खेत पर गए। पिता अपने एक क्रांतिकारी मित्र के साथ स्वतंत्रता संग्राम पर चर्चा करने लगे। बच्चा काफी देर तक उनकी बातें सुनता रहा फिर खेत पर खेलने में मग्न हो गया। कुछ समय बाद अचानक किशन सिंह की नजर अपने बच्चे पर गई, तो देखा बालक भगत सिंह तिनके उठा-उठाकर खेत में बो रहा था। उन्होंने प्यार से बेटे से पूछा, "क्या बो रहे हो बेटे?"

उत्तर मिला, "बंदूकें बो रहा हूं पिता जी। इससे अंग्रेजों को मार भगाएंगे।"

तीन साल के बेट की तोतली जुबान से ऐसी बातें सुनकर किशन सिंह की आंखें भर आईं।

भगत जब बड़े हुए, तो स्कूल जाने लगे। वहां कई बार बच्चों में चर्चा छिड़ जाती कि बड़ा होकर क्या बनना है। कोई कहता, मैं किसान बनकर खेती करूंगा। कोई नौकरी करने की बात करता, तो कोई दुकानदारी करना अपना भविष्य मान रहा था। दोस्तों ने भगत सिंह से पूछा, "तू बड़ा होकर क्या करेगा?"

"मैं अंग्रेजों को इस देश से बाहर निकालूंगा।" भगत सिंह का जवाब था।

भगत सिंह ने बचपन में कही अपनी बात याद रखी और अंग्रेजों को देश से निकालने के लिए वह अपनी जान से खेल गए।

वानर सेना का निर्माण

नेहरू परिवार शुरू से ही स्वतंत्रता संग्राम से जुड़ा हुआ था। मोतीलाल नेहरू और उनके पुत्र जवाहर लाल दोनों अक्सर साथ-साथ जेल जाते रहते थे। ऐसे माहौल में इंदिरा गांधी का जन्म 19 नवंबर 1917 को हुआ। जिस घर में देश को स्वतंत्र कराने की योजना बनाने वाले बड़े-बड़े नेताओं का आना-जाना लगा रहता हो, उस घर में इंदिरा के अंदर बचपन से ही देशभक्ति की भावना घर करने लगी थी।

गांधी जी की दांडी यात्रा और नमक कानून तोड़ने के बाद देश के सभी बड़े नेता जेल में थे। अब महिलाओं ने मोर्चा संभाल लिया था। ऐसे में बालिका इंदिरा ने एक शाम मोहल्ले के बच्चों को बुलाया और भाषण दिया कि आजादी की लड़ाई में बच्चों को भी कुछ करना चाहिए। बच्चों के राजी होने पर इंदिरा ने एक संगठन बनाया और उसका नाम रखा, 'वानर सेना'।

अनेक बच्चे इस वानर सेना में शामिल हुए। इंदिरा बाकायदा बच्चों से परेड करवाती। बच्चे झंडे बनाने, लिफाफों पर पते लिखने, जुलूस में स्वयंसेवकों को पानी पिलाने आदि कई कामों के द्वारा कांग्रेस की मदद करते। वे एक दल का संदेश दूसरे दल तक सावधानी से पहुंचाते। जब पुलिस कभी छापा मारती, तो बड़े पकड़े जाते और बच्चे निडरता से इधर-उधर घूमते रहते। पुलिस उन पर ध्यान भी नहीं देती थी। पर बालक घूमने के बहाने पुलिस रेड की सूचना अन्य नेताओं तक पहुंचाते जिसके बाद नेता भूमिगत हो जाते।

बच्चे निडरतापूर्वक पुलिस वालों तक पहुंच जाते और उनकी योजना सुनकर नेताओं तक पहुंचा देते जिससे नेता आगे के कार्यक्रम में संशोधन कर आंदोलन को और प्रभावी बनाते। इस तरह ये बच्चे अपनी तरह से स्वतंत्रता संग्राम में योगदान देते थे। ✪

भैया, मैं बाँधूँगी राखी

अपने लेखक को जानिए

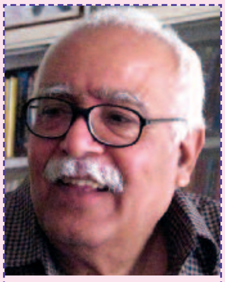

प्रकाश मनु : सुप्रसिद्ध साहित्यकार, संपादक और बच्चों के प्रिय लेखक। बच्चों की पत्रिका 'नंदन' के संपादन से जुड़े रहे। बाल साहित्य की सौ से अधिक पुस्तकें। बाल कविता का इतिहास भी लिखा। प्रसिद्ध साहित्यकारों के संस्मरण, आत्मकथा तथा बाल साहित्य पर बड़ा काम।

भैया, राखी का दिन आया,
बाँधूँगी मैं चम-चम राखी।

इस राखी में कितनी यादें
मीठी बातों की है सरगम,
जैसे नभ में छाए बदली
प्यार बरसता छम-छम, छम-छम।

इस राखी में मीठी रुनझुन
हँसती-गाती फुलझड़ियाँ हैं,
जिनकी चमक नहीं कम होगी
उजले मोती की लड़ियाँ हैं।

बड़े दिनों से बाट जोहती
थी बहना इस सुख के दिन की,
बड़े दिनों में यह दिन आया,
बाँधूँगी मैं चम-चम राखी।

मेरे चंदा जैसे भैया
यों ही हँसना, हँसते रहना,
जिससे खिल जाए फुलवारी
फूलों जैसे खिल-खिल हँसना।

सब कुछ जग में मिल जाता है
प्यार मगर सबसे अनमोल,
तुम खुश रहना, इसके बदले
मैं सुख अपना दूँगी तोल।

दुख की छाया जरा न तुम पर
आए, मेरे प्यारे भैया,
हँसी-खुशी का यह दिन आया,
बाँधूँगी मैं चम-चम राखी।

पर्व स्वतंत्रता

अपने लेखक को जानिए

शिवचरण सरोहा : दिल्ली प्रशासन में अध्यापक। विविध पत्र-पत्रिकाओं में बाल साहित्य, लघुकथाएं एवं कहानियां प्रकाशित। हिंदी अकादमी, दिल्ली एवं बाल साहित्य संस्थान, उत्तराखंड से पुरस्कृत।

एक हों एक रहें हम
यही हमारा नारा है,
सबको स्नेह से बांधे जो
पर्व स्वतंत्रता प्यारा है।
देश न हो खंडित
धर्म-जात के नाम पर,
दिन-रात हो उन्नति
आओ जुटें काम पर।

हर भारती के मन में
लौ अब जलानी है,
देश-कीर्ति बढ़े हरदम
पहचान नई बनानी है।
हिमालय से हों हौंसले
आगे-आगे बढ़ते जाएं,
ध्वज तिरंगा आसमान में
बड़ी धूम से फहराएं।

दोस्ती के रंग

नरेश कहीं जाने के लिए सोसाइटी के गेट से बाहर निकला, तो ठिठक गया। फुटपाथ पर एक ड्राइंग बुक पड़ी थी। उसने झुककर ड्राइंग बुक को उठा लिया। उस पर किसी कमल का नाम लिखा था। नरेश ने गेटमैन जीवन से कहा, "लगता है, यह ड्राइंग बुक किसी बच्चे के बस्ते से गिर गई है। वह आए, तो दे देना।"

कई दिन बीत गए, पर कोई कमल अपनी ड्राइंग बुक लेने नहीं आया, तब नरेश ड्राइंग बुक को अपने घर ले आया। ड्राइंग बुक उसकी मेज पर कई दिन तक पड़ी रही। वह सोच रहा था कि आखिर कमल ऐसा कौन लापरवाह बच्चा है, जिसे अपनी खोई हुए ड्राइंग बुक का एक बार भी ख्याल नहीं आया!

कुछ दिनों बाद की बात है। सर्दियों की गुनगुनी धूप का आनंद लेने के लिए नरेश सोसाइटी के पार्क में चला गया। वहां रामधन माली पौधों की देखभाल में लगा था। पास बैठा एक लड़का कागज पर रेखाएं खींच रहा था। नरेश पास जाकर देखने लगा। वह था रामधन का बेटा विमल।

नरेश ने कहा, "फूल तो कई रंग के होते हैं, पर विमल ने सारे फूल नीले रंग के बना दिए हैं। ऐसा क्यों!"

सुनकर रामधन मुसकरा दिया। दरअसल विमल अपने नीले इंक के बॉल पेन से ही फूलों का चित्र बना रहा था और उसी से रंग भर रहा था। इसका मतलब समझने में नरेश को देर नहीं लगी। वह घर जाकर कमल की ड्राइंग बुक ले आया और विमल को थमा दी। साथ में रंगीन पेंसिलों का बॉक्स भी था। फिर कहा, "बेटा, फूल जिस रंग के हैं, तुम भी वैसे ही रंग के फूल बनाओ।"

विमल अपने बनाए फूलों में रंग भरने लगा। रामधन ने मुसकराकर नरेश को धन्यवाद दिया।

नरेश संतुष्ट भाव से घर चला आया। अनजान कमल का तो पता नहीं चला था, पर उसकी ड्राइंग बुक जरूर सही जगह पहुंच गई थी। पर उसी शाम रामधन नरेश के पास

चित्र : सुशील दोषी

आया और ड्राइंग बुक उसे लौटते हुए कहा, "यह तो किसी कमल की कॉपी है। उसे लौटा दीजिए।"

नरेश ने देखा, ड्राइंग बुक के एक पेज पर विमल ने फूलों का सुंदर चित्र बनाया था। वह बोला, "देखो, विमल ने कितना अच्छा चित्र बनाया है।"

नरेश ने उसे पूरी बात बताकर कहा, "अगर कमल कभी आ गया अपनी ड्राइंग की कॉपी लेने, तो इस ड्राइंग बुक के साथ उसे हमारे विमल की दोस्ती भी मिल जाएगी।" कहकर नरेश मुसकरा दिया। उसका रामधन के बेटे को 'हमारा विमल' कहना रामधन को अच्छा लगा था।

ड्राइंग बुक वाले कमल को कहां ढूंढ़ा जाए, यह बात नरेश के लिए उलझन बनी हुई थी, क्योंकि नरेश जब भी रामधन से मिलता, वह एक ही बात कहता, "मेरा बेटा हर समय कमल के बारे में ही पूछता है।"

और फिर एक दिन कमल मिल ही गया, लेकिन वह ड्राइंग बुक वाला कमल नहीं था। दरअसल एक दिन नरेश बाजार से लौटा, तो चौकीदार जीवन ने कहा, "बाबूजी, आप अक्सर कमल के बारे में पूछते रहते हैं न, क्या आप उससे मिलेंगे!"

"जरूर मिलना चाहूंगा।" नरेश ने कहा, फिर पूछा, "क्या वह अपनी ड्राइंग बुक लेने आया है?"

"जी वह तो नहीं आया, लेकिन इसका नाम भी कमल है।" कहते हुए जीवन ने सड़क पर एक कार के शीशे को साफ करते लड़के की ओर संकेत किया। उसने आवाज दी, तो नौ-दस वर्ष का लड़का मैले कपड़ों में लेकिन उजली हंसी बिखेरता हुआ सामने खड़ा था। नरेश ने पूछा, "कमल, तुम कहां रहते हो?"

लड़के ने कोई उत्तर नहीं दिया और वहां से चला गया। उत्तर बाद में जीवन ने दिया, "बाबू, सड़क पर काम करके जीने वाले ये बच्चे सड़क पर ही रहते हैं। आपके प्रश्न का वह क्या उत्तर देता, इसीलिए चला गया।"

नरेश समझ गया कि उसने कमल से गलत सवाल पूछ लिया था, लेकिन अब क्या हो सकता था। जीवन ने आगे बताया, "कमल और जय की जोड़ी है। दोनों हर समय साथ दिखाई देते हैं। कुछ दिन पहले की बात है, कमल और जय के सामने चुन्नू ढाबे वाले को झुकना पड़ा था।"

"ऐसा क्या हो गया था?" नरेश ने जानना चाहा।

जीवन के बताया, "चुन्नू ढाबे वाले का नौकर जीतू बीमार हो गया। वह बर्तन धोने और ढाबे की साफ-सफाई का काम करता था। तब चुन्नू ने कमल को बुलाया। कहा, वह कमल और जय को दोनों टाइम का भोजन और रात में सोने की जगह देगा। दोनों तैयार हो गए। लेकिन चुन्नू अब जीतू से छुटकारा चाहता था। उसने सोचा कि जीतू को पगार देनी पड़ती है, जबकि कमल और जय को पैसे नहीं देने थे। बस उसने जीतू से कह दिया कि कहीं और काम देख ले। ढाबे में उसकी कोई जरूरत नहीं है।"

"फिर?" नरेश ने पूछा।

"लेकिन कमल और जय ने सुना, तो काम बंद कर दिया। चुन्नू की इस हरकत से ढाबे के सारे नौकर भी नाराज होकर चले गए। तब चुन्नू को लगा कि उसने कितनी बड़ी भूल कर दी है। दो दिन ढाबा बंद रहा। तब चुन्नू जीतू से मिलने गया और वादा किया कि उसकी नौकरी बनी रहेगी। अब जीतू फिर से ढाबे में लौट आया है। कमल और जय के साथ दूसरे नौकर भी वापस आ गए हैं।"

"ऐसे हिम्मती और लड़ाकू छोकरों से जरूर मिलना चाहिए।" नरेश ने कहा।

फिर नरेश ने रामधन को उनके बारे में बताया। रामधन ने कहा, "वाह बाबू, ऐसे लड़कों से तो हमारे विमल को भी मिलना चाहिए।"

दोपहर में ढाबा दो घंटे के लिए बंद रहता था। एक दोपहर विमल और रामधन के साथ नरेश चुन्नू के ढाबे पर जा पहुंचा, फिर जीवन भी आ गया। उसने कमल से कहा, "हमारा विमल तुम से दोस्ती करने आया है।'

नरेश ने ड्राइंग बुक कमल को दिखाई और कहा, "पता नहीं, इस ड्राइंग बुक वाला कमल तो नहीं, पर तुम और जय जरूर हमें मिल गए हो। क्या तुम तीनों दोस्ती करोगे?" थोड़ी देर में विमल, कमल और जय घुल-मिलकर बातें करने लगे।

नरेश ने ड्राइंग बुक पर कमल के साथ विमल और जय के नाम भी लिख दिए। तब कमल ने कहा, "मुझे तो ड्राइंग आती नहीं।"

"जैसे तुम दोनों ने सड़क पर जीना सीख लिया है, उसी तरह ड्राइंग भी जरूर सीख लोगे।" कह कर रामधन मुसकरा दिया।

कमल ने एक पन्ने पर रेखाएं खींचनी शुरू कर दीं। जय और विमल उत्सुक आंखों से देख रहे थे। दोस्ती के अनोखे रंग उभर रहे थे।

अपने लेखक को जानिए

देवेंद्र कुमार : बच्चों की प्रसिद्ध पत्रिका नंदन में सहायक संपादक रहे। बच्चों के लिए कहानियां अपने आसपास के परिवेश से उठाते हैं। कहानीकार तो अच्छे हैं ही, कविताएं भी लिखते हैं। अन्य भाषाओं से कहानियों को हिंदी में प्रस्तुत करने में महारत। हजारों विदेशी कहानियों से बच्चों को परिचित करवाया।

विजयन का बगीचा

चित्र : सुशील दोषी

यों तो हर शख्स अपने में कुछ खास होता है, मगर विजयन का किस्सा तो कुछ अजीब ही था। आप सुनेंगे तो हैरान रह जाएंगे। शायद चेहरे पर थोड़ी हंसी भी आ जाए।

असल में विजयन के परिवार का ज्योतिष विद्या में बड़ा नाम था। पीढ़ियों से यह चलता आ रहा था। पिता शिवनाथन भी जाने-माने ज्योतिषी थे। दिन भर अपने पोथी-पत्तर लिए कागज पर आड़ी-तिरछी लकीरें खींचते रहते। उन्होंने विजयन को भी यह प्राचीन विद्या सिखाने की कोशिश की। विजयन थोड़ा-बहुत सीख भी गया। पर जल्दी ही वह ऊब गया।

विजयन को दिन भर कागज पर लकीरें खींचने वाला यह काम बड़ा नीरस लगता था। सोचता था, यह भी कोई जिंदगी है! इसके बजाय अपने घर के अहाते में कच्ची जमीन पर फलों के पौधों का बगीचा लगाने में उसे कहीं ज्यादा मजा आ रहा था। पेड़-पौधे और हरियाली से उसे बहुत प्यार था।

घर के अहाते में काफी जमीन थी। उस पर कुछ फूल-फल लगे रहते थे। पर विजयन को उससे संतोष न था। वह वहां नए-नए, बढ़िया पौधे लगाता और उनकी खूब देखभाल करता। उनमें खाद और पानी डालता। देखते ही देखते खूब हरियाली हो गई।

कुछ समय बाद उसने अहाते में पीछे की ओर बेकार पड़ी जमीन को अपने हाथों से साफ करके वहां केले का बड़ा ही सुंदर बगीचा लगाया। जल्दी की खूब मीठे केलों की बहार आ गई।

अब तो चारों ओर विजयन का खासा नाम हो गया। लोग उसकी खूब प्रशंसा करते।

विजयन को भी अपने हाथों से लगाए गए इस सुंदर 'कदली कुंज' पर बड़ा गर्व था। उसे देखते ही उसके होंठों पर खूब चौड़ी-सी मुसकान आ जाती और खुशी के मारे दिल में गुदगुदी-सी होने लगती।

पहले तो शिवनाथन बेटे के इस अटपटे शौक के कारण झुंझलाए। नाराज भी हुए। पर फिर उन्होंने देखा कि विजयन को तो इसी में आनंद आता है। वह रात-दिन बस इसी खयाल में डूबा रहता है कि कैसे

अपने कदली-वन को और सुंदर और हरा-भरा बनाए, तो उन्होंने चुप रहना ही ठीक समझा।

अब तक आसपास के इलाके में विजयन के कदली-कुंज की धूम मची थी। हर कोई जानता था कि इस पूरे इलाके में सबसे स्वादिष्ट और उत्तम कोटि के केले विजयन के कदली कुंज में ही मिल सकते हैं। विजयन के केले सचमुच खूब बड़े-बड़े और स्वाद में अनोखे थे।

अपने कुंज के केलों से विजयन का लगाव इतना अधिक था कि उसे अपने कदली कुंज में सुबह-सुबह सैर करना और हर रोज थोड़े-थोड़े गदराते हुए केलों को निहारना बड़ा अच्छा लगता था। उसे इसमें निराला आनंद मिलता था।

पर एक दिन कुछ ऐसा हुआ कि विजयन परेशान हो गया। उसने देखा कि एक केले की गाछ के सारे केले अधखाए हैं और काफी सारे पेड़ के नीचे पड़े हैं। बहुत-से केले तो बिल्कुल खाने लायक हालत में भी नहीं थे।

देखकर विजयन के पैर वहीं जम गए। उसे बड़ा गुस्सा आया। सोचने लगा, भला यह किसकी करतूत हो सकती है?

"जिसने भी मेरी बगिया का यह हाल किया है, उसे मैं छोड़ूंगा नहीं!" गुस्से में भुन-भुन करते हुए उसने अपने आप से कहा।

विजयन ने बड़े ध्यान से इधर-उधर बगीचे के आसपास देखा, पर उसे कोई दिखाई नहीं दिया। पर थोड़ा आगे चलते ही उसे केले के अगले पेड़ पर एक चंचल गिलहरी दिखाई पड़ी। वह मजे में कुट-कुट करती हुई यहां-वहां दौड़ रही थी और केलों को कुतर रही थी।

"ओह, तो यह है सत्यानाश की जड़! इसी ने मेरी महीनों की मेहनत पर पानी फेर दिया!" सोचते हुए उसकी आंखें गुस्से के मारे लाल हो गईं।

अब तो विजयन का गुस्सा इतना बढ़ गया कि उसे लगा कि वह उस गिलहरी को कुचल डाले। पर जैसे ही वह गिलहरी की ओर झपटा, वह तुरंत बड़ी तेजी से अगले पेड़ पर कूद गई। फिर अगला पेड़, फिर उससे अगला, ऐसा कर वह एक से दूसरे पेड़ पर कूदती-फांदती जा रही थी।

विजयन उसके पीछे-पीछे एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर चढ़ता-उतरता रहा। उसे अपने पीछे पड़ा देख, गिलहरी भी पेड़ की बिल्कुल ऊपरी टहनी पर चढ़ जाती और फिर दूसरे पेड़ पर कूद जाती। उसके लिए यह खेल था।

पर विजयन तो इतना हलका था नहीं। वह तो अच्छे डील-डौल का हट्टा-कट्टा जवान था। भारी भी बहुत था। गिलहरी का पीछा करते-करते वह एक पेड़ की टहनी पकड़ रहा था और ऊपर चढ़ने के लिए। पर तभी एकाएक वह टहनी एकदम आधी झुक गई और विजयन बीच में ही लटका रह गया, त्रिशंकु की तरह।

"ओह, अब क्या होगा?" उसकी ऊपर की सांस ऊपर, नीचे की नीचे रह गई। उसने तुरंत अपनी पत्नी पार्वती को आवाज लगाई। पार्वती दौड़ी-दौड़ी आई। विजयन को इस हालत में देख, वह एकदम हक्की-बक्की रह गई।

विजयन के लिए अब अपने आप को संभालना मुश्किल था। उसने गुस्से में डपटते हुए कहा, "ऐसे आंखें फाड़े क्या देख रही है? जल्दी से भूसा लेकर आ और यहां मेरे ठीक नीचे डाल दे। जरा जल्दी कर, जल्दी!"

वह सोच रहा था कि नीचे भूसा होगा, तो पेड़ से कूदने पर मुझे ज्यादा चोट नहीं लगेगी।

पर विजयन तो अधीर और बेसबरा था ही, उसकी पत्नी भी कुछ कम बुद्धू न थी। उसने पूछा, "कितना भूसा लाऊं?"

विजयन ने जैसे ही यह बताने के लिए हाथ फैलाए, "इतना...!" वैसे ही वह धड़ाम से नीचे जमीन पर आ गिरा। उसके माथे और हाथ-पैरों पर काफी चोट आई थी।

कई रोज तक बेचारा विजयन हाथ-पैरों पर पट्टियां बांधे, खाट पर लेटा कराहता रहा। हालांकि मजे की बात यह कि इस हालत में भी गिलहरी दिन में कई बार उसका हाल-चाल पता करने आ जाती।

अक्सर वह दूर से झांकते हुए, मुसकराकर विजयन से कहा करती थी, "तुमने बढ़िया कदली वन लगाया, यह तो ठीक, पर भैया, पेड़ों पर उछल-कूद करने में मुझसे होड़ करने की क्या जरूरत थी?"

इस पर विजयन इस कदर झेंपता कि गिलहरी और भी मजे में उछलने-कूदने लगती थी। जैसे वह हंसते हुए विजयन को 'टिल्ली-टिल्ली' कर रही हो!

अपने लेखक को जानिए

डा. सुनीता : बच्चों की जानी-मानी कथाकार। सर्व शिक्षा अभियान और सामाजिक कार्यों में गहरी रुचि। अनेक प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में गंभीर आलोचनात्मक लेख और बच्चों के लिए लिखी गई कहानियां, लेख वगैरह छपे हैं। बच्चों के लिए लिखी गई कई पुस्तकें बेहद चर्चित हैं।

प्यारा रीशू

पाँच साल का प्यारा रीशू
सारे अक्षर पढ़ लेता है ।
एक बात कल मैंने देखी
नए बहाने गढ़ लेता है ।

नई-नई शैतानी करता
गुस्से में हो आगबबूला।
मना करो तो दाँत पीसता
कुप्पा सा मुँह रहता फूला।

परसों उसने नानी माँ पर
गुस्से में जब हाथ उठाया।
मम्मी ने तब कसकर डाँटा
उसको याद बहाना आया।

“अरे! नहीं मम्मी जी मैंने
ऐसे ही बस हाथ उठाया।
नानी माँ से कुछ कहने को
मैंने अपना हाथ बढ़ाया।”

मम्मी-नानी समझ गई थीं
उसका कोरा नया बहाना।
पर उसको समझाकर बोलीं-
“झूठ नहीं हमको बतलाना।”

“बाई-गॉड” कहा रीशू ने
लेकिन मेरी चिंता जारी।
बदल रही हैं सारी चीजें
फिर से करनी है तैयारी।

पता नहीं रीशू को कैसे
सूझा ऐसा नया बहाना।
सोच-सोच कर परेशान मैं
मेरे संग रीशू के नाना।

अपने लेखक को जानिए

डॉ सुरेन्द्र विक्रम : विगत 40 वर्षों से बाल साहित्य सृजन। अब तक 24 पुस्तकें प्रकाशित, एनसीईआरटी सहित अनेक प्रकाशकों की पाठ्य-पुस्तकों में कविताएं संकलित। संप्रति : एसो. प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, लखनऊ क्रिश्चियन कॉलेज, लखनऊ (उ.प्र.)

चित्र : सुशील दोषी

आमने-सामने

कई बार ऐसा होता। चींटी और हाथी आमने-सामने आ जाते। हाथी चिंघाड़ता। चींटी से कहता, "देखकर चलो। मैं कुचल भी सकता हूं।"

चींटी भी अकड़ जाती। जवाब देती, "मैं काट भी सकती हूं।"

हाथी हवा में पैर उठाता। वह तीन पैरों में खड़ा हो जाता। चींटी अपनी चाल चलती हुई आगे बढ़ जाती। वह दूसरे किनारे पर जा पहुंचती। हाथी लंबी सांस लेता। चींटी को घूरता। फिर झूमता हुआ आगे बढ़ जाता। हाथी और चींटी जब भी मिलते, एक-दूसरे को चिढ़ाते। कभी-कभी बहस भी हो जाती।

एक दिन की बात है। दोनों आमने-सामने आ गए। हाथी बोला, "पहले मुझे जाने दो।"

चींटी बोली, "चले जाना। पहले मेरा एक काम कर दो।"

हाथी ने कहा, "बोलो।"

चींटी ने कहा, "मेरी पीठ खुजाओ। ध्यान रहे, खुजली मिटनी चाहिए।"

हाथी हैरान हो गया। फिर बोला, "ये मुझसे न होगा।"

चींटी ने कहा, "चलो छोड़ो। जाने दो। मुझे पता था कि तुमसे न हो पाएगा।"

हाथी ने सूंड हवा में लहराई। बोला, "ऐसे कैसे जाने दूं? मेरा भी एक काम है।"

चींटी ने पूछा, "क्या काम? बोलो।"

हाथी ने इतराते हुए कहा, "मुझे गोदी में उठाओ। झूला झूलाओ।"

चींटी हैरान हो गई। कहने लगी, "ये मुझसे न होगा।"

हाथी ने कहा, "चलो छोड़ो। जाने दो। मुझे पता था कि तुमसे न हो पाएगा।" हाथी एक किनारे खड़ा हो गया। चींटी धीरे-धीरे आगे बढ़ गई। हाथी हंसने लगा, तो चींटी भी मुसकरा दी।

फिर, एक दिन वे आमने-सामने आ गए। बात होने लगी। चींटी बोली, "ठहरो। पहले मुझे जाने दो।"

हाथी ने कहा, "मेरा एक काम कर दो। फिर चली जाना।"

चींटी ने पूछा, "क्या?"

हाथी बोला, "मुझे नाप दो। मुझे मेरा कद बता दो।"

यह सुनकर चींटी हंसने लगी। इतनी हंसी कि पेड़ भी हंसने लगे। पेड़ इतना हंसे कि फल टपकने लगे। हाथी शरमा गया। सिर झुकाकर खड़ा ही रहा। चींटी चलते-चलते दूसरे किनारे पहुंच गई। तब जाकर हाथी आगे बढ़ा।

बातें थीं कि थम नहीं रही थीं। फिर, एक दिन की बात है। दोनों आमने-सामने थे। हाथी ने कहा, "मुझे नहाने जाना है। हटो।"

चींटी बोली, "थोड़ी देर छाया में रुको, फिर जाना।"

हाथी ने पूछा, "दूर-दूर तक छाया नहीं है। कहां रुकना होगा?"

चींटी ने जवाब दिया, "यहां! मेरी छाया में आ जाओ।"

यह सुनकर हाथी हंसने लगा। इतना हंसा कि बादल हंसने लगे। बादल इतने हंसे कि बारिश होने लगी। चींटी पत्ते के नीचे चली गई। और हाथी! हाथी बारिश में ही नहाने लगा। ✪

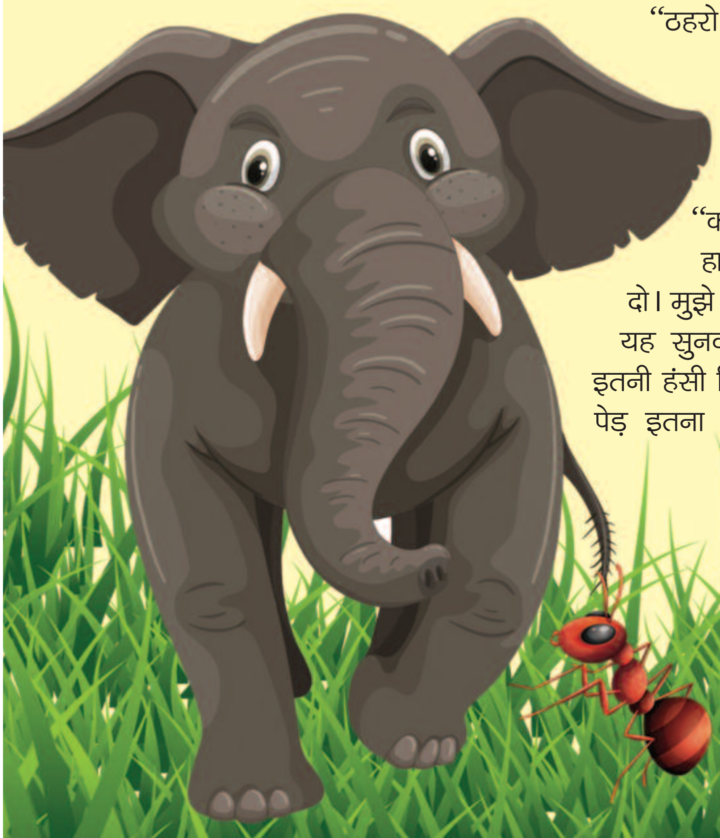

अपने लेखक को जानिए

मनोहर चमोली 'मनु' : शिक्षक होने के साथ-साथ बाल साहित्य में सक्रिय। कई कहानियों का भारतीय सहित कई विदेशी भाषाओं में अनुवाद हुआ है। कई पाठ्य पुस्तकों में कहानियां शामिल हैं। शिक्षा और साहित्य में आलोचना के लिए जाने जाते हैं। बीस से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हैं।

टुम्टू की राखी

अनिल जायसवाल

शान्वी अपने मम्मी-पापा के साथ दिल्ली में रहती थी। जब से उसने अपनी आंखें खोली थीं, उसने दो मां का प्यार पाया था। उसकी ताई रमा भी मां से कम उसे प्यार नहीं देती थीं।

रमा के कोई बच्चा नहीं था, इसलिए शान्वी को उनसे भी भरपूर प्यार मिलता था। शान्वी जब दो साल की हुई, तो शायद उसकी किस्मत से रमा मां बनीं और इस तरह शान्वी को एक भाई मिल गया।

जब पहली बार शान्वी अस्पताल में ताई को देखने गई, तो उनके बगल में लेटे बच्चे को देख, गुस्सा हो गई। अस्पताल सिर पर उठा लिया, मां से पूछा "ये तौन है?"

मां ने प्यार से नन्हे बच्चे को गोद में उठाकर बताया, "भगवान जी ने तुम्हारे लिए छोटा भाई भेजा है।"

पर शान्वी यह सुनने को वहां कहां थी। ताई की बगल में जगह खाली होते ही किसी तरह वह कूद के बेड पर चढ़ गई और ताई की बगल में खाली हुई जगह पर लेट गई। फिर विजेता सी बनकर जो वह हंसी, सब कमरे में हंस-हंसकर दोहरे हो गए। इतनी आवाज से जब बच्चा रोने लगा और डॉक्टर ने आकर सबको टोका, तो सब चुप हुए।

चार दिन बाद रमा ताई को

चित्र : नीतू खोहवाल

अस्पताल से छुट्टी मिली, तो वह बच्चे के साथ घर आ गईं। ताई को देखकर जितना खुश हुई शान्वी, बच्चे को देखकर उतनी ही दुखी हुई।

कुछ दिन बीते, तो शान्वी का गुस्सा भी बीतने लगा। वह जब भी ताई के पास आती, तो वह बच्चे को बेड पर सुलाकर शान्वी को गोद ले लेतीं। वह गोद में बैठकर टुकुर-टुकुर बच्चे के निहारती। एक दिन शान्वी ने पूछ ही लिया, "इछका नाम त्या है?"

रमा ने प्यार से बोला, "इसका कोई नाम ही नहीं है। कल कह रहा था, शान्वी दीदी मेरा जो नाम रखेगी, मुझे उसी नाम से पुकारना।"

"अत्था ऐछे बोला?" शान्वी ऐसे आंखें फोड़कर बोली कि रमा हंसते-हंसते दोहरी हो गई। उधर शान्वी तो नाम याद करने में लगी थी। नॉडी, बॉब द बिल्डर, ओस्वाल... न जाने क्या-क्या। फिर उसे ताई से सुनी एक जादूगर टुम्बकटू की कहानी याद आ गई। उसका चेहरा खिल गया।

शान्वी ने बड़े शान से घोषणा की, "यह पता नहीं तहां से आया है? पूला दादुदर है, छब इछे प्याल कलते हैं। मैं इछे टुम्टू नाम से पुतालुंगी।"

"टुम्टू?" पहले तो रमा की समझ में नहीं आया, फिर जब शान्वी ने विस्तार से जादूगर वाली कहानी और उसके हीरो टुम्बक्टू वाली कहानी सुनाई, तो उनकी हंसी रोके न रुकी। पूरे घर में मुनादी हो गई, "आज से सब बच्चे को टुम्टू कहा करेंगे।"

यह तो शान्वी का दिया नाम था। पर नामकरण समारोह में उसकी नाम चुना गया, श्रेयांश।

पहली राखी आई, तो शान्वी मां के साथ मार्केट गई। खूब बड़ी से राखी टुम्टू के लिए खरीदकर लाई। जैसे-जैसे उसे कहा गया, वैसे-वैसे वह करती गई, पर इतना इंतजार नौ महीने का टुम्टू कैसे करता? राखी बंधाने से पहले ही वह शान्वी की गोद में लुढ़ककर सो गया।

जैसे-जैसे दोनों बड़े होते गए। दोनों का प्यार बढ़ता गया। ताई को देखकर शान्वी को बच्चों को हैंडल करना खूब आ गया था। वह श्रेयांश का खूब ध्यान रखती, वह भी दीदी का पूरा पिछलग्गू था। और किसी की बात माने न माने, शान्वी का बात वैसे ही मानता था, जैसे रामभक्त हनुमान राम की मानते थे।

शान्वी का नाम जब स्कूल में

लिखाया गया, तो उसने घर सिर पर उठा लिया, "मैं तभी स्कूल जाऊंगी, जब मेरा टुम्टू मेरे साथ जाएगा।"

"पर बेटा, तुम्हारा स्कूल गर्ल्स स्कूल है। उसमें लड़के नहीं जा सकते। और सबसे बड़ी बात, श्रेयांश..."

"श्रेयांश नहीं, टुम्टू।" शान्वी ने पापा की गलती सुधारी।

"हां-हां, तुम्हारा टुम्टू अभी स्कूल जाने लायक नहीं है।"

"जब बड़ा हो जाएगा, तो मेरे साथ स्कूल भेजोगे?" शान्वी ने शर्त रखी।

"हां बाबा। तुम्हारा भाई है। ले जाना गर्ल बनाकर गर्ल्स स्कूल में।" पापा ने हंसते हुए उसकी बात मान ली, तब शान्वी स्कूल जाने को तैयार हुई। सबने चैन की सांस लीं।

शान्वी का स्कूल मिशनरी स्कूल था। स्कूल में सारे त्योहार धूमधाम से मनाए जाते थे। 15 अगस्त आने वाला था। तो 14 अगस्त को स्कूल के बच्चों के लिए एक छोटे से मेले का आयोजन किया गया। उसमें लड़कियां अपने छोटे भाई-बहनों को भी ला सकती थीं।

पर पापा ने तो तो कहा था गर्ल्स स्कूल में भाई नहीं जा सकते। तो क्या हो? उसने मम्मी को बताया, तो उन्होंने समझाया, "फेस्ट में भाई भी एन्ज्वाय करने जा सकते हैं।"

"नहीं, पापा ने झूठ नहीं बोला होगा। मैं उनकी बात मानूंगी।"

"तो फिर टुम्टू को मत से जाना।" मम्मी ने बात खत्म की।

"नहीं, मेरा भाई जरूर जाएगा। तू चलेगा न मेरा भाई?" कहते हुए वह भाई के कान में कुछ फुसफुसाने लगी। उसकी पूरी बात सुने बिना उसका हनुमान हां में सिर हिलाने लगा।

अगले दिन शान्वी ने कमरा बंद करके खुद अपने साथ अपने भाई को तैयार किया। उधर मम्मी-पापा भी तैयार हो रहे थे। बच्चों को स्कूल पहुंचाने और लाने का काम उन्हीं को करना था।

जब कमरा खुला और शान्वी अपने भाई के साथ बाहर आई, तो सबके मुंह खुले के खुले रह गए। शान्वी के साथ छोटा शान्वी खड़ा था। गुलाबी फ्रॉक पहनाकर शान्वी ने अपने टुम्टू को बिल्कुल लड़की की तरह तैयार किया था। वह भी खुशी से मुसकरा रहा था।

शान्वी गर्व से बोली, "अब यह मेरी बहन है।"

कोई क्या कहता? सब हंसने लगे। पर कुछ सोचकर उसकी मम्मी ने कुछ कपड़े एक बैग में डाले और सब स्कूल की ओर चले।

स्कूल में शान्वी की क्यूट सी

बहन को देखकर सब बड़े खुश हुए। हेड मिस्ट्रेस ने प्यार से लड़की बने टुम्टू को गोद में लेकर शान्वी से पूछा, "क्या नाम है इसका?"

अरे! शान्वी सोच में पड़ गई। भाई को बहन तो बना लिया था, पर नाम तो सोचा ही नहीं था। फिर घर में जैसी फिल्म देखती थी, वैसे ही नाम बता दिया, "मैम, इसका नाम शान्वी-2 है।"

हेड मैम सोच में पड़ गईं। उनकी उलझन को जब चुपचाप सच बताकर शान्वी की मम्मी ने सुलझाया, तो हंसी के मारे उनका बुरा हाल हो गया।

कुछ समय बाद हेड मिस्ट्रेस ने स्टेज से घोषणा की, "दो दिन बाद राखी है। आज जो लड़की अपने साथ भाई को लाई है, वह यहां अपने भाई को राखी बांधेगी।"

घोषणा से चारों तरफ बच्चे खुशी से हल्ला मचाने लगे। पर उनके बीच में शान्वी के आंसू बह रहे थे। उसने रोते हुए निराशा में बहन बने भाई को देखना चाहा, पर वह गायब था।

वह रोते-रोते हेड मिस्ट्रेस के पास पहुंची, "मैम-मैम, मेरा भाई खो गया है।"

"भाई? पर तुम तो अपनी बहन के साथ आई थी न?" हेड मिस्ट्रेस ने याद दिलाया।

"नहीं वह मेरा भाई टुम्टू है। अब मैं किसे राखी बांधूंगी?" कहते हुए शान्वी जोर-जोर से आंसू बहाने लगी।

हेड मिस्ट्रेस ने शान्वी को चुप कराया। फिर एक तरफ इशारा किया। शान्वी ने उधर देखा, तो उसका चेहरा खुशी से खिल उठा। उसकी बनाई बहन फिर से टुम्टू बना मम्मी के साथ ठुमक-ठुमककर उसी की ओर आ रहा था।

पहले सब शान्वी की बहन की तारीफ कर रहे थे। पर अब चर्चा का विषय उसका गोलू-मोलू भाई टुम्टू था। पर इससे शान्वी को क्या! उसकी खुशी तो छिपाए नहीं छिप रही थी।

सब लड़कियों ने अपने भाई को चेयर पर बैठाकर राखी बांधी पर शान्वी खुद चेयर पर बैठी और अपने टुम्टू को गोद में बैठाकर राखी बांध रही थी। वह बार-बार उसे पप्पी कर रहा थी जैसे कितने दिनों बाद भाई वापस मिला है।

उनका प्यार देख सब ताली बजाने लगे। इन सबसे बेखबर टुम्टू अपनी प्यारी दीदी के हाथ से राखी के उपहार में मिले चॉकलेट को खाने में व्यस्त था। ✪

अपने लेखक को जानिए

नलिन खोईवाल : दि न्यू इंडिया एश्योरंस कं. लि. में कार्यरत। विगत 35 वर्षों से लेखन क्षेत्र में सक्रिय रहते हुए देश की सभी ख्यात पत्र- पत्रिकाओं में लगभग 1000 रचनाओं का प्रकाशन ।

रोशन है इससे जग सारा

नभ का सूरज, चाँद, सितारा।
सबसे प्यारा, देश हमारा।।

आँच न इसपे आने देंगे,
जान अपनी लगा भी देंगे,
शीष कभी न झुकने देंगे,
देश हमें प्राणों से प्यारा ।

नभ का सूरज, चाँद, सितारा।
सबसे प्यारा, देश हमारा ।।

गंगा-जमनी इसकी धारा,
किश्ती का ये है किनारा ,
रक्षा इसकी धर्म हमारा,
दुश्मन से ये कभी न हारा ।

नभ का सूरज, चाँद, सितारा।
सबसे प्यारा, देश हमारा ।।

जान अपनी इस पर लुटाएं ,
शान तिरंगे की हम बढ़ाएं,
ताज सर का इसे बनाएं,
सबकी है आँखों का तारा।

नभ का सूरज, चाँद, सितारा।
सबसे प्यारा, देश हमारा ।।

आशा की उम्मीद हमारी,
इस पर वारी दुनिया सारी,
दुश्मन पर ये सदा है भारी,
कायम इससे भाईचारा ।

नभ का सूरज, चाँद, सितारा।
सबसे प्यारा, देश हमारा ।।

धरती की जन्नत है भारत,
संतों की मन्नत है भारत,
दुनिया की रंगत है भारत,
रौशन है इससे जग सारा।

नभ का सूरज, चाँद, सितारा।
सबसे प्यारा, देश हमारा ।।

आजादी का जश्न

आज पंद्रह अगस्त है। इस बात से बेखबर, शहर के बाहर बनी चित्रगढ़ बस्ती के भीखू, ललन, मुन्नी, करमू और नीलू रोज की भांति मुंह-अंधेरे कचरा बीनने निकल पड़े। वे कंधे पर झोला लटकाए हुए थे और कुत्तों को दबकाने के लिए हाथ में छड़ी थामे थे। रास्ते में उन्हें रंग-बिरंगे परिधान में स्कूल जाते हुए बच्चे दिखाई पड़े।

"अरे देखो-देखो! यहां रंग-बिरंगे झंडों, प्लास्टिक की पन्नियों से यह ग्राउंड सजा है। चलो, चलकर पूछते हैं, आज यहां क्या हो रहा है?"

"अंकल! आज क्या कोई खास दिन है?" राह चलते एक आदमी से भीखू ने पूछा।

"हां, आज पंद्रह अगस्त है और यहां कार्यक्रम होने वाला है।"

"पंद्रह अगस्त माने तो?" ललन पूछ बैठा।

"यानी आजादी का जश्न! इस दिन हमारा देश आजाद हुआ था।"

"यह देखो सब लोग उत्साह से भरे और खुशी-खुशी ग्राउंड में जा रहे है।" नीलू बोला।

उत्सुकता से भरे वे भी पुलिस की नजरों से बचते-बचाते बच्चों के पीछे हो लिए। वहां पुलिस कर्मियों का घेरा था। उन्हें देख करमू बोला, "सुना है,

चित्र : सुशील दोषी

कोई नेता भाषण देने आने वाला है। तभी तो चप्पे-चप्पे पे पुलिस है।"

तभी एक पुलिसिए की नजर उन पर पड़ी। वह डंडा हाथ में लेकर उनके पीछे दौड़ा। सब अपने झोले को हाथ से संभालते सरपट दौड़ पड़े।

"हमारे हाथ में झोला देखकर वह हमको उठाईगिरा समझ रहे हैं।" नीलू बोला।

"अब क्या करें?" पांचों एक साथ बोले।

"आज हम कछु काम ना करी, हम भी आजादी का जश्न मनाई का रही। मैं पुरके साल मेमसाहब, बाबूजी और रोहन बाबा संग इहां आई रही, हमका सब मालूम बा, इहां का होवत है।" मुन्नी बोली।

"आज हमसब भी कछु ना करी, हमरी बस्ती मा हमरा भी जश्न मनाए के बा।" सब एक साथ बोले।

मुन्नी उन सब में बड़ी थी, सो सभी उसकी बात मानकर चल दिए। उन्होंने झोंपड़ियों के पास खुली जगह को साफ किया। रोहन बाबू ने मुन्नी को कुछ बचे हुए रंग-बिरंगे स्केच पेन दिए थे।

मुन्नी ने नीलू को कागज और पेन देते हुए कहा, "तू अच्छे चित्र बनाता है, चलो भारत का झंडा बनाओ।"

मुन्नी को मेमसाहब ने रोहन बाबा के जन्मदिन पर गुब्बारों का पैकेट दिया था। सब मिलकर उन्हें फुलाने लगे। फिर खुले मैदान में दो बांस गाड़कर नीम के पेड़ की टहनियों पर एक चादर के कोनों को बांधकर उन्होंने शामियाना तान दिया, बांस और टहनियों पर रंग-बिरंगे गुब्बारे सजा दिए। ललन बस्ती में जाकर सबको बुला आया, "सबको नीम के पेड़ के पास आना है, हम सब आजादी का जश्न मनाएंगे।"

धीरे-धीरे बस्ती वाले वहां इकट्ठे हो गए। सबके मन में उत्सुकता थी कि ये बच्चे क्या करने वाले हैं?

बस्ती के सभी बच्चों को दौड़ने के लिए कहा गया। मुन्नी ने कहा, "जो बच्चे प्रथम तीन स्थान प्राप्त करेंगे, उन्हें ईनाम दिया जाएगा।"

उधर मुन्नी की मम्मी के काम पर न जाने के कारण साहब ढूंढ़ते हुए बस्ती में आ पहुंचे। वहां सभी बस्ती वालों को इकट्ठा देखकर वह हैरान रह गए। पूछा, "ये क्या हो रहा है?"

"हम आजादी का जश्न मना रहे हैं।" मुन्नी व दूसरे बच्चों ने उत्साहपूर्वक बताया।

मुन्नी के आग्रह पर वह वहां रखी एकमात्र कुर्सी पर बैठ गए। तब मुन्नी ने कहा, "ये बाबू जी रोहन के पापा हैं। ये ही हमारे आज के मुख्य मेहमान हैं, अब ये भाषण देंगे।"

उन्होंने कुछ देर फोन पर बात की और बस्ती वालों को कहा, " मैं तुम बच्चों का उत्साह देखकर खुश हूं। आज के दिन सब छुट्टी मनाते है। स्कूलों में, घर में टीवी पर देखकर, अलग-अलग स्थलों या सरकारी तौर पर मुख्य स्थल पर जाकर पंद्रह अगस्त मनाते हैं। आज के दिन देश की आजादी के लिए कुर्बानी देने वाले स्वतंत्रता सेनानियों की शहीदी को भी याद किया जाता है।

मुन्नी दौड़कर कोने में रखा कागज का बना झंडा ले आई और रोहन के पापा को थमाते हुए बोली, "हमरे मुख्य अतिथि यहां झंडा फहराएंगे, हम सब मिलकर ताली बजाएंगे।"

बाबूजी ने झंडा नीम की ऊंची डाली पर फहराया, तो तालियां गूंज उठीं। उन्होंने अपना हाथ माथे पर रखकर झंडे को सलाम किया। फिर राष्ट्रीय गान गाया। उन्होंने अपने भाषण में बताया, "हमारा देश गुलाम था और करीब 70 साल पहले ही आजाद हुआ है। अब हम अपने मन मुताबिक कोई भी काम कर सकते हैं। अब सब बच्चे पढ़ाई भी कर सकते हैं और स्कूलों में मुफ्त खाना भी दिया जाता है। अगले साल से हम आजादी के जश्न के लिए पहले से ही तैयारियां किया करेंगे और सारा खर्चा मेरी तरफ से होगा। आगे बढ़ने के लिए अब तुम सब क्या करना चाहते हो, मुझे बताओ।"

"हमारा स्कूल में नाम लिखवाओ, हम अपना यह काम स्कूल से आने के बाद कर लेंगे। हम वादा करते हैं कि अपनी बस्ती को साफ करेंगे, साफ कपड़े पहनेंगे और खूब खेलेंगे भी।" बच्चों ने कहा।

"मैं कुछ सामाजिक संस्थाओं व जिला कलेक्टर साहब से मिलकर इस बस्ती में स्कूल खुलवाने की कोशिश करूंगा। सब इंतजाम करवा दूंगा, पर तुम्हें वादा करना होगा कि अपने घरों व आसपास सफाई रखोगे।"

'भारत माता की जय! भारत माता की जय!' के साथ-साथ एक और स्वर सुनाई पड़ा, "बाबूजी की जय!"

तभी एक आदमी बड़ा-सा डिब्बा हाथ में लिए वहां आया। साहब ने भोलू, रामू और बाबू को बुलाया। उन्हें रेस जीतने पर रंगीन कागज में लिपटा एक-एक पैकेट ईनाम में दिया। सभी को छोटे डिब्बे में चार-चार लड्डू दिए गए। ✪

अपने लेखक को जानिए

डॉ. शील कौशिक : एमएससी, एलएलबी, एम.एच.एम (होम्योपैथी)। प्रकाशित पुस्तकें : 30 (मौलिक : 21, सम्पादित : 5, अनुवादित : 3, लेखिका पर पुस्तक-1)। कुछ के नाम : बचपन के आईने से, धूप का जादू, करें तो क्या करें, माशी की जीत, बाल कविता-संग्रह : बिल्लो रानी।

राष्ट्रभक्ति

महीनों बाद पीहू अपने माता-पिता के साथ अपने गांव में आई थी। कोरोना महामारी के चलते कई महीनों से ट्रेन बंद थी। हवाई जहाज उसके गांव में जाते नहीं थे, इसलिए पीहू अपने माता पिता के साथ मुंबई में ही रहने को मजबूर थी।

गांव के घर में आते ही पीहू चहकने लगी। इतना बड़ा खुला-खुला सा घर। घर में खूब सारे लोग। दादा-दादी, चाचा-चाची और उनके दो बच्चे। पीहू की खुशी का ठिकाना नहीं था। गांव में सब लोग शाम को जल्दी ही खाना खा लेते थे। पीहू ने पेट भरकर स्वादिष्ट खाना खाया और दौड़कर अपने दादाजी की गोद में आकर बैठ गई। चाचा के दोनों बच्चे भोलू और गीता भी उसके पीछे पीछे दादाजी की चारपाई पर आकर बैठ गए।

पीहू जब भी गांव में आती, रात को दादाजी से एक कहानी रोज सुनती। यह उसका प्रिय काम था। दादाजी कभी राजा-रानी की कहानी सुनाते, तो कभी विक्रम बेताल की, कभी सामान्य लोगों, किसानों और मजदूरों के किस्से। सभी कहानियां और किस्से रोचक होते।

इस बार बच्चों ने राजा की कहानी सुनाने की जिद की। कहानी सुनाने से पहले दादाजी ने बच्चों के सामने एक शर्त रखी कि कहानी के दौरान पूछे गए सवाल का उत्तर मिलने पर ही कहानी पूरी करेंगे। नहीं तो कहानी अधूरी रहेगी। बच्चों के शर्त मानने पर कहानी शुरू हुई।

एक बहुत ही कर्तव्यनिष्ठ राजा थे। वह स्वयं से ऊपर देश को रखते थे। उनके राज्य में प्रजा बहुत खुश थी। राजा की लंबी आयु और उनके सुशासन के लिए प्रतिदिन भगवान से सभी प्रजाजन प्रार्थना करते थे। राजा के मंत्री मंडल में भी अधिकतर लोग राजा से संतुष्ट थे।

पर कुछ लोग मौका मिलने पर राजा की आलोचना भी किया करते थे। एक व्यक्ति राजा का प्रबल विरोधी था। वह हमेशा ही राजा की कमियों की चर्चा करता रहता था।

एक दिन अचानक विदेश मंत्री बीमार हो गए। उचित इलाज से वह ठीक तो हो गए किंतु अपनी वृद्ध अवस्था के

चित्र : सुशील दोषी

कारण उन्होंने मंत्री पद से इस्तीफा दे दिया। उन्होंने राजा से प्रार्थना की कि वो अपना बचा हुआ जीवन एक सामान्य नागरिक की भांति व्यतीत करना चाहते हैं।

राजा ने उनकी इच्छा का मान रखते हुए, भारी मन से उनका इस्तीफा स्वीकार कर लिया। परंतु अब उसके सामने चुनौती थी कि उनके जैसा बुद्धिमान और दूरदर्शी विदेश मंत्री कैसे चुना जाए।

राजा ने नागरिकों से आवेदन पत्र आमंत्रित किए। सभी आवेदन पत्रों को पढ़ने के बाद उसकी नजर अंतिम आवेदन पत्र पर पड़ी, जो उसके उसी आलोचक का था। इतनी कहानी सुनाकर दादाजी रुक गए। उन्होंने बच्चों से प्रश्न किया,“ बताओ बच्चों राजा ने अपना विदेश मंत्री किसे चुना?”

बच्चों ने अपना-अपना दिमाग लगाया। गीता ने कहा, सभी योग्य थे, किसी को भी बनाया होगा। भोलू के अनुसार राजा ने यह विभाग अपने पास ही रख लिया होगा। पीहू को बहुत सोचने पर भी कोई उत्तर नहीं सूझा, इसलिए उसने दादाजी से ही सही उत्तर बताने की प्रार्थना की। गीता और भोलू ने भी उसकी बात का समर्थन किया।

बच्चों की बात मानते हुए दादाजी ने आगे कहानी सुनाना शुरू किया, “तुम सब विश्वास नहीं करोगे किंतु राजा ने अपने प्रबल आलोचक को अपने देश का विदेश मंत्री नियुक्त किया।”

दादाजी की बात सुनकर बच्चे आश्चर्यचकित थे। उन्होंने उत्सुकता दिखाते हुए पूछा, “लेकिन राजा ने ऐसा क्यूं किया दादाजी?”

दादाजी मुसकराकर बोले, “क्योंकि राजा सच्चा देशभक्त था।”

बच्चों की समझ में अब भी नहीं आया था। उन्होंने फिर से प्रश्न किया, “अपने आलोचक को विदेश मंत्री बना देने से राजा देशभक्त कैसे हो गया दादाजी?”

इस बार दादाजी ने थोड़ा सरल करके समझाया, “देखो, राजा जानता था कि उसका आलोचक अपना पूरा ध्यान देश की सुरक्षा में लगाएगा क्योंकि उसकी राजा को खुश करने में कोई रुचि नहीं थी। राजा ने स्वयं को पीछे रखकर देश के बारे मे सोचा। इसलिए राजा सच्चा देशभक्त था।”

बच्चों की समझ में अब पूरी बात आ गई थी। उन्हें कहानी बहुत पसंद आई। दादाजी के प्रश्न ने कहानी को और भी रोचक बना दिया था। आज उन्होंने देशभक्ति की नई परिभाषा सीखी। पीहू बहुत ही खुश थी। इतने महीनों बाद इतनी अच्छी कहानी उसने सुनी थी।

अपने लेखक को जानिए

अर्चना त्यागी : मुजफ्फरनगर (उत्तर प्रदेश) में जन्म, वर्तमान में राजस्थान में निवास। रसायन विज्ञान व्याख्याता एवं कैरियर परामर्शदाता। वूमन ऑफ ऑनर अवॉर्ड, बेस्ट टीचर, बेस्ट कॉर्डिनेटर, बेस्ट मंच संचालक एवं कई साहित्यिक पुरस्कार। विभिन्न समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में नियमित प्रकाशन

अपने भीतर के लेखक को उड़ने के लिए खुला आसमान दें

- अपनी रचना को दूसरों के सामने लाने के लिए, अपनी कहानी, कविता या लेख को पी.डी एफ. फार्मेट में किताब या पत्रिका के रूप में दुनिया के सामने लाएं।
- आप केवल लिखें। बाकी सब हम पर छोड़ दें।
- ब्लैक एंड ह्वाइट या रंगीन चित्र भी बनवाने की सुविधा है।
- संपादन में 25 वर्षों का अनुभव

संपर्क करें

अनिल जायसवाल
9810556533 7982014609
akjaiswal2592@gmail.com

ANIL JAISWAL
Jais Features
akjaiswal2592@gmail.com
9810556533
7982014609

हिंदी में किसी भी प्रकार की, खास तौर पर बच्चों के लिए प्रकाशन सामग्री या कार्य के लिए संपर्क करें. प्रूफ रीडिंग, संपादन, संकलन, टाइपिंग, मैगजीन सेटिंग, डिजाइनिंग, पी.डी. फार्मेट में पत्रिका या ई. पत्रिका निकालने की सुविधा भी उपलब्ध है.

नंदन बाल पत्रिका में संपादन का 25 वर्षों का अनुभव

कोहन के औज़ार

कोहन एक कुशल बढ़ई था। पर अब वह बूढ़ा हो चला था, इसलिए उसे कोई काम नहीं देता था। उसके दिन बेहद गरीबी में कट रहे थे।

एक शाम को एक अमीर आदमी उसकी झोंपड़ी पर आया। उसने कहा, "मैंने तुम्हारा बहुत नाम सुना है। मुझे अपने बेटे के लिए एक सुंदर कुर्सी चाहिए। पर मेरी एक शर्त है। मुझे कुर्सी कल शाम तक चाहिए। अगर कल शाम तक कुर्सी मिल गई तो मुंह-मांगा पैसा दूंगा। पर अगर ऐसा नहीं कर पाए, तो एक कौड़ी भी नहीं दूंगा।"

बड़े दिनों बाद कोई ग्राहक आया था। कोहन खुशी-खुशी मान गया।

पर उस रात ऐसा हुआ कि कोहन बीमार पड़ गया। उसे तेज बुखार चढ़ आया। उसमें चारपाई से उठने की ताकत भी न रही। वह रोते हुए कहने लगा, "बड़ी मुश्किल से एक काम मिला था। पर लगता है, वह भी हाथ से निकल जाएगा।"

रात को जब कोहन बेसुध था, तो आरी फुसफुसाकर कहने लगी, "हमें मालिक की मदद करनी चाहिए।"

हथौड़ी ने 'हां' में 'हां' मिलाते हुए कहा, "हां, मालिक हमारा बहुत

चित्र : सुशील दोषी

ख्याल रखते हैं। काम न होने पर भी हमें रोज झाड़-पोंछकर चमकाकर रखते हैं।"

"हां, हमें उनकी मदद करनी चाहिए।" यह कहकर सारे औजार फटाफट काम में जुट गए।

पैमाना नाप लेकर लकड़ी पर जगह-जगह निशान लगाता हुआ गाने लगा,

"मुझको कहते हैं पैमाना,
सबका हूं परखा-पहचाना,
लंबाई हो या चौड़ाई,
नाप सभी की करता भाई।"

नाप हो गई, तो आरी लकड़ी के टुकड़े काटती हुई गुनगुनाने लगी-

"मैं हूं आरी, मैं हूं आरी,
काठ काटना मेरा काम,
चलती रहती खरर-खरर-खर,
कभी नहीं करती आराम।"

आरी के चलने से लकड़ी हिलने-डुलने लगी। आरी को कठिनाई आई तो फौरन शिकंजे ने उसे जकड़ लिया और बोला-

"मुझको सभी शिकंजा कहते,
है मजबूत पकड़,
लकड़ी को हिलने से रोकूं,
रक्खूं उसे जकड़।"

आरी का काम आसान हो गया। वह फटाफट लकड़ी के टुकड़े करने लगी। पर काटते-काटते उसके दांत कुंद पड़ने लगे, तो उसका दम फूलता देख रेती बोली,

"मैं छोटी-सी रेती हूं, पर बड़े काम की हूं। आरी के दांतों को हरदम, पैना रखती हूं।"

रेती ने रगड़-रगड़कर आरी के दांत पैने कर दिए। आरी को फिर से नई ताकत मिल गई। उसने फटाफट लकड़ी के टुकड़े कर दिए।

पर लकड़ी ऊबड़-खाबड़ थी। कहीं-कहीं गांठें भी थीं। बसूला फौरन आगे आया और मस्ती में गाता हुआ अपना काम करने लगा-

"मुझे बसूला कहते हैं सब,
काम बहुत मैं आता हूं,
जहां कहीं भी पड़े जरूरत,
फौरन ही जुट जाता हूं।"

जब लकड़ी समतल हो गई, तो उसकी खुरदरी सतह को चिकना करने का काम शुरू हुआ। रंदा अपने काम में जुटता हुआ बोला,

"आगे आऊं-पीछे जाऊं,
लकड़ी समतल करता जाऊं।
खुश रहता मुझसे हर बंदा,
मैं मालिक का प्यारा रंदा।"

रंदे के घिसने से लकड़ी की ढेर सारी छीलन इकट्ठी हो गई, पर लकड़ी शीशे की तरह झिलमिलाने लगी। अब हथौड़ी और चोरसी आगे आए और मिलकर गाते हुए काम करने लगे-

"मुझे हथौड़ी कहते हैं सब,
ठक-ठक करती रहती हूं।
मुझे चलाओ चाहे जितना,
कभी नहीं मैं थकती हूं।"

फिर चोरसी बोली,

"मुझे चोरसी कहते हैं सब,
मैं लकड़ी में छेद बनाती।"
चौकोर बने उन छेदों में तब,
दूजी लकड़ी फिट हो जाती।

पत्थरी भी साथ-साथ गाने लगी,

"मैं तो हूं पत्थर का टुकड़ा,
काम बहुत पर आती हूं।
धार पड़े जब मंद तुम्हारी,
फौरन सान चढ़ाती हूं।"

बरमा बड़ी देर से अपनी बारी का इंतजार कर रहा था। मौका मिलते ही उसने जोड़ों पर छेद बनाने शुरू किए ताकि उनमें बांस की पतली खपच्चियां ठूंसकर उन्हें चरर-मरर होने से रोका जा सके-

"नाच दिखाता ता-ता थैया,
मुझको बरमा कहते भैया,
आर-पार मैं छेद करूं,
नहीं काम में खेद करूं।"

गुनिया ने किनारों के समकोण मापते हुए कहा-

"मुन्ना हो या फिर हो मुनिया,
चाहे सुन ले सारी दुनिया,
मैं कोनों के समकोण मापता,
चीजों में संतुलन बनाता।"

सब औजारों के सहयोग से कुर्सी बनकर तैयार हो गई।

अगली शाम अमीर आदमी आया। सुंदर कुर्सी तैयार देखकर वह खुश हो गया। उसने कोहन को ढेर सारा धन दिया और कुर्सी लेकर चला गया।

मगर कोहन..., हां, कोहन अब भी हैरत में था कि उसने तो कुछ भी नहीं किया, कुर्सी अपने आप कैसे तैयार हो गई? ✪

अपने लेखक को जानिए

डॉ. मोहम्मद अरशद खान : कॉलेज में अध्यापन के साथ-साथ लेखन भी। अच्छे और प्रसिद्ध बाल कहानीकार। बच्चों के लिए उपन्यास, कविता एवं कहानी विधा की बाल 14 पुस्तकें प्रकाशित। कई पुस्तकों का मराठी, अंग्रेजी, उड़िया और गुजराती भाषा में अनुवाद। भारतेंदु हरिश्चंद्र एवं हरिकृष्ण देवसरे सहित अनेक पुरस्कार प्राप्त।

पुरी

ओडिसा के प्रमुख शहरों में है पुरी। इसकी खास बात यह है कि जहां यह एक ऐतिहासिक नगरी है, वहीं पर्यटकों को लिए भी यह एक सुंदर पर्यटन स्थल है। यहां के मंदिर और समुद्रतट लोगों को अपने पास बुलाते हैं।

पुरी भारत के पूर्वोत्तर में बंगाल की खाड़ी के किनारे बसा है। प्रदेश की राजधानी भुवनेश्वर यहां से केवल 37 किलोमीटर दूर है। पुरी का इतिहास बहुत पुराना है। माना जाता है कि इसका पूरा नाम कभी जगन्नाथ पुरी या पुरुषोत्तम पुरी रहा होगा। ब्रिटिश काल में इसे जगन्नाथ पुरी ही कहा जाता था। यह हिंदुओं के लिए भारत के सात पवित्र शहरों में से एक है। आदि शंकराचार्य ने जो चार गोवर्धन मठों का स्थापना की थी उनमें से एक पुरी भी है। अन्य हैं शृंगेरी, द्वारका और ज्योतिर्मठ। यहां की स्थानीय भाषा उड़िया है। परंतु यहां बांग्ला हिंदी और अंग्रेजी भी लोग आराम से समझ लेते हैं।

पुरी और मंदिर : पुरी भगवान जगन्नाथ के लिए पूरे विश्व में मशहूर है। यहां बने जगन्नाथ मंदिर का निर्माण ग्यारवीं शताब्दी में हुआ था। इसे कलिंग के शासक अनंतवर्मन चोदागंगा देव ने बनवाया आरंभ किया था। बाद में अनंग भीमदेव ने सन 1174 में इसे पूरा करवाया। यह हिंदुओं के चार धामों (द्वारका, बद्रीनाथ, रामेश्वरम और पुरी) में से एक है। यहां की रथ यात्रा विश्व प्रसिद्ध है। मंदिर में मुख्य रूप से भगवान जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा की पूजा होती है।

चिल्का लेक : चिल्का लेक दुनिया की सबसे बड़ी ताजे पानी की झील है। भूमि का एक छोटा सा टुकड़ा इसे बंगाल की खाड़ी से अलग करता है। करीब 65 किलोमीटर लंबी यह झील किसी समुद्र से कम नहीं है। भारतीय उपमहाद्वीप में प्रवासी पक्षियों के लिए यह दुनिया का सबसे बड़ा घर है। सर्दियों में यहां देश-विदेश से आए सैकड़ों प्रजातियों के पक्षियों को देखा जा सकता है। यहां एक से बढ़कर स्थानीय जीव-जंतु भी देखे जा सकते हैं। इस झील में भारतीय डॉल्फिन तक देखी जा सकती हैं। साफ पानी की मछलियों की आपूर्ति का भी यह एक मुख्य श्रोत है। यह झील ओडिसा के तीन जिलों पुरी, खुर्दा और गंजम से जुड़ी है। यहां स्थित नलबाना पक्षी अभ्यारण्य बहुत प्रसिद्ध है।

नालवन द्वीप : चिल्का में ही स्थित करीब 15 किलोमीटर की परिधि में फैले इस द्वीप को 1973 में पक्षी अभ्यारण्य घोषित किया गया। यहां आकर चारों तरफ बैठे पक्षियों और उनकी क्रिया-कलापों को निहारना एक अद्भुत अनुभव होता है।

निर्मलझर वॉटरफॉल : चिल्का से करीब 12 किलोमीटर दूर स्थित निर्मलझर झरना पिकनिक मनाने के लिए बेहतरीन स्थल है। लोग यहां सुबह ही पहुंच जाते हैं और शाम तक झरने को निहारते रहते हैं।

मारकंडेश्वर मंदिर : यह मंदिर भगवान शिव को समर्पित है। इसे 13वीं शताब्दी में बनवाया गया था। इसके मुख्य द्वार पर दस भुजा नटराज की मूर्ति देखते ही बनती है। साथ ही मां पार्वती, मुरुगा और गणेश की भी यहां भव्य मूर्तियां हैं।

नरेंद्र टैंक : इस टैंक का निर्माण 15वीं शताब्दी में करवाया गया था। यह पुरी के पास स्थित है। इसका पानी इतना पवित्र माना जाता है कि यहां जगन्नाथ की चंदन यात्रा का वार्षिक आयोजन किया जाता है।

इसे चंदन पुष्कर्णी समारोह के नाम से जाना जाता है। यह इतना बड़ा है कि यह यहां कुल 16 घाट बने हैं जहां लोग स्नान करते हैं।

समद्रतट : पुरी के बीच दुनिया में मशहूर हैं। समद्र के किनारे जब सोने जैसे चमकने रेत के कणों पर सूर्य की रोशनी पड़ती है, तो इसका सौंदर्य अद्भुत लगता है। पुरी का समद्र तट काफी बड़ा और चौड़ा है। यहां लहरों का वेग तेज होता है, इसलिए समुद्र में खेल करते समय सावधान रहने की आवश्यकता रहती है।

स्वर्गद्वार बीच : स्वर्गद्वार के मशहूर बीच है। इसकी खासियत यह है कि अनजान होने के कारण इसका प्राकृतिक रूप आज भी बरकरार है। इसे एक पवित्र तट माना जाता है।

जब पुरी का प्रोग्राम बनाएं, तो कोणार्क, भुवनेश्वर, कटक आदि भी देखने के लिए समय निकालें क्योंकि बार-बार एक जगह आना संभव नहीं।

कैसे जाएं : यदि हवाई जहाज से आना चाहते हैं तो भुवनेश्वर का बीजू पटनायक हवाई अड्डा सबसे नजदीक है। यहां से पुरी की दूरी केवल 56 किलोमीटर है। सारे प्रमुख नगरों से यहां के लिए नियमित उड़ाने हैं।

अगर रेल से आना चाहते हैं, तो पुरी में रेलवे स्टेशन है और पूरे भारत से कई गाड़ियां सीधे पुरी से जुड़ी हुई हैं। सीधी गाड़ी न मिले, तो भुवनेश्वर तक ट्रेन से आकर वहां से बस, प्राइवेट टैक्सी, ट्रेन आदि से आराम से पुरी पहुंचा जा सकता है।

अगर सड़क मार्ग से आना हो, तो कोलकाता से भुवनेश्वर के रास्ते राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 203 का प्रयोग कर सकते हैं। कोलकाता से जहां पुरी की दूरी 495 किलोमीटर है वहीं कोनार्क से 36, और कटक से पुरी की दूरी 32 किलोमीटर है।

कब जाएं : पुरी समुद्र के किनारे है अतः घूमने के लिए नवंबर से मार्च तक का समय अच्छा माना जाता है।

होशिमारो की नाक

चित्र : सुशील दोषी

एक था ढोलकिया। बिलकुल अकेला। खुशी के मौकों, त्यौहारों पर ढोल बजाता और इस तरह कमाए गए धन से अपनी रोजी-रोटी का जुगाड़ बैठाता। समय बीता, ढोलकिया बूढ़ा हुआ और इस तरह लाचार हुआ कि घूम-घूमकर ढोल बजाना उसके बस की बात नहीं रही। लेकिन सौभाग्य से गांव वाले दयालु थे, इसलिए वे बारी-बारी से उसके घर खाना पहुंचाने लगे।

उस गांव में होशिमारो नाम का एक युवक रहता था। वह ढोल बजाना सीखना चाहता था। इसी गरज से वह प्रतिदिन ढोलकिए के पास बिना नागा किए जाने लगा। बूढ़ा ढोलकिया होशिमारो की विनम्रता और लगन से बहुत प्रभावित हुआ, इसलिए उससे जितना हो सका, उसने होशिमारो को ढोल बजाना सीखा दिया।

एक दिन होशिमारो जब बूढ़े ढोलकिए के पास पहुंचा तो ढोलकिए ने उसे पास बुलाकर धीरे से कहा, "सुनो होशिमारो, कल रात मैंने एक सपना देखा कि मेरी ढोल मुझसे कह रही थी कि वह मुझसे बहुत खुश है। क्योंकि मैंने उसे पूरे जीवन अपनी संतान की तरह प्यार किया, इसलिए वह मुझे वरदान देती है कि जो कोई उसे बजाते हुए 'ऊपर-ऊपर' कहेगा, तो

सामने वाले की नाक लंबी होती जाएगी। 'नीचे-नीचे' कहने से नाक छोटी होने लगेगी। होशिमारो, अब मेरे तो दिन पूरे होने वाले हैं, सो मैं चाहता हूं कि यह ढोलक तुम संभालो और इसके जादू से लोगों का भला करो। लेकिन इसके साथ तुम्हें एक वचन भी देना होगा।"

होशिमारो ने कहा, "आप भरोसा रखें गुरुदेव, आप जो कुछ भी कहेंगे, उसका पालन पूरे जी-जान से करूंगा।"

"मैं चाहता हूं कि तुम इस ढोल का उपयोग मात्र लोगों की भलाई के लिए ही करो, कभी पैसा कमाने या अपनी जिज्ञासा के लिए इसकी शक्ति का उपयोग नहीं करना।" बूढ़े ढोलकिए ने होशिमारो से कहा।

होशिमारो ने कसम खाई कि वह अपने गुरु की बातों का सच्चे मन से पालन करेगा।

कुछ दिनों बाद ही बूढ़ा ढोलकिया दुनिया से चल बसा। होशिमारो ने गुरु का अच्छी तरह से अंतिम संस्कार किया और बाद में ढोल लेकर उस गांव से चला गया।

होशिमारो अब गांव-गांव घूमकर लोगों की छोटी-बड़ी नाक को ढोल की मदद से सही करने लगा। एक दिन उसे पता चला कि राजकुमारी अपनी छोटी नाक के कारण बहुत परेशान है। अगले ही दिन वह ढोलक लिए राजदरबार में पहुंचा। ढोल के चमत्कार से राजकुमारी की नाक सुंदर हो गई। खुश होकर राजा ने उसे काफी धन दिया और अपना दरबारी भी बना लिया।

अब तो होशिमारो की दौलत और शोहरत में दिन दूनी, रात चौगुनी तरक्की होने लगी। कहते है कि ज्यादा धन आदमी की बुद्धि का नाश कर देता है। होशिमारो के साथ भी यही हुआ। एक दिन होशिमारो अपने महल के विशाल बाग में हरी-भरी नरम घास के ऊपर लेटा हुआ था। पास ही उसकी ढोलक पड़ी हुई थी कि अचानक होशिमारो को खयाल आया कि आज देखा जाए कि ढोल बजाकर वह नाक को कितनी ऊंचाई तक ले जा सकता है? बस, यह सोचते हुए वह अपने गुरु को दिया वचन पूरी तरह से भूल गया और ढोल को अपने पेट पर रख, उसे जोर-जोर से बजाते हुए 'ऊपर-ऊपर' कहने लगा।

ढोल की थाप और 'ऊपर-ऊपर' की आवाज की साथ-साथ नाक धीरे-धीरे लंबी होती हुई आसमान को छूने लगी। बढ़ते-बढ़ते नाक बादलों तक जा पहुंची। इतने में दो गिद्ध उस नाक की पास उत्सुकता से मंडराने लगे और उस पर चोंच का तीव्र प्रहार करने लगे। असीम पीड़ा से घबरा कर होशिमारो 'नीचे-नीचे' कहने लगा, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। गिद्ध नाक को अपनी ओर खींचते हुए आसमान में ऊपर की ओर उड़ने लगे। नतीजन होशिमारो की नाक तो छोटी होती गई लेकिन गिद्धों द्वारा नाक खींचने के कारण वह आसमान की ओर उठता चला गया। होशिमारो की नाक जब बिल्कुल पहले की तरह हो गई तो वह गिद्धों के बिल्कुल पास पहुंच गया। अपने करीब आदमी को देख गिद्ध घबरा गए और उन्होंने नाक छोड़ दी। होशिमारो काफी ऊंचाई से एक झील में गिरकर मर गया।

जापान वालों का मानना है कि होशिमारो मरा नहीं, बल्कि एक लंबी नाक वाली मछली बन गया, जो आज भी केवल उसी झील में पाई जाती है। ✪

अपने लेखक को जानिए

शैलेन्द्र सरस्वती : पिछले ढाई दशकों से बाल साहित्य की विविध विधाओं में लेखन तथा प्रकाशन। बाल पत्रिका चहल-पहल तथा दीवार पत्रिका साहित्यिकी का संपादन। कुछ बाल नाटकों का निर्देशन। कहानी 'काशी' के लिए बालहंस से पुरस्कृत।

अपना योगदान दें

पायस बच्चों को ध्यान में रखकर पायस का प्रकाशन रंगीन चित्रों के साथ आप सबके सहयोग से हो पा रहा है।

रचना ही नहीं, आर्थिक योगदान देकर भी इस प्रयास में सहयोगी बनें

खिड़की वाली गिलहरी

सीमा पिता की तरक्की और तबादले के बाद गांव से शहर आई है। शहर का कोलाहल, ऊंची ऊंची गगनचुंबी इमारतें और हर तरफ लोगों की भीड़ देखकर वह सहम जाती हैं।

उसे गांव में भंवरों, तितलियों और गिलहरियों के पीछे भागना ज्यादा याद आ रहा है। याद आ रहे हैं गांव के संगी साथी जिनके साथ खेतों में, पनघट पर, कुएं की मुंडेर पर, खेत-खलियान में दौड़ती-भागती रहती थी। गांव की चौपाल, नदी, पेड़, झुंड में जाते गाय, बकरियां..., वह कुछ भी तो भुला नहीं पा रही है।

वह मायूस हो गई है। उसके मम्मी-पापा जहां अपनी तरक्की का जश्न मना रहे हैं, वहीं सीमा सूनी-सूनी आंखों से घर की खिड़की पर बैठी रहती है, जिसका मुंह बगीचे की तरफ खुलता है। बगीचे की हरियाली और झूमते पेड़-पौधे उसे कुछ देर के लिए जरूर आकर्षित करते हैं। उसे यहां वह सब कुछ नहीं दिख रहा है, जो वह गांव में छोड़ आई है।

एक दिन इसी तरह जब सीमा घर की खिड़की पर बैठी थी, तो उसे पेड़ पर इधर से उधर दौड़ती-भागती गिलहरी दिखी। वह खुशी से चहक उठी, "अरे वाह! गिलहरी ....चलो कोई तो है, यहां जाना पहचाना।" सीमा अंदर गई और उसके खाने के लिए कुछ लेकर आई। खिड़की से बाहर अपने नन्हे हाथों को निकालकर उसको मानो बुलाने का प्रयास किया। परंतु यह क्या, गिलहरी तो उसकी तरफ देखी तक नहीं।

सीमा मां के पास गई और गिलहरी के खाना ना खाने की बात बताई। तब मां ने समझाया, "बेटा उसे पास आने में डर लगता है।"

मां की बात बीच में ही काट सीमा बोली, "गांव में तो मैं अपने हाथों से गिलहरियों को खाना खिलाती थी।"

"वही तो बात है सीमा, यह शहर है। यहां के भीड़ भरे इलाकों में गिलहरी तो क्या, कोई किसी पर विश्वास नहीं कर पाता है।"

पर इतनी बड़ी-बड़ी बातों को समझने की शायद अभी सीमा की उम्र नहीं थी। सो वह चुपचाप रोज की तरह खिड़की पर आ कर बैठती, हाथ में खाने की कुछ ना कुछ चीज लेकर। पर नतीजा सिफर ही रहता। गिलहरी नहीं आती, तो नहीं आती।

एक दिन नित्य की भांति सीमा मुट्ठी में खाना दबाकर खिड़की के पास बैठी थी। ठंडी-ठंडी हवा के झोंके चल रहे थे। सीमा को झपकी सी आने लगी। उसे स्वयं ही पता नहीं चला। उसकी मुट्ठी खुल गई और हाथ का खाना खिड़की की मुंडेर पर बिखर गया। थोड़ी देर बाद उसका ध्यान इस तरफ गया। उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब उसने देखा, उस खाने को गिलहरी बड़े मजे से खा रही थी। खुशी के

मारे उसकी चीख निकल गई और वह अपनी मां को बताने के लिए अंदर की ओर भागी।

बड़ी-बड़ी आंखों को फैलाते हुए आश्चर्यचकित होकर उसने मां को बताया, "आज गिलहरी ने मेरा खाना खाया।

मां ने चैन की सांस लेते हुए सोचा, 'चलो कुछ तो अच्छा हुआ। इस बच्ची का मन भी धीरे-धीरे रम ही जाएगा।'

अब सीमा नित्य की भांति मुट्ठी में खाना दबाए उस खिड़की पर बैठी रहती परंतु तीन-चार दिन तक गिलहरी ना आई तो न ही आई ।

एक दिन सीमा ने देखा कि गिलहरी खिड़की की मुंडेर तक आती है और फिर डरकर चली जाती है। कुछ दिनों तक यह सिलसिला चलता रहा।

सीमा ने हाथ की मुट्ठी खोल दी। खाना खिड़की की मुंडेर पर बिखर गया। अचानक उसने देखा, धीरे-धीरे गिलहरी आ रही है, मानो वह अपने विश्वास पाना चाहती है। थोड़ी देर बाद उसने पंजे में खाना दबाकर खाना शुरू किया। सीमा का मन मानो, ख़ुशी के हिलोरें ले रहा था ।

अब तो यह नित्य का नियम हो गया। गिलहरी रोज आती और उसके हाथ से छूटा हुआ खाना खाती। इस तरह एक अनकहा सा नाता उन दोनों के बीच कायम हो गया। सीमा को पक्का विश्वास था कि गिलहरी से अब उसकी दोस्ती कभी नहीं छूटने वाली।

शीतऋतु के आरंभ होने के संकेत प्रकृति दे रही थी। तभी एक दिन उसने अपने पिता को मां से करते सुना कि बगीचे के कुछ वृक्षों को थोड़ा-थोड़ा कटवाना होगा क्योंकि पेड़ों की ऊंचाई ज्यादा होने की वजह से सर्दियों में गुनगुनी धूप का आनंद नहीं ले पाएंगे।

सीमा की मां ने कहा, "ठीक है जैसा आपको उचित लगे आप करें।"

तभी सीमा ने पापा से सवाल किया "पापा, आप कौन से पेड़ कटवाने वाले हैं ?"

पापा ने जवाब दिया, "बेटा, बगीचे में जो ऊंचे वृक्ष हो गए हैं, उनकी शाखाओं को थोड़ा सा कटवाना होगा।"

यह सुनते ही सीमा एकदम उदास हो गई, "ओह! वहीं से तो मेरी गिलहरी आती है। इसका मतलब आप पेड़ कटवा देंगे, तो मेरी इकलौती दोस्त भी नहीं रहेगी ?" सीमा की आंखों में उदासी और डर के मिले-जुले भाग समा गए।

पापा ने जवाब दिया, "नहीं बेटा, ऊंचाई पर जो पेड़ की पतली शाखाएं हैं, बस उन्हीं को कटवाया जाएगा।"

इतना आश्वासन पाकर भी सीमा को मानो संतुष्टि नहीं हुई। वह बेचैन

सी हो गई। वह गुमसुम सी रहने लगी थी और अचानक उसे रात में तेज बुखार ने आ घेरा ।

मम्मी-पापा दोनों चिंतित हो गए। अचानक सीमा को क्या हो गया है ?

रात को बुखार बढ़ता ही जा रहा था। मम्मी-पापा दोनों उसके माथे पर ठंडे पानी की पट्टियां रखने लगे। सीमा नींद में बड़बड़ा रही थी, "नहीं-नहीं, पेड़ को मत काटिए। मेरी गिलहरी का घर उजड़ जाएगा।"

सीमा के माथे पर हाथ फेरते हुए पापा ने उसको दुलारते हुए विश्वास दिलाया कि ऐसा बिल्कुल भी नहीं होने देंगे।

आश्वासन पाते ही सीमा निश्चिंत हुई और उसका बुखार भी उतरने लगा।

एक दिन पापा किसी मजदूर को बुला लाए और सख्त हिदायत दी कि पेड़ों को इस तरह सावधानीपूर्वक काटे कि घनी शाखाओं वाले हिस्सों को ना छेड़ा जाए। जिससे किसी पक्षी का घोंसला न टूटे।

उस मजदूर ने बड़ी सावधानी पूर्वक छोटी-छोटी डालियों को काटना शुरू कर दिया

अगले दिन रोज की तरह सीमा हाथ में खाना लेकर गिलहरी का इंतजार करने लगी। बड़ी देर तक वह बैठी रही, शायद कहीं गिलहरी दिख जाए और उसके पास आए। जब गिलहरी नहीं आई, तो सीमा मायूस हो अंदर जाने के लिए उठने लगी। तभी उसने देखा, पेड़ की पत्तियों में सनसनाहट की आवाज हुई। उसमें से निकलकर दौड़ती-भागती हुई गिलहरी खिड़की की मुंडेर पर आई

सीमा की ख़ुशी का पारावार न था। उसने मुट्ठी खोल खाना नीचे गिरा दिया और रोज की तरह गिलहरी पंजे में उठाकर खाने लगी। ✪

अपने लेखक को जानिए

विनीता मोटलानी : हिंदी एवं सिंधी की लेखिका हूं। दो सिंधी पुस्तकें प्रकाशित हैं। एक लघुकथा संग्रह व दूसरी कहानी संग्रह। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में लेख, कविताएं कहानियां हास्य-व्यंग्य एवं नाटक प्रकाशित। कुछ प्रतियोगिताओं में इनाम हासिल।

वेस्ट का बेस्ट उपयोग

दादी सधे हाथों से निशाना साधकर दीवार पर कंडे थाप रही थीं। इतना सटीक निशाना देख प्रतीक को हैरानी हुई, "उसने कहा, "दादी आप तो सांड की आंख वाली दादी की तरह शार्प शूटर हो।"

दादी उसकी बात सुनकर मुसकराने लगीं। वे बोलीं, "बेटा, यह बरसों के अभ्यास का फल है। अभ्यास करने और सीखने से कोई भी काम कुशलता के साथ किया जा सकता है।"

प्रतीक ने कभी गांव नहीं देखा था। इसलिए 7 दिनों के लिए और दादा-दादी के पास आ गया था। गांव में कुदरत के बीच उसे रोज कुछ न कुछ नया और अच्छा देखने को मिल जाता था।

आज वह बाहर चबूतरे पर बैठा, तो दादी को गाय के गोबर से कंडे बनाते देखा। दादाजी भी वहीं बैठ कर अखबार पढ़ रहे थे। उसने दादी से पूछा, "अच्छा दादी, यह बताओ कि गाय के गोबर से तो हम कंडे बना लेते हैं जिनका उपयोग ईंधन के रूप में भी हो जाता है या यज्ञ हवन में भी इनका उपयोग होता है। गोमूत्र भी पवित्र माना जाता है और इसके औषधीय गुण भी हैं। गोबर से कच्चे आंगन की लिपाई भी होती है। केंचुए भी अच्छा उर्वरक तैयार कर लेते हैं। लेकिन क्या दूसरे भी ऐसे पशु पक्षी हैं जिनके मल मूत्र का कोई उपयोग हो सकता हो या कोई विशेषता हो?"

प्रतीक की बात का जवाब दादा जी ने दिया। वह बोले, "हां, बिल्कुल है। ऐसे बहुत सारे पशु पक्षी हैं, जिनके मल मूत्र का उपयोग न सिर्फ दूसरों के लिए, बल्कि खुद उनके लिए भी होता है। हाथी और ऊंट की लीद से कागज बनता है।"

प्रतीक को पता था कि दादाजी रिटायर्ड प्रोफेसर हैं और उन्हें हर चीज की गहरी जानकारी है।

चित्र : सुशील दोषी

उसने कहा, "दादा जी, यह तो हुई सामान्य बात। अब आप मुझे इस विषय में कुछ हटकर और अनूठी बातें बताएं। ताकि मैं भी अपने दोस्तों को बताकर अपना इंप्रेशन जमा सकूं।"

दादाजी ठहाका लगाकर हंस पड़े। बोले, "जरूर! तुम गौर से सुनो और चाहो, तो हमारी बातचीत अपने स्मार्टफोन में रेकॉर्ड भी कर लो, ताकि कुछ भूल जाओ तो दोबारा सुन सको।"

"हां यह ठीक रहेगा। प्रतीक ने स्मार्टफोन से रेकॉर्डिंग शुरू करते हुए कहा।

दादा जी बोले, "बेटा, जानवरों के मल मूत्र पर अध्ययन की एक खास शाखा है, जिसे स्केटोलॉजी कहते हैं। व्हेल मछली का मल महासागरों में फर्टिलाइजर का काम करता है। तंबाकी मछलियां समुद्र में पोलिनेटर की भूमिका निभाती हैं। वे समुद्र की सतह पर पौधों के बीज खाती हैं और जो बीज पचते नहीं, उनको कहीं दूर जाकर मल के रूप में बाहर निकाल देती हैं। इससे समुद्र का इको सिस्टम इंप्रूव होता है। हवाई द्वीप के सी बीच पर जो खूबसूरत सफेद बालू फैली हुई है और जिसको निहारना हमें खूब भाता है, उसमें एक बड़ा हिस्सा समुद्र में पाई जाने वाली पैरट फिश के वेस्ट का होता है। इन रंग -बिरंगी खूबसूरत पैरट फिश के पेट नहीं होता। ये कोरल रीफ पर जमी काई कुतर कुतरकर खाती हैं। इससे कोरल रीफ का कुछ हिस्सा जो कैल्शियम कार्बोनेट के रूप में होता है, इनकी आंतों में जमा हो जाता है। उसे ये एक प्रकार से पीस डालती हैं और बादलों की तरह बाहर निकालती हैं। तुम्हें यह जानकर ताज्जुब होगा कि बड़ी पैरट फिश किसी सेंड फैक्ट्री जैसी होती है और यह साल में 840 पाउंड यानी करीब 380 किलो तक बालू का उत्पादन कर सकती है।"

प्रतीक गौर से दादाजी की बात सुन रहा था। उन्होंने आगे बताया, "कई बार तुम सोचते होगे कि गिद्ध मानव या दूसरे जानवरों की सड़ी गली लाश खाकर कैसे पचा लेते हैं? एक-दो दिन पुरानी सी वस्तु पर ही लाखों बैक्टीरिया इकट्ठे हो सकते हैं तो इन पर ना जाने कितने बैक्टीरिया होते होंगे। दरअसल उनके पेट में मौजूद एसिड इंसान के पेट में मौजूद एसिड से 10 से 100 गुना तक ज्यादा ताकतवर होता है। इसलिए कीटाणु उनके पेट में जाते ही मर जाते हैं। लेकिन इस दौरान गिद्ध के पैर में जो बैक्टीरिया या दूसरे हानिकारक जीव चिपक जाते हैं उन से मुक्ति पाने और खुद को सैनिटाइज करने के लिए ये पैरों पर अपने मूत्र और बीट यानी मल का प्रयोग करते हैं। ये एक प्रकार से एंटीसेप्टिक और डिसइंफेक्टेंट का काम करते हैं।"

"दादा जी, आपके पास तो अद्भुत जानकारियों का खजाना है। मैं सच में सोचता था कि जानवर नाली का पानी पी लेते हैं, मरे हुए जीव-जंतु या कीड़े-मकौड़े खा लेते हैं, हमारा दिया हुआ बासी भोजन भी खा लेते हैं तो वे बीमार क्यों नहीं पड़ते?" प्रतीक ने हैरानी से कहा।

दादा जी बोले, "अब तुम कुछ और मजेदार बातें सुनो। यह तो तुम्हें भी पता होगा कि ज्यादातर जानवरों की बीट, गोबर, लीद या मल को देखकर तुम आसानी से पहचान सकते हो कि यह किसका वेस्ट हो सकता है। लेकिन दुनिया में एक अद्भुत प्राणी है, जिसका मल क्यूब के आकार का होता है। वैज्ञानिक भी अब तक उलझन में हैं कि आखिर ऑस्ट्रेलिया और तस्मानिया में रहने वाला वोम्बैट (धानी मृक्षक) नामक प्राणी बिल्डिंग ब्लॉक्स के रूप में मल त्याग कैसे करता है। वोम्बैट इनके द्वारा अपनी बाउंड्री भी बना लेता है। वैज्ञानिकों का कहना मानना है कि इसकी आंतों की अनूठी संरचना के कारण ऐसा होता है। वैसे कुत्ते, शेर, चूहे व अन्य कई प्राणी अपने पेशाब की गंध से अपना क्षेत्र पहचानने में भी माहिर होते हैं।

एक और मजेदार बात सुनो। पेंगुइन जब भी हलका होने की कोशिश कर रहा हो, तो उससे दूर रहना चाहिए। यह अपनी गुआनो (यानी पेंगुइन पूप) को 4 फीट दूर तक फेंक सकते हैं। खुद को साफ रखने और बैक्टीरिया से दूर रखने के लिए ये ऐसा करते हैं। कुछ पेंगुइन प्रजातियों के द्वारा त्यागा गया मल गुलाबी रंग का होता है। ऐसा इनके विशेष भोजन के कारण होता है।"

दादा जी द्वारा दी गई जानकारी पर दादी को भी हैरानी हुई। प्रतीक ने इस महत्वपूर्ण रिकॉर्डिंग को ना सिर्फ सेव कर लिया बल्कि अपने स्कूल के स्टूडेंट-टीचर व्हाट्सएप ग्रुप पर शेयर भी किया। हर कोई इस जानकारी की तारीफ कर रहा था और प्रतीक के साथ उसके दादाजी की सराहना भी कर रहा था। ✪

अपने लेखक को जानिए

शिखर चंद जैन : तीन मोटिवेशनल पुस्तकों, एक बालकथा संग्रह,एक लघुकथा संग्रह के लेखक, बाल कहानियों, बालोपयोगी लेख, स्तंभकार, व्यक्तित्व विकास व मोटिवेशनल आर्टिकल्स के नियमित लेखक। बीते 33 वर्षों से राष्ट्रीय हिंदी दैनिकों व पत्रिकाओं में नियमित लेखन।

अपने लेखक को जानिए

डॉ. फहीम अहमद : रुदौली, फैजाबाद में जन्म। डिग्री कालेज में हिंदी शिक्षक। बाल काव्य में विशेष रुचि। 26 वर्षों से पत्र-पत्रिकाओं में नियमित प्रकाशन। दो पुस्तकें प्रकाशित। अनेक संस्थाओं से सम्मानित।

पतंग लहराए

चिड़िया-सी पतंग लहराए,
फर -फर -फर।

उंगली थाम डोर की चल दी,
खुले गगन की ओर।
साथ हवा के नाच दिखाए,
जैसे कोई मोर।

आसमान को गीत सुनाए ,
फर -फर -फर।

मुड़ती जाती उधर हवा का,
मिलता जिधर बहाव।
बादल की नदिया में गोते,
लगा रही ज्यों नाव।

हिचकोले खा बढ़ती जाए,
फर -फर -फर।

नन्ही परी सरीखी उड़ती,
खुशियां लेकर साथ।
इंद्रधनुष के गांव पहुंचकर,
पकड़े उसका हाथ।

हंस हंसकर उससे बतियाए,
फर -फर -फर।

आशाएं आकाश न छूतीं

अपने लेखक को जानिए

शिखा सक्सेना : स्कूल में प्राइमरी हिंदी अध्यापिका। लिखने का बहुत शौक है। समय-समय पर रचनाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं, जिनके लिए अनेकों बार पुरस्कृत। बेस्ट वुमन टीचर का अवार्ड भी मिला।

यदि जीवन में आस न होती
आशाएं आकाश न छूतीं।

राहों की ठोकर ने सबको
पीड़ाओं का बोध कराया।
मज़बूत इरादों ने हमको
मंजिल का है पता बताया।

मंजिल मिलने पर हंसने से
पूर्व हमें रोना पड़ता है।
थोड़ा सा पाने के पीछे
थोड़ा सा खोना पड़ता है।

यदि जीवन में आस न होती
आशाएं आकाश न छूतीं।

गीत न बनते मीत कभी भी
यदि हृदय में फांस न होती
असफलता न बनती सफलता कभी
यदि नित नई तलाश न होती।

स्नेह ने ही संवेदन का
गहराई से रूप दिखाया।
तम में ज्योतिर्मय होने का
सुंदर सा है उपाय बताया।

यदि जीवन में आस न होती
आशाएं आकाश न छूतीं।

हमसे नाम है जेब्रा क्रासिंग

अफ्रीका वन्य प्राणियों का देश है। यहां के कुछ जानवर इतने अनोखे हैं कि दूसरे देशों में नहीं मिलते। ऐसा ही एक प्यारा और शानदार जानवर मैं हूं।

मेरा शारीरिक गठन मुझे गधे और घोड़ों के पास ले आता है। हमारी प्रजाति तो एक है, पर शारीरिक बनावट हमें एक-दूसरे से अलग करती है। मेरी सबसे बड़ी खासियत है कि मेरे शरीर पर केवल दो ही रंग होते हैं-सफेद और काला। यह हमें अपने वर्ग के दूसरे जानवरों से बिल्कुल अलग रूप देता है।

जिस तरह दो मनुष्यों के फिंगर प्रिंट्स आपस में नहीं मिलते, उसी तरह हम जेब्रा के शरीर की धारियां भी आपस में कभी नहीं मिलतीं। हमारे रंगों के आधार पर ही सड़कों पर लोगों के पैदल पार करने वालों के लिए बनी पट्टी को जेब्रा क्रॉसिंग नाम दिया गया है। इस पट्टी का रंग भी सफेद और काला होता है।

हमारा रंग हमारी जान भी बचाता है। जब हम एक साथ खड़े होते हैं और विचरते हुए हिलते हैं, तो किसी खास पर नजर टिकाना संभव नहीं होता। इससे शिकारी भी भ्रम में पड़ जाता है और वह अनुमान के आधार पर ही हमला कर पाता है। हाल ही में हुई एक खोज से पता चला है कि हमारी सफेद-काली पट्टी खून चूसने वाली मक्खियों को भी हमसे दूर रखती है।

हम मुख्य रूप से अफ्रीकी जानवर हैं। हमारे वंशज 40 लाख वर्ष पहले के घोड़े माने जाते हैं। हमारी मुख्य रूप से तीन प्रजातियां हैं। प्लेन जेब्रा सबसे आम होता है। यह मुख्य रूप से पूर्वी और पश्चिमी अफ्रीका में पाया जाता है। माउंटेन जेब्रा एक खास दुर्लभ प्रजाति है और दक्षिण-पश्चिम अफ्रीका में मिलता है। इसकी पहचान है कि इसकी धारियां छोटी होती हैं। ग्रेवी जेब्रा सबसे भारी-भरकम होता है। यह मुख्य रूप से इथोपिया और केन्या में पाया जाता है।

हम मैमल है और पूरी तरह शाकाहारी होते हैं। घास हमारा प्रिय भोजन है, पर मिलने पर झाड़ियों और पत्तों को खाने से भी पीछे नहीं हटते। एक जेब्रा की औसत आयु 25 वर्ष होती है और पूंछ सहित लंबाई

छह से साढे.आठ फुट तक होती है। हमारा वजन 250 से 450 किलोग्राम तक होता है। हमारे नर जेब्रा का वजन मादा से ज्यादा होता है।

हमारी नजरें बहुत तेज होती हैं। हम दूर तक देख पाते हैं। हम रात को भी देख सकते हैं, पर बहुत साफ नहीं। हम शेर की तरह कलर ब्लाइंड नहीं होते। हमें रंगों की पहचान है। हमारी सूंघने व सुनने की शक्ति बहुत तेज होती है। हमारी यह खासियत हमारी जान बचाने में काम आती है। हम दूर से ही खतरा भांप लेते हैं और खास तरह से चिल्लाने लगते हैं। इससे बाकी जेब्रा भी सतर्क हो जाते हैं।

हमारा परिवार बहुत तेजी से नहीं बढ़ता। मादा जेब्रा साल में एक बार केवल एक ही बच्चे को जन्म देती है। घोड़ों की तरह हमारे बच्चे भी पैदा होते ही थोड़ी देर में उठ खड़े होते हैं और चलने लगते हैं। जन्म के समय हमारे बच्चे का रंग हलका भूरा और सफेद होता है, जो बाद में काले और सफेद रंग में बदल जाता है। बच्चे की देखभाल की जिम्मेदारी मां की ही होती है। बच्चा तब तक मां के साथ झुंड में रहता है, जब तक वह अपनी देखभाल खुद करने लायक नहीं हो जाता।

हम भी एक सामाजिक प्राणी हैं। हमारे छोटे-छोटे अपने परिवार होते हैं। इस परिवार में नर-मादा और बच्चे शामिल होते हैं। यह परिवार दूसरे परिवारों के साथ मिलकर एक बड़ा समूह बनाता है। एक समूह में सैकड़ों की संख्या में जेब्रा होते हैं और सभी एक साथ चलते हैं। पर समूह में भी हम अपने परिवार के साथ ही रहते हैं। यदि कोई झुंड पर हमला करता है, तो हमारे परिवार के सदस्य अपने लोगों को छोड़कर नहीं भागते। शिकार का परिवार उसे बचाने का प्रयास करता है। भले ही हमें सफलता न मिले। दुश्मन पर हमला करने के लिए हम दुलत्ती चलाने के अलावा काटने से भी नहीं चूकते।

हमें कई बार पालतू प्राणी बनाने का प्रयास किया जा चुका है। कुछ लोग अपने निजी कार्यों के लिए हमें प्रशिक्षित करने में सफल भी रहे। पर बाद में मान लिया गया कि घोड़ों और गधों की तरह हमें पालतू बनाना आसान नहीं है।

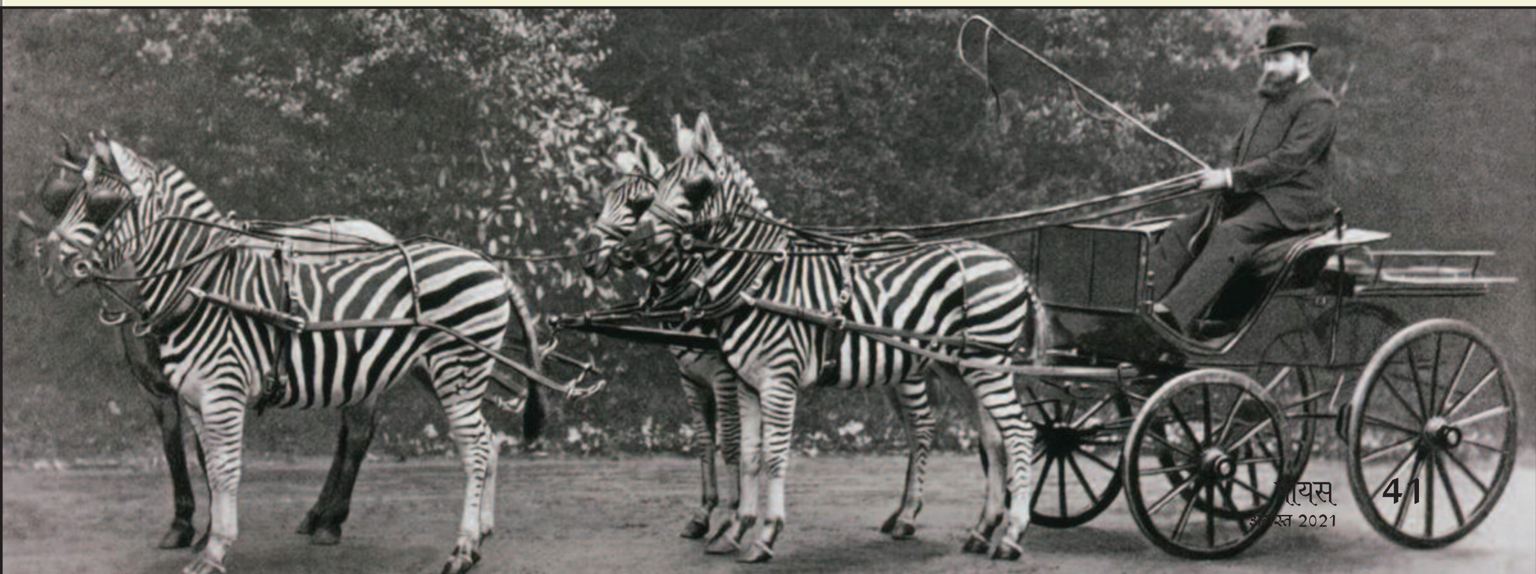

कोरोना को चुनौती देता टोक्यो ओलंपिक

खेलों का महाकुंभ यानी ओलंपिक हर चार साल पर होता है लेकिन कोरोना वायरस महामारी के कारण 2020 में इसका आयोजन नहीं हो सका। अब साल भर की देरी से जापान के टोक्यो में इसका आयोजन होने जा रहा है. इसकी शुरुआत 23 जुलाई से होगी और आठ अगस्त को इसका समापन हो जाएगा. जापान को 2020 में कोरोना वायरस महामारी के चलते इस आयोजन को लेकर अपनी तैयारियों को स्थगित करनी पड़ी थीं और 2021 में भी इसके आयोजन पर आशंकाओं के बादल छा गए थे। लेकिन अब ये खेल बंद स्टेडियम में बिना दर्शकों के होंगे। यह खेल तो सन 2021 में हो रहे हैं, पर कहलाएंगे टोक्यो ओलंपिक 2020 ही।

एशिया महाद्वीप के पूर्व में स्थित देश जापान चार बड़े और अनेक छोटे द्वीपों का एक समूह है। यह पश्चिम में जापान सागर से घिरा है और उत्तर में ओखोटस्क सागर से लेकर पूर्वी चीन सागर तक और दक्षिण में ताइवान तक फैला हुआ है।

टोक्यो जापान की राजधानी और सबसे बड़ा नगर है। यह जापान के होन्शू द्वीप पर बसा हुआ है और इसकी जनसंख्या लगभग 86 लाख है, जबकि टोक्यो के उपनगरीय क्षेत्रों को मिलाकर यहां अनुमानित 3.7 करोड़ लोग रहते हैं जो इसे दुनिया का सबसे अधिक जनसंख्या वाला महानगरीय क्षेत्र बनाता है। टोक्यो लगभग 80 किमी के क्षेत्र में फैला हुआ है और यह क्षेत्रफल की दृष्टि से भी विश्व का सबसे बड़ा नगरीय क्षेत्र है।

शुभंकर

टोक्यो ग्रीष्म कालीन ओलंपिक खेलों के शुभंकर को 'मिराइतोवा' और पैरालंपिक के शुभंकर को 'सोमाइटी' नाम दिया गया है। 'मिराइतोवा' को खास जापानी इंडिगो ब्लू रंग का पैटर्न दिया गया है। जापानी शब्द मिराइतोवा में 'मिराइ' का अर्थ 'भविष्य' और तोवा का 'अनंत काल' होता है.

इस बार के टोक्यो ओलंपिक में क्या है खास?

इस बार ओलंपिक में 5 नए खेल जोड़े गए हैं। ये हैं, सर्फिंग, स्केटबोर्डिंग, स्पोर्ट्स क्लाइंबिंग, कराटे और बेसबॉल।

यही नहीं, बेसबॉल (पुरुष) और सॉफ्टबॉल (महिला) की ओलंपिक में वापसी हो रही है। इनके अलावा-

1. टेबल टेनिस : 2020 टोक्यो ओलंपिक में मिक्स्ड डबल्स को जोड़ा गया है।

2. जूडो : जूडो खेल 1964 में ओलंपिक में आ गया था, लेकिन इस बार मिक्स्ड टीम इवेंट है।

3. स्वीमिंग : इस साल स्वीमिंग में एक नया बदलाव लाया गया है। 800 मीटर की रेस को पुरुषों के इवेंट में शामिल किया गया है। जबकि 1,500 फ्रीस्टाइल इवेंट महिला प्रतियोगिता में जोड़ी गई है।

4. वॉटर पोलो : रियो ओलंपिक में वॉटर पोलो में 8 महिला टीमों ने भाग लिया था। इस बार महिलाओं की दो नई टीमों के साथ यह संख्या 10 होगी।

5. कयाक : 2020 टोक्यो ओलंपिक में कयाक खेल में भी महिलाओं के 3 इवेंट बढ़ाकर, पुरुष खेलों से 3 इवेंट कम कर दिए गए है। महिलाओं के इवेंट में कयाक सिंगल 200 मीटर, कयाक डबल्स 500 मीटर इवेंट को जोड़ा गया है।

6. रोइंग : रोइंग खेल में पुरुषों के हलके चार इवेंट को 2020 ओलंपिक से हटा दिया गया है जबकि महिलाओं के चार इवेंट्स जोड़े गए हैं। 1966 के बाद ओलंपिक रोइंग कार्यक्रम में यह पहला बदलाव है।

7. आर्चरी : 1972 से शामिल इस खेल में इस बार मिक्स्ड टीम इवेंट भी शामिल किया गया है.

8. बॉक्सिंग : महिला खिलाड़ियों की संख्या को तीन से बढ़ाकर पांच कर दिया गया है जबकि पुरुष खिलाड़ियों की संख्या 10 से आठ कर दी गई है। यह फैसला लैंगिक समानता को ध्यान में रखते हुए किया गया है। हालांकि 'सॉफ्टबॉल' खेल प्रतियोगिता उद्घाटन समारोह से दो दिन पहले यानी 21 जुलाई को ही फुकुशिमा में शुरू हो जाएगी।

ओलंपिक में इस बार 33 खेलों में 339 मेडल के लिए मुकाबले होंगे। पहला पदक समारोह 24 जुलाई को होगा।

जापान में ओलंपिक

जापान में पहले भी तीन बार 1964 में समर और 1972 में (सपोरो) एवं 1988 (नागानो) में विंटर ओलंपिक हो चुके है।

अपने लेखक को जानिए

संजय वर्मा: स्वतंत्र खेलकूद एवं विज्ञान पत्रकार, पुस्तक लेखक एवं खेल विशिष्ट वार्ताकार । करीब 25 वर्षो से आकाशवाणी से जुडे हैं। पत्रकारिता एवं संचार (खेलकूद एवं विज्ञान लेखन) के कारण तीन राष्ट्रीय पुरस्कारों सहित कई सम्मान प्रदान किये जा चुके है।

टोक्यो ओलंपिक में भारतीय खिलाड़ी

2020 ओलंपिक में 117 से ज्यादा भारतीय खिलाड़ी भाग लेंगे। टीम इवेंट हाकी में पुरुष और महिला टीमों में 16-16 खिलाड़ियों का दल है। इसके अलावा तीरंदाजी में 4 तीरंदाज, एथलेटिक्स में 18 पुरुष और महिला खिलाड़ी, बैडमिंटन में पी.वी. सिंधु के साथ तीन पुरुष खिलाड़ी, बॉक्सिंग में अब तक 9 बॉक्सर (मेरी कॉम के अलावा 3 महिला और 5 पुरुष) क्वालिफाई कर चुके हैं। घुड़सवारी में फौद मिर्जा अकेले चुनौती पेश करेंगे। फेंसिंग यानी तलवारबाजी में भवानी देवी अकेले जौहर दिखाएंगी। गोल्फ में दो पुरुष और एक महिला गोल्फर ने क्वालिफाई किया है। जिम्नास्टिक में प्रनति नायक अकेली चुनौती पेश करने जा रही हैं। जुडो मे भी एक मात्र खिलाड़ी एक महिला सुशीला देवी लिकमाबम हैं। रोविंग में अर्जुन जट और अरविंद सिंह, तो सेलिंग में नेथरा कुमानन के साथ दो पुरुष खिलाड़ी भी हैं। निशानेबाजी में 7 महिला और 8 पुरुष निशानेबाज हैं। तैराकी में एक महिला और दो पुरुष तैराक हैं। टेबल टेनिस में दो-दो महिला और पुरुष खिलाड़ी हैं। टेनिस में कोई पुरुष खिलाड़ी नहीं है। केवल सानिया मिर्जा ही महिला डबल्स के लिए क्वालिफाई कर पाई थीं। उनके साथ डबल्स टीम बनाने के लिए अंकिता रैना को भी ओलंपिक में जाने का मौका मिल गया। वेटलिफ्टिंग में अकेली खिलाड़ी भी एक महिला मीराबाई चानू हैं। कुश्ती में चार महिला और तीन पुरुष खिलाड़ी हैं। कहने को तात्पर्य यह है कि इस बार महिलाओं ने बाजी मारी है।

23 जुलाई को उद्घाटन समारोह में भारतीय दल का ध्वजवाहक बनने का सम्मान हॉकी टीम के कप्तान मनप्रीत सिंह और 6 बार की विश्व चैंपियन बॉक्सर मैरी कॉम को दिया गया है। 8 अगस्त को समापन समारोह में पहलवान बजरंग पूनिया ध्वजवाहक होंगे।

खास-खास

- टोक्यो ओलंपिक में 206 देश भाग ले रहे हैं।
- इस ओलंपिक में अनुमानित 11091 खिलाड़ी भाग लेंगे।
- अधिकारियों की संख्या लगभग 5000 होगी।
- कुल 33 खेलों में 339 तरह की स्पर्धाएं होंगी।
- यहां के खेल गांव में 21 इमारत में 5000 कमरे हैं जिनमें खिलाड़ी, कोच और अधिकारी ठहरेंगे।
- डायनिंग हॉल में ठहरने वालों के लिए 700 तरह का खाना उपलब्ध होगा।
- करोना गाइडलाइंस के कारण खिलाड़ी खेल से 5 दिन पहले आएंगे और अपनी स्पर्धा खत्म होने के 2 दिन के अंदर चले जाएंगे।
- अगला ओलंपिक खेल 2024 में पेरिस में होगा।

खेल गांव

ओलंपिक का इतिहास

सदियों से खेलों का आयोजन हो रहा है। पहले पड़ोसी देश आपस में खेलों का आयोजन करते थे। पर इनमें खेल भावना कम और खुद को श्रेष्ठ साबित करने का भाव अधिक होता था। पर संगठित तरीके से खेलों का आयोजन पहली बार यूनान में ही हुआ।

ओलंपिक खेलों का आयोजन पहली बार ग्रीस (यूनान) के ओलंपिया नामक स्थान पर 776 वर्ष ईसा पूर्व हुआ। तब भी यह खेल हर चार वर्षों बाद कराया जाता था। ओलंपिया में बने लकड़ी के स्टेडियम में खेल आयोजित हुए। ग्रीक देवता ज्यूस को समर्पित इन खेलों के लिए वहां के सभी देश इकट्ठे होते थे। चाहे उनमें युद्ध चल रहा हो, पर जैसे ही खेल के आयोजन का समय होता था, सारे देश युद्ध विराम लागू कर खेल के लिए आ जाते थे। पहले ओलंपिक में केवल दौड़ का आयोजन हुआ था फिर बाद में पेंथालन और कुश्ती को इनमें जोड़ा गया। खेल के विजेताओं को देवता ज्यूस के एक मंदिर के पीछे उगे पवित्र जैतून के एक पेड़ की पत्तियों से बना ताज पहनाया जाता था। मान्यता थी कि इस पवित्र पेड़ को खुद हरक्यूलिस ने लगाया था। हरक्यूलिस को ही ओलंपिक खेलों को शुरू कराने का श्रेय दिया जाता है।

इन खेलों का आयोजन 776 वर्ष ईसा पूर्व से वर्ष 393 तक हुए। इस खेल को बंद कराया थ्योडियस ने।

बीच में कई सदियों तक ओलंपिक खेल बंद रहे। इस खेल को दुबारा शुरू करने का श्रेय फ्रांस के बैरोन पियरे द कोबर्तीन को जाता है। उन्हीं के प्रयास से 1896 में फिर से ओलंपिक खेलों की शुरुआत हुई। यूनान की सरकार के पास इतने पैसे नहीं थे कि स्टेडियम का निर्माण करवा सकती। अतः एक व्यवसायी जोर्जियस एवेरोफ ने दान देकर स्टेडियम का निर्माण करवाया और उसमें खेलों का आयोजन हुआ। उन खेलों का ज्यादा प्रचार नहीं हुआ था अतः बहुत कम देशों ने इसमें भाग लिया। इसीलिए कोई भी खिलाड़ी आकर इस ओलंपिक में भाग ले सकता था।

अगला ओलंपिक खेल 1900 में पेरिस में आयोजित हुआ।

इसे वहां के एक विश्व मेले के साथ जोड़कर आयोजित किया गया था। इस कारण यह ओलंपिक पूरे पांच महीने तक चला। इस ओलंपिक की खास बात यह थी कि पहली बार

महिलाओं ने खेलों में भाग लिया। ब्रिटेन की चार्लेट कूपर ने टेनिस में महिलाओं का प्रथम पदक जीता।

1904 के सेंट लूसिया ओलंपिक में खास बात यह थी कि पहली बार विजेताओं में स्वर्ण, रजत और कांस्य पदक बांटे गए।

इसके बाद ओलंपिक का आयोजन होता रहा पर पहली बार 1916 में इसमें व्यवधान आया। प्रथम विश्वयुद्ध के कारण बर्लिन में होने वाले ओलंपिक को रद्द करना पड़ा और अगला आयोजन लंदन में 1920 में हुआ। 1928 के एम्सटर्डम ओलंपिक का उल्लेख जरूरी है क्योंकि यहां से भारतीय हाकी का स्वर्णिम अध्याय शुरू हुआ और 1956 तक भारत ने लगातार छह हॉकी स्वर्ण-पदक जीते।

इस बीच द्वितीय विश्व युद्ध के कारण भी सन 1940 व 1944 के ओलंपिक खेल नहीं हुए। पर फैसला किया गया कि इनकी गिनती ओलंपिक खेलक्रम में की जाए। इसी लिए टोक्यो में होने जा रहा ओलंपिक वैसे तो आयोजित ओलंपिक के रूप में केवल 29वां है पर गिनती के हिसाब से इसे 32वां ओलंपिक कहा जा रहा है।

इस बीच 1964 में पहली बार ओलंपिक को एशिया में लाया गया और टोक्यो को इसे आयोजित करने का मौका मिला। इसके बाद से द. कोरिया और चीन को इसे आयोजित करने का अवसर मिला। अब फिर टोक्यो में यह आयोजन हो रहा है।

1972 के म्यूनिख ओलंपिक को खूनी ओलंपिक भी कहा जाता है। इस ओलंपिक में पहली बार ओलंपिक भावना के विपरीत जाकर फिलस्तीनी आतंकवादियों ने ओलंपिक गांव में घुसकर 11 इसराइली खिलाड़ियों को मारा था।

इसके बाद ओलंपिक पर बहिष्कार की छाया पड़ने लगी। 1976 के मोंट्रियल ओलंपिक का अफ्रीकी देशों ने बहिष्कार किया। वे न्यूजीलैंड की रग्बी टीम के रंगभेद समर्थक द. अफ्रीका का दौरा करने से नाराज थे। इसी तरह 1980 के मास्को ओलंपिक का अमेरिका के कहने पर बहुत से उसके समर्थक देशों ने बहिष्कार कर दिया। रूस द्वारा अफगानिस्तान पर हमले के विरोध में यह कदम उठाया गया। इसके जवाब में 1984 के लांस ओलंपिक का रूस सहित उसके समर्थक देशों ने बहिष्कार किया। इसके बाद से ओलंपिक का आयोजन बिना किसी विवाद के होता आ रहा है।

आधुनिक ओलंपिक

क्रम	वर्ष	शहर	देश
1.	1896	एथेंस	यूनान
2.	1900	पेरिस	फ्रांस
3.	1904	सेंट लुइस	अमेरिका
4.	1908	लंदन	इंग्लैंड
5.	1912	स्टाकहोम	स्वीडन
6.	1916	आयोजन नहीं हुआ	
7.	1920	एंटवर्प	बेल्जियम
8.	1924	पेरिस	फ्रांस
9.	1928	एम्सटर्डम	हॉलैंड
10.	1932	लास एंजिलस	अमेरिका
11.	1936	बर्लिन	जर्मनी
12.	1940	आयोजन नहीं हुआ	
13.	1944	आयोजन नहीं हुआ	
14.	1948	लंदन	इंग्लैंड
15.	1952	हेलसिंकी	फिनलैंड
16.	1956	मेलबोर्न	ऑस्ट्रेलिया
17.	1960	रोम	इटली
18.	1964	टोक्यो	जापान
19.	1968	मैक्सिको सिटी	मैक्सिको
20.	1972	म्यूनिख	प. जर्मनी
21.	1976	मांट्रियल	कनाडा
22.	1980	मास्को	सोवियत संघ
23.	1984	लास एंजिलस	अमेरिका
24.	1988	सिओल	द. कोरिया
25.	1992	बार्सिलोना	स्पेन
26.	1996	अटलांटा	अमेरिका
27.	2000	सिडनी	ऑस्ट्रेलिया
28.	2004	एथेंस	यूनान
29.	2008	बीजिंग	चीन
30.	2012	लंदन	इंग्लैंड
31.	2016	रियो	ब्राजील
32.	2020	टोक्यो	जापान

ओलंपिक की कुछ रोचक बातें

ओलंपिक खेल कोई देश नहीं, बल्कि उसका एक शहर आयोजित करता है। पर इस खेल को आयोजित करने की दावेदारी एक देश से एक ही शहर कर सकता है। जिस शहर को खेल आयोजित करने की जिम्मेदारी मिलती है, विशेष परिस्थितियों को छोड़कर सारे खेल उसी शहर में आयोजित किए जाते हैं। इसीलिए हम जापान में होने वाले ओलंपिंक खेल को टोक्यो ओलंपिक कहेंगे ना कि जापान ओलंपिक।

✪ 1896 में एथेंस में हुए प्रथम ओलंपिक में केवल 14 देशों ने भाग लिया। 43 प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। इनमें 241 खिलाड़ियों ने भाग लिया। परंतु इनमें एक भी महिला नहीं थी।

✪ पहला ओलंपिक चैंपियन कहलाने का श्रेय अमेरिका के जेम्स कोनोली को मिला। उसने 1896 के एथेंस ओलंपिक में त्रिकूद (ट्रिपल जंप) में जीत हासिल की। उस समय विजेता को चांदी का पदक तथा जैतून की शाखा इनाम में दिया जाता था।

✪ पहली बार महिलाओं ने 1900 में हुए पेरिस ओलंपिक में भाग लिया। महिलाओं में पहली बार पदक जीतने का श्रेय इंग्लैंड के लान टेनिस की खिलाड़ी चारलेट कूपर को मिला।

✪ पेरिस ओलंपिक में ही अमेरिकी खिलाड़ी मेयर प्रिंसटीन लंबीकूद में सबसे आगे था। परंतु उसने फाइनल में भाग लेने से इंकार कर दिया क्योंकि फाइनल का आयोजन रविवार को किया गया था। उन दिनों लोग रविवार को नियम से चर्च जाते थे। उसने इसे धर्म में दखल मानकर खेलने से इंकार कर दिया।

✪ एक बार ओलंपिक में क्रिकेट का खेल भी हुआ था। सन 1900 में हुए पेरिस ओलंपिक में क्रिकेट का फाइनल इंग्लैंड तथा फ्रांस के बीच खेला गया था। इसे इंग्लैंड ने जीता।

✪ पहली बार 1904 के सेंट लुइस ओलंपिक में खिलाड़ियों को स्वर्ण, रजत और कांस्य पदक देने की शुरुआत की गई।

✪ 1896 में एथेंस से शुरू हुआ ओलंपिक सफर 108 वर्ष बाद एथेंस लौटा। इस दौरान केवल तीन बार ओलंपिक खेलों का आयोजन नहीं हो पाया। सन 1916 में प्रथम विश्वयुद्ध के कारण तथा 1940 एवं 1944 में द्वितीय विश्वयुद्ध के कारण ओलंपिक खेल रद्द कर दिए गए।

✪ 1956 का मेलबोर्न ओलंपिक पहला ऐसा ओलंपिक है जो दो देशों बल्कि यूं कहें कि दो महाद्वीपों में आयोजित हुआ। आस्ट्रेलिया में जैविक कानून इतने कठोर हैं कि घुड़सवारी प्रतियोगिता के लिए किसी देश को अपने घोड़े लाने की अनुमति नहीं दी गई। मजबूरी में घुड़सवारी प्रतियोगिताएं स्वीडन के स्टाकहोम शहर में आयोजित की गईं।

✪ टोक्यो में बत्तीसवां ओलंपिक खेल हो रहे हैं। परंतु वास्तव में यह 29वां ओलंपिक होगा। इसका कारण यह है कि ओलंपिक गिनती में वे तीन ओलंपिक भी शामिल हैं, जो आयोजित नहीं हो पाए।

✪ वैसे तो ओलंपिक में पूरे विश्व के देश भाग लेते हैं, परंतु आज तक दक्षिण अमेरिका में केवल एक बार तो अफ्रीका में ओलंपिक खेलों का आयोजन कभी नहीं हुआ। यूरोप में पहला ओलंपिक 1896 में एथेंस में हुआ। उत्तरी अमेरिका को इसे आयोजिक करने का गौरव 1904 में अमेरिकी शहर सेंट लुइस में मिला। ऑस्ट्रलिया महाद्वीप में पहली बार इसका आयोजन मेलबोर्न में 1956 में हुआ। एशियाई देशों में पहली बार जापान को ओलंपिक आयोजन करने का श्रेय तोक्यो में 1964 में मिला। दक्षिण अमेरिका में पहली बार रियो, ब्राजील में 2016 में हुआ। ✪

ओलंपिक में भारत

लिएंडर पेस

कर्णम मल्लेश्वरी

राज्यवर्धन सिंह राठौर

अभिनव बिंद्रा

भारत ने ओलंपिक खेलों में कुछ देर से भाग लेना शुरू किया। आधुनिक ओलंपिक खेलों का आयोजन सन 1896 से शुरू हुआ। परंतु आधिकारिक रूप से भारत ने पहली बार 1920 के एंटवर्प (बेल्जियम) ओलंपिक में भाग लिया। इस ओलंपिक में पांच एथलीट और दो पहलवान भाग लेने गए। भारतीय महिलाओं ने सन 1952 के हेलसिंकी ओलंपिक से हिस्सेदारी शुरू की।

पर कहा जाता है कि पहले कोई खिलाड़ी व्यक्तिगत स्तर पर भी इन खेलों में भाग ले सकता था। सन 1900 के पेरिस ओलंपिक के दिनों में कलकत्ता का नार्मन प्रीचर्ड पेरिस में छुट्टियां मना रहा था। उसने ओलंपिक में भाग लेने के लिए आवेदन किया, तो उसे अनुमति मिल गई। उसने दो सौ मीटर की सीधी और दौ सौ मीटर की ही बाधा दौड़ में भाग लिया। दोनों में उसने दूसरा स्थान प्राप्त कर दो पदक जीते।

अधिकृत रूप से ओलंपिक में भाग लेने के बाद से भारत के हिस्से में शुरु में ज्यादा पदक नहीं आए हैं। पर 21वीं सदी में स्थितियां बदलीं।

भारत ने पहली बार 1928 के एम्सटर्डम ओलंपिक में हाकी प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक जीता। 20 सदी तक ये सारे पदक भारत को केवल चार खेलों, हॉकी, कुश्ती, लान टेनिस और भारोत्तोलन में मिले।

हॉकी : ओलंपिक में भारत को कुछ सम्मान मिला है तो इसका श्रेय हॉकी को है। कुल 11 पदक भारत ने हॉकी में जीते हैं। भारत द्वारा ओलंपिक में आज तक केवल 9 स्वर्ण पदक जीते गए हैं, इनमें से आठ हॉकी में मिले हैं। भारतीय हॉकी टीम ने पहली बार 1928 के एम्सटर्डम ओलंपिक में भाग लिया और स्वर्ण जीता। तब से 1956 के मेलबोर्न ओलंपिक तक

1936 में स्वर्ण पदक विजेता भारतीय हॉकी टीम

लगातार भारत को स्वर्ण-पदक मिला।

अंतिम बार सन 1980 के मास्को ओलंपिक में हाकी के महारथी देशों के बहिष्कार के बीच भारत ने फिर से स्वर्ण-पदक जीता।

फुटबाल : भारत ने कुल तीन बार (1948, 1952 तथा 1956) के ओलंपिक फुटबाल प्रतियोगिता में भाग लिया। भारत का सबसे अच्छा प्रदर्शन 1956 के मेलबोर्न ओलंपिक में रहा। आस्ट्रेलिया को हराकर भारत सेमीफाइनल तक पहुंचा। पर बढ़त लेने के बावजूद भारतीय टीम यूगोस्लाविया से हार गई। इस तरह भारतीय टीम चौथे स्थान पर रही। 1960

नार्मन प्रीचर्ड

के.डी. जाधव

स्वतंत्र भारत में पहला पदक, 1948 की विजेता हॉकी टीम

विजेंदर सिंह

के रोम ओलंपिक में भारत को सफलता नहीं मिली। इस ओलंपिक के बाद से भारत आज तक फुटबाल के लिए ओलंपिक में क्वालिफाई नहीं कर सका।

1952 हेलसिंकी

के.डी. जाधव यानी खाश्बा दिग्विजय जाधव 1952 में ओलंपिक खेलों में भाग लेने हेलसिंकी गए। वहां बेंटमवेट फ्री स्टाइल कुश्ती के 57 किलोग्राम वर्ग में कांस्य पदक जीतकर इतिहास रच दिया। व्यक्तिगत खेलों में भारत के लिए पहली बार पदक जीतने का श्रेय जाधव को ही जाता है।

1996 अटलांटा

भारतीय टेनिस खिलाड़ी 1924 के पेरिस ओलंपिक से लॉन टेनिस में भाग ले रहे थे। परंतु पहली सफलता मिली 1996 के अटलांटा ओलंपिक में। धुरंधर टेनिस खिलाड़ियों के बीच भारत के लिएंडर पेस ने टेनिस में ब्राजीली खिलाड़ी को हराकर भारत के लिए कांस्य पदक जीता।

पर 21वीं सदी आते ही भारत का सितारा चमका और मेडल के लिए तरसने वाले भारत के खिलाड़ी व्यक्तिगत खेलों में भी सफलता पाने लगे।

2000 सिडनी

सिडनी ओलंपिक कर्णम मल्लेश्वरी ने वेट लिफ्टिंग में कांस्य पदक जीतकर इतिहास रच दिया। ओलंपिक में पदक जीतने वाली वह पहली महिला बनीं।

2004 एथेंस

2004 के एथेंस ओलंपिक से भी भारत खाली हाथ नहीं लौटा। इस बार एक नए खेल शूटिंग में राज्यवर्धन सिंह राठौर ने राईफल के डबल टैप खेल में रजत पदक जीता। यह भारत के इतिहास में व्यक्तिगत खेलों में पहला रजत पदक था।

2008 बीजिंग

2008 बीजिंग ओलंपिक में और कमाल हुआ। भारत के अभिनव बिंद्रा ने निशानेबाजी में स्वर्ण पदक जीता। यह भारत के इतिहास में व्यक्तिगत खेलों में पहला स्वर्ण पदक था। उनके अलावा विजेंदर सिंह ने मुक्केबाजी और सुशील कुमार ने कुश्ती में कांस्य पदक जीते।

2012 लंदन

2012 लंदन ओलंपिक भारत के इतिहास में पदकों के लिहाज से सर्वश्रेष्ठ ओलंपिक साबित हुआ। छह खिलाड़ी पदक जीतने में सफल रहे। गगन नारंग (कांस्य) और विजय कुमार (रजत) ने निशानेबाजी, तो मैरी कॉम बॉक्सिंग और सायना नेहवाल ने बैडमिंटन में कांस्य पदक जीते। कुश्ती में योगेश्वर दत्त ने कांस्य जीता। पर कमाल किया सुशील कुमार ने। उन्होंने इस बार रजत बदक जीता। इस तरह ओलंपिक में व्यक्तिगत खेलों दो पदक जीतने वाले वह पहले भारतीय खिलाड़ी बने।

2016 रियो

यह रियो ओलंपिक भारतीय खेलों में महिला शक्ति का प्रतीक है। भारत इस बार केवल एक कांस्य और एक रजत पदक जीत पाया और दोनों पदक महिला खिलाड़ियों ने जीते। पी.वी, सिंधु ने बैडमिंटन में रजत तो साक्षी मलिक ने कुश्ती में कांस्य पदक जीतकर भारत की लाज बचाई।

अब देखना है कि इस ओलंपिक में भारत के खिलाड़ी क्या कमाल दिखाते हैं। सौ से ज्यादा खिलाड़ी टोक्यो में अपना कमाल दिखाने को तैयार हैं।

पी.वी, सिंधु

साक्षी मलिक

मैरी कॉम

योगेश्वर दत्त

मैरी कॉम

सुशील कुमार

विजय कुमार

सायना नेहवाल

गगन नारंग

कारनामे कमाल के

ऑस्कर श्वाह्म

(जन्म : 20 अक्तूबर 1847, स्वीडन)

दादा जी खेल के मैदान में

ऑस्कर श्वाह्म को बचपन से ही निशानेबाजी का शौक था। परंतु जब ओलंपिक खेल शुरू हुए, तो उनकी उम्र पचास के आसपास हो चुकी थी। पहली बार उन्होंने 1908 के लंदन ओलंपिक में भाग लिया। उस समय उनकी उम्र थी साठ वर्ष। इस उम्र में भी उन्होंने दो स्वर्ण और एक कांस्य पदक जीतकर लोगों को हैरान कर दिया। 1912 को स्टाकहोम ओलंपिक में भी उन्होंने एक स्वर्ण और एक कांस्य पदक जीता। 1916 में प्रथम विश्वयुद्ध होने के कारण अगले ओलंपिक खेल 1920 में एंटवर्प (बेल्जियम) में आयोजित हुए। पर पूरे जोश के साथ 72 वर्ष की उम्र में ऑस्कर फिर से मैदान में उपस्थित थे। अपने पोते के उम्र के प्रतियोगियों से मुकाबला करते हुए उन्होंने निशानेबाजी में रजत पदक जीत लिया। आज भी सबसे ज्यादा उम्र में ओलंपिक पदक जीतने का रिकार्ड उन्हीं के नाम है।

एलिजाबेथ रोबिंसन

(जन्म : 23 अगस्त 1911, अमेरिका)

मृत्यु के मुंह से लौटकर पदक जीता

बेट्टी एलिजाबेथ रोबिंसन ने जब पहली बार 1928 के एम्सर्टडम ओलंपिक में भाग लिया, तो वह केवल 16 वर्ष की थी। इसी ओलंपिक में पहली बार महिलाओं की 100 मीटर की दौड़ आयोजित की गई। इसे जीतने का श्रेय राबिंसन को ही मिला। इसके अलावा रिले दौड़ में भी उसने रजत पदक जीता।

इसके तीन वर्ष बाद 1931 में एक विमान दुर्घटना में बेट्टी बुरी तरह घायल हो गई। एक व्यक्ति ने बेहोश बेट्टी को मृत समझकर अपनी कार की डिक्की में डालकर अस्पताल में छोड़ आया। वह सात हफ्ते तक बेहोश रही। फिर होश में तो आ गई, परंतु दो वर्षों तक वह अपने पैरों पर खड़ी भी नहीं हो पाई। पर दृढ़ निश्चयी राबिंसन कड़ी मेहनत कर फिर से 1936 के बर्लिन ओलंपिक में लौटी। यही नहीं, 4 गुणा 400 मीटर की रिले दौड़ में उसने स्वर्ण-पदक जीतकर अपनी वापसी को सार्थक कर दिया।

विलियम रायक्राफ्ट

(जन्म : 17 मार्च 1915, आस्ट्रेलिया)

अस्पताल से खेल के मैदान पर

विलियम रॉयक्राफ्ट ने जब पहली बार 1960 में हुए रोम ओलंपिक में भाग लिया तो वह 45 वर्ष के थे। पहले ही दिन टीम घुड़सवारी प्रतियोगिता में उनके घोड़े ने उन्हें गिरा दिया। उनके कंधे की हड्डी टूट गई। उन्हें अस्पताल ले जाया गया। उन्हें पता चला कि उनके न खेलने पर अगले दिन उनकी पूरी टीम को अयोग्य घोषित कर दिया जाएगा।

अगले दिन वह बिस्तर से उठे

और स्टेडियम में जा पहुंचे। अपने सहयोगियों के साथ उन्हें स्पर्धा में भाग लिया और घायल होने के बाद भी स्वर्ण पदक जीतने में सफल हुए।

विल्मा रूडोल्फ

(जन्म : 23 जून 1940, अमेरिका)

विकलांगता बाधक नहीं

विल्मा रूडोल्फ जब छोटी थी, तो पोलियो की शिकार हो गई। परंतु जीवट की धनी इस महिला ने अपनी इच्छा शक्ति से इसे अपनी सफलता के आड़े आने नहीं दिया। दौड़ मुकाबलों में उन्हें इतनी सफलता मिली कि आज भी उन्हें दुनिया की सर्वश्रेष्ठ महिला धाविकाओं में से माना जाता है। 1956 के मेलबोर्न ओलंपिक और 1960 के रोम ओलंपिक में भाग लेते हुए उन्होंने 3 स्वर्ण और एक कांस्य पदक जीता। एक समय ऐसा भी था जब 100 मीटर, 200 मीटर और 4 गुणा 100 मीटर रिले दौड़ में विश्व रिकार्ड उन्हीं के नाम थे।

मार्क स्पिट्ज़

(जन्म : 10 फरवरी 1950, अमेरिका)

एक ओलंपिक में सात स्वर्ण

मार्क स्पिट्ज ने 1968 के मैक्सिको ओलंपिक की तैराकी प्रतियोगिता में भाग लेने जाने से पहले घोषणा की थी कि वह छह स्वर्ण पदक जीतने का प्रयास करेगा। परंतु वह अपनी बात की लाज नहीं रख सका। छह के बदले वह केवल दो स्वर्ण पदक ही जीत पाया। अपनी असफलता उसे सालती रही। चार वर्ष बाद 1972 के म्यूनिख ओलंपिक में उसने अपनी साध अनोखे अंदाज में पूरी की। उसने छह नहीं, कुल सात स्वर्ण पदक जीते। उसने केवल सात स्पर्धा में ही भाग लिया और सातों में नया विश्व रिकार्ड बनाया।

नादिया कोमेनेकि

(जन्म : 12 नवंबर 1961, रोमानिया)

पूर्ण अंक प्राप्त करने वाली प्रथम जिमनास्ट

नादिया ने केवल 15 वर्ष की आयु में मांट्रियल ओलंपिक में भाग लिया। परंतु यहां शानदार प्रदर्शन करते हुए वह दुनिया की ऐसी पहली जिमनास्ट बनी, जिसे 10 में से 10 अंक मिले। 1980 के मास्को ओलंपिक में भी उसने भाग लिया और कुल मिलाकर पांच स्वर्ण, तीन रजत और एक कांस्य पदक जीता।

डेराटू टुलू

(जन्म : 21 मार्च 172, इथोपिया)

स्वर्ण पदक जीतने वाली पहली अश्वेत धाविका

डेराटू बचपन में जानवर चराती थी। उनके पीछे-पीछे भागते हुए कब वह धाविका बन गई उसे पता ही नहीं चला। 16 वर्ष की उम्र में वह 10000 मीटर की दौड़ में 1992 के बार्सिलोना ओलंपिक में भाग लेने गई। इसे जीतने में सफल भी हुई। ऐसा करके ओलंपिक में स्वर्ण पदक जीतने वाली वह पहली अश्वेत महिला धाविका बनी। बाद में सिडनी ओलंपिक (सन 2000) में उसने इस स्पर्धा को फिर जीता।

माइकल फेल्प्स

(जन्म : 30 जून 1985, अमेरिका)

सर्वाधिक पदक विजेता

माइकल फेल्प्स को तैराकी के इतिहास का महानतम एथलीट माना जाता है।

सिर्फ 18 साल की उम्र में उन्होंने 2004 के एथेंस ओलंपिक में 8 पदक (6 स्वर्ण और 2 कांस्य) जीते थे। इस तरह उन्होंने सोवियत जिमनास्ट, अलेक्जेंडर दित्यातिन के किसी भी एक ओलिंपिक में आठ पदक जीतने के रेकॉर्ड की बराबरी कर ली थी ।

फिर 2008 बीजिंग ओलंपिक खेलों में उन्होंने 8 स्वर्ण पदक जीतकर मार्क स्पिट्ज का एक ओलंपिक में सर्वाधिक 7 स्वर्ण पदक जीतने रेकॉर्ड भी तोड़ दिया ।

इतना ही नहीं, 2012 के लंदन ओलंपिक में भी 4 और 2016 के रियो ओलंपिक में भी 5 स्वर्ण पदक और जीते।

ओलम्पिक खेलों में कुल पदकों की सूची में भी फेल्प्स कुल 28 पदक (23 स्वर्ण, 3 रजत, 2 कांस्य) के साथ पहले स्थान पर हैं।

माइकल फेल्प्स ने अपने तैराकी कैरियर में 39 बार विश्व कीर्तिमान स्थापित किए और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कुल 83 पदक जीते हैं । जितने पदक माइकल फेल्प्स अकेले ओलंपिक में जीते हैं, उतने तो कई देशों ने अपने ओलंपिक इतिहास में नहीं जीते हैं।

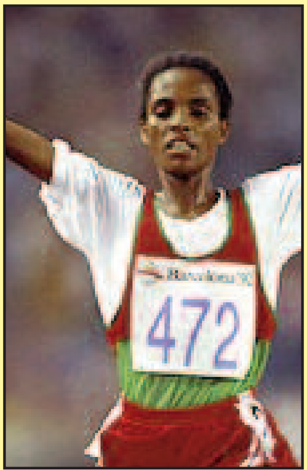

यह भी जानो

ओलंपिक मशाल : ओलंपिक अग्नि को प्रज्ज्वलित करने के लिए ओलंपिक मशाल का प्रयोग किया जाता है। यह मशाल एथेंस से जलाने के बाद पूरे विश्वभर में घूमकर ठीक उसी समय ओलंपिक स्टेडियम में पहुंचती है, जब अग्नि प्रज्ज्वलित करने का समय होता है। विश्वभर के जाने-माने खिलाड़ी इस मशाल को लेकर दौड़ते हैं। पहली बार मशाल का प्रयोग सन 1936 के बर्लिन ओलंपिक में किया गया। मशाल को पहले एक विशेष समारोह में यूनान के ओलंपिया नगरी में प्रज्ज्वलित किया गया फिर 3000 धावक इसे सात देशों से गुजारते हुए बर्लिन लेकर पहुंचे। इस मशाल को जलाने के लिए सूर्य की किरणों का प्रयोग होता है। एथेंस ओलंपिक के लिए जलाई गई मशाल पहली बार सभी महाद्वीपों से होकर गुजरी थी।

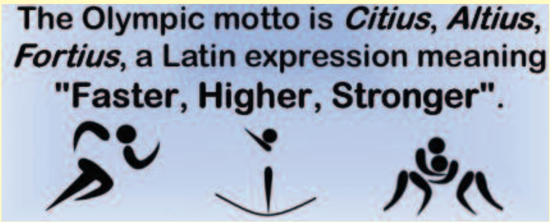

ओलंपिक मोट्टो (उद्देश्य) : ओलंपिक का मोट्टो है-फास्टर, हाइअर और स्टौंगर यानी तेज, ऊंचा और मजबूत। इसका प्रयोग पहली बार 1920 के सातवें एंटवर्प ओलंपिक में किया गया। फ्रांस के एक पादरी फादर डीडॉन ने इस वाक्य की कल्पना की थी। वह एक स्कूल में अध्यापक थे। उनकी खेलों में बहुत रुचि थी। उन्होंने इस वाक्य का प्रयोग अपने स्कूल से जुड़े क्लबों में किया था।

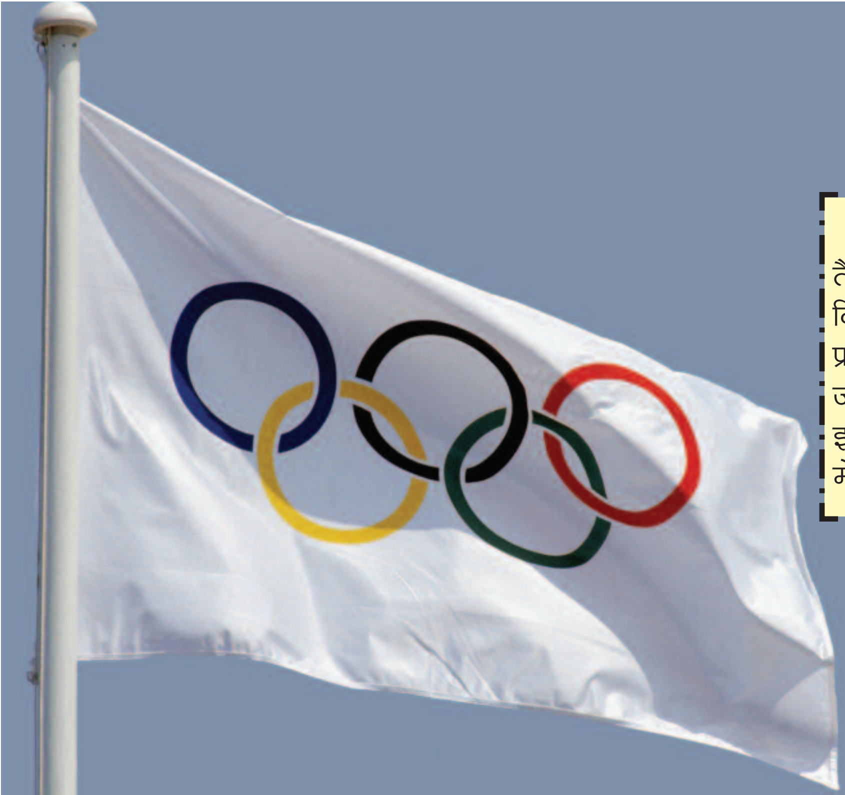

ओलंपिक ध्वज : सन 1913 में ओलंपिक ध्वज तैयार किया गया। इसका सुझाव भी कोबर्टिन ने ही दिया था। सफेद सिल्क से बने झंडे पर ओलंपिक के प्रतीक पांच छल्ले लगे हैं। इसका उद्घाटन फ्रांस में जून 1914 में किया गया। परंतु किसी ओलंपिक में इसका पहली बार प्रयोग 1920 के एंटवर्प ओलंपिक में हुआ।

ओलंपिक मस्कट (शुभंकर) : सही मायने में ओलंपिक से बच्चों को जोड़ने का काम शुभंकर ही करते हैं। पहली बार ओलंपिक में किसी शुभंकर का प्रयोग 1972 में म्यूनिख ओलंपिक में हुआ। इसके बाद तो शुभंकर घोषित करने की परंपरा ही बन गई। आमतौर पर मेजबान देश अपने किसी प्रमुख जानवर को ही शुभंकर बनाते हैं।

ओलंपिक अग्नि : ओलंपिक खेल शुरू होने से पहले स्टेडियम में ओलंपिक अग्नि प्रज्ज्वलित की जाती है। इसके लिए ओलंपिक मशाल का ही प्रयोग किया जाता है। पूरे ओलंपिक के दौरान यह अग्नि प्रज्ज्वलित रहती है। सबसे पहले ओलंपिक अग्नि का प्रयोग 1928 के एम्सटर्डम ओलंपिक में किया गया था।

पांच छल्ले : ओलंपिक खेलों के प्रतीक हैं एक दूसरे से जुड़े पांच छल्ले। इनमें प्रथम पंक्ति में तीन व दूसरी पंक्ति में दो छल्ले हैं। इनके रंग हैं– नीला, काला,लाल, पीला और हरा । इनकी पृष्ठभूमि में सफेद रंग हैं। इसे बनाने का श्रेय आधुनिक ओलंपिक खेलों के जनक 'बेरौन पियरे दी कोबर्टिन' को मिला। उनके अनुसार यह सच्चे अर्थों में एक अंतर्राष्ट्रीय प्रतीक है। इसके पांच छल्ले, पांचों महाद्वीप का प्रतिनिधित्व करते हैं। इसका सांकेतिक अर्थ है कि इस खेल के द्वारा सारे महाद्वीप के खिलाड़ी आपस में मिलते हैं और स्वस्थ प्रतियोगिता करते हैं।

क्या आप जानते हैं कि छल्लों के लिए खास तौर पर इन पांच रंगों का ही प्रयोग क्यों किया गया? इसका मुख्य कारण है–इनमें प्रयोग किए गए रंगों में से कम से कम एक रंग हर देश के झंडे पर मिलता है।

भविष्य के सितारे

तुम बच्चों के लिए विशेष रूप से कुछ पेज हमने सुरक्षित किए हैं। तुम जिस रूप में चाहो, अपनी भावनाएं व्यक्त कर सकते हो। उन्हें संजोकर हम यहां देंगे।

आखिर तुम सब में से ही भविष्य के कलाकार, इस दुनिया के सामने आकर भारत का नाम रोशन करेंगे। कभी चित्रकार, तो कभी कहानीकार तो कभी कवि या विचारक बनकर। तो फटाफट रचनाएं भेजो-

email : payasmagazine@gmail.com
whatsapp : 7982014609

बाल कोना में छपने वाले बच्चों में से तीन बच्चों को प्रथम (तीन सौ), द्वितीय (दो सौ) और तृतीय पुरस्कार (एक सौ रुपए) देने का निर्णय लिया है, दीप्ति मित्तल ने

अपनी हिन्दी और राइटिंग स्किल्स को तराशें, पायस से जुड़कर, कॉल करें : 7982014609

खुशी कौशिक

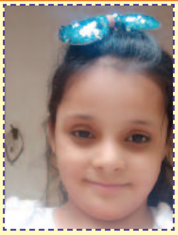

नाम : खुशी कौशिक
उम्र : 6 वर्ष
कक्षा : 2
स्कूल : जैन पब्लिक स्कूल, बीकानेर, राजस्थान

रुद्रांजलि राजे मिश्रा

नाम : रुद्रांजलि राजे मिश्रा
उम्र : 13
कक्षा : 9
सतना पब्लिक हाई स्कूल
मध्य प्रदेश

नाम : ऐशानी हल्दर
उम्र : 9
कक्षा : 4
स्कूल सेंट जेवियर्स इंटीच्यूशन

ऐशानी हल्दर

नाम : प्रभाकर कुमार
उम्र : 13
कक्षा : 6
स्कूल :मेबी फलावर स्कूल,पटना (बिहार)

प्रभाकर कुमार

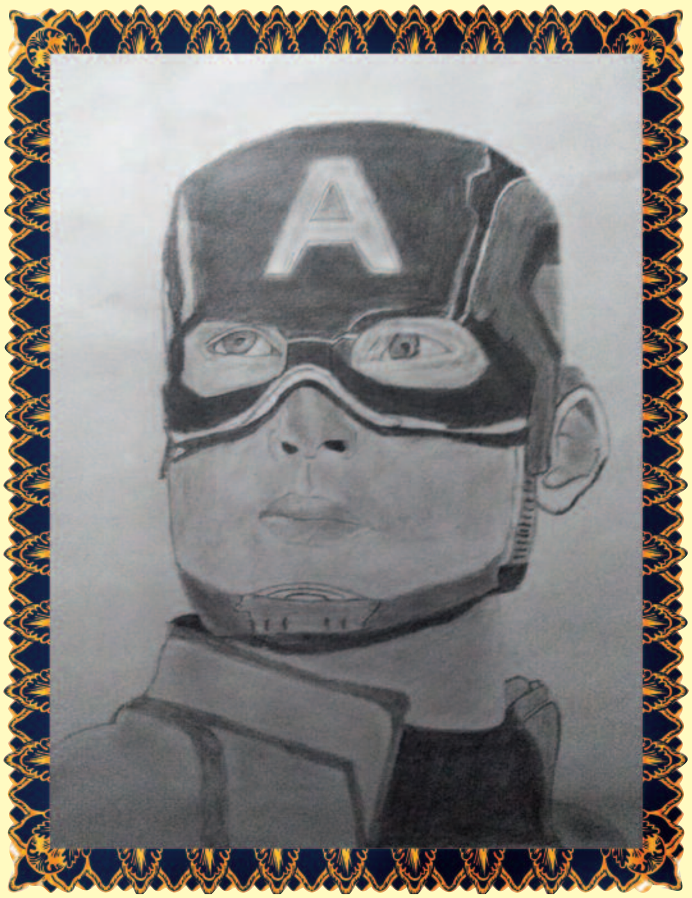

नाम : लिली यादव
उम्र :7, कक्षा :3
स्कूल एटोमिक एनर्जी सेंट्रल स्कूल नं. 3, रावट भाटा, राजस्थान

लिली यादव

आन्या

तानिया कौशिक

नाम : आन्या
उम्र : 11 वर्ष
कक्षा : 7
स्कूल : क्वींस वैली स्कूल, नई दिल्ली

नाम : तानिया कौशिक
उम्र : 9 वर्ष
कक्षा : 5
केंद्रीय विद्यालय नं.1
बीकानेर, राजस्थान

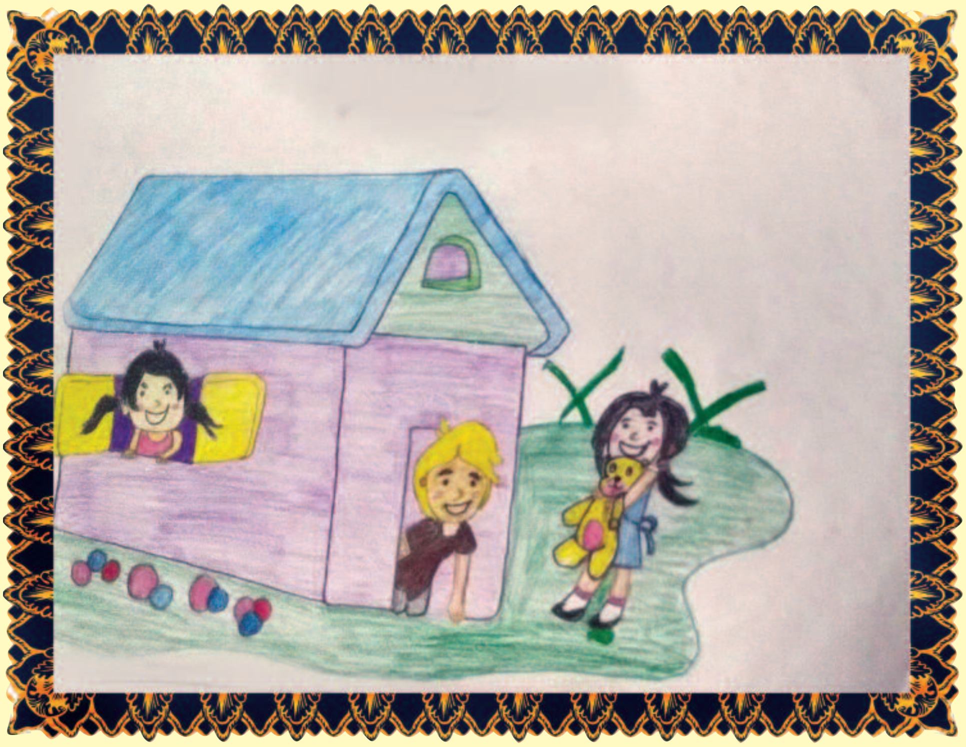

नाम : सिद्धि अग्रवाल
उम्र : 11, कक्षा : 6
माउंट लिटरे जी स्कूल, इटावा, उत्तर प्रदेश

सिद्धि अग्रवाल

तृतीय पुरस्कार

पछतावा

नाम : अलीशा सक्सेना
उम्र : 15
कक्षा : 10, स्कूल : पोतदार इंटरनेशनल स्कूल, इंदौर, मध्य प्रदेश

प्रिया को नाचने का बहुत शौक था। उसे दिन-रात नृत्य के अलावा कुछ नहीं सूझता था।

एक दिन समाचार पत्र में उसने पढ़ा कि उसके शहर में नृत्य स्पर्धा होने जा रही हैं। यह पढ़कर प्रिया की खुशी का ठिकाना ना रहा। वह इस प्रतियोगिता में भाग लेना चाहती थी।

उसने अपनी मां से इस बात की अनुमति मांगी, तो उन्होंने मना कर दिया, "तुम्हारी परीक्षा सिर पर है, पहले परीक्षा की तैयारी करो। नाच-गाने के बारे में बाद में सोचना।

प्रिया के बहुत जिद करने पर उसकी मां मान गईं। लेकिन उन्होंने प्रिया के सामने एक शर्त रख दी, कि पहले वह पढ़ाई करेगी और उसके बाद वह नृत्य पर ध्यान देगी। प्रिया खूब मेहनत और लगन से प्रतियोगिता की तैयारी करने लगी।

अभी प्रतियोगिता आयोजित होने में चार दिन शेष थे। बाहर बारिश हो रही थी। उसकी सहेलियां बाहर पानी मे खेल रही थीं। प्रिया भी उनके साथ खेलना चाहती थी लेकिन उसकी मां ने समझाया, "तुम बीमार पड़ सकती हो और अभी तुम्हारी परीक्षा और नृत्य प्रतियोगिता दोनों है।"

प्रिया ने मां की नहीं मानी और खेलने चली गई। उसने सभी सहेलियों के साथ बारिश में खेलना शुरू कर दिया। अचानक प्रिया का पैर फिसल गया और वह गिर पड़ी।

प्रिया के पैर में बहुत दर्द हो रहा था। उसने उठने की कोशिश की लेकिन उससे उठा नही जा रहा था, दर्द भी बहुत हो रहा था। शायद उसके पैर की हड्डी टूट गई थी।

मां ने प्रिया को देखा पर कुछ कहा नही और न ही डांटा, वह तुरंत उसे डॉक्टर के पास ले गईं। डॉक्टर ने कहा कि पैर में मोच आ गई है । प्रिया कुछ दिन में ठीक हो जाएगी। लेकिन पैर पर जोर नहीं डालना हैं।

प्रिया घर आई और सीधे अपने कमरे में चली गई। वह बहुत दुखी थी। उसने कमरे में बैठकर सोचा,

'मैंने मां की बात न मान कर कितनी बड़ी गलती की।'

पर प्रिया ने हिम्मत नही हारी और और नृत्य की तैयारी जारी रखी। प्रिया ने ठान लिया था कि उसे प्रतियोगिता में अवश्य भाग लेना है।

प्रतियोगिता के दिन उसे मंच पर कदम रखने का मौका मिला। सभी देखने को उत्सुक थे कि कैसे वह नाचेगी? उसके प्रदर्शन के बाद हर कोई हैरान था। उसका नृत्य सुंदर था। प्रिया के जुनून ने इसे और भी अद्भुत बना दिया था। प्रिया प्रथम पुरस्कार तो नहीं जीत सकीं लेकिन उसकी हिम्मत के कारण उसे प्रोत्साहन पुरस्कार दिया गया ।

इतनी बड़ी प्रतियोगिता में पुरस्कार लेते समय प्रिया ने सोचा, 'उस दिन मां की बात मान ली होती और बारिश में खेलने ना गई होती तो मुझे प्रथम पुरस्कार भी मिल सकता था।'

बारिश का मौसम

नाम : काजल धारीवाल
उम्र : 12, कक्षा : 9,
स्कूल : शा. पद्मा कन्या राजे उच्च मा. विद्यालय, ग्वालियर, मध्य प्रदेश

देखो बारिश का मौसम आया
साथ में अपने खुशियाँ लाया।
चारो तरफ फैली हरियाली
फूल खिले हर डाली-डाली
कु-कु-कु कोयल गाती
सबका मन वह हर्षाती
गरज-गरज बरसते बादल,
मोर मोरनी सुन्दर नाच दिखाती
मेढक करते टर-टर-टर,
नदिया बहती सर-सर-सर
मेघा गरजे गर-गर-गर,
बूँद गिरी फर-फर-फर,
नानी मासी सबने खूब नाचा गाया
देखो बारिश का मौसम आया।

एलकॉन इंटरनेशनल के सितारे
एलकॉन इंटरनेशनल के सितारे एलकॉन इंटरनेशनल के सितारे

प्रथम पुरस्कार

ध्रुव

नाम : ध्रुव
उम्र : 9
कक्षा : 4, स्कूल : एलकॉन इंटरनेशनल, मयूर विहार, दिल्ली

द्विशा पुजारा

नाम : द्विशा पुजारा
उम्र : 11
कक्षा : 7, स्कूल : एलकॉन इंटरनेशनल, मयूर विहार, दिल्ली

वाणी अरोड़ा

नाम : वाणी अरोड़ा
उम्र : 7
कक्षा : 4, स्कूल : एलकॉन इंटरनेशनल, मयूर विहार, दिल्ली

एलकॉन इंटरनेशनल के सितारे एलकॉन इंटरनेशनल के सितारे एलकॉन इंटरनेशनल के सितारे एलकॉन इंटरनेशनल के सितारे

एलकॉन इंटरनेशनल के सितारे
एलकॉन इंटरनेशनल के सितारे

हमारी शान तिरंगा

नाम : श्रेयान गुप्ता
उम्र : 9
कक्षा : 5, स्कूल : एलकॉन इंटरनेशनल, मयूर विहार, दिल्ली

हम तो मुश्किलों से लड़कर आजाद हुए ।
आजादी का जश्न मना खुशी से झूम लिए ।
देखो यह हमारा तिरंगा झंडा प्यारा ।
तीन रंगों का मेल लिए देता संदेश न्यारा ।
रहे सदा यह झंडा ऊँचा कसम ये खाएं।
इसका परचम चहुँ ओर हम सब फैलाएं।
आकाश को रहे यह छूता कर्म ऐसे करें।
सारे जग में अपने भारत का नाम करें।
कितना प्यारा झंडा ऊँचा रहे सदा ।
शान तिरंगा हम नमन करें इसे सदा।

मेरा भारत न्यारा

मानवता को हम अपनाएँ, नैतिकता का ज्ञान फैलाएँ।
आओ हम सब मिलजुल कर, ज्ञान की ज्योति जलाएँ।
मेरा भारत सबसे न्यारा, जन-जन में सन्देश फैलाएँ।।
हर जीव में एक ईश बसा है, सच्चे मन से ये अपनाएँ।
प्राणिमात्र के हित चिंतन से, धरती को हम महकाएँ।
मेरा भारत सबसे न्यारा, जन-जन में सन्देश फैलाएँ।
सबसे करके मेल-मिलाप,मानवता की ज्योति जलाएँ।
सबका सम्मान करें हम, मन से हीन भावना मिटाएँ।
। मेरा भारत सबसे न्यारा, जन-जन में सन्देश फैलाएँ।
मानव बनकर जन्म लिया,आओ मिलकर धर्म निभाएँ।
बुरे विचार मन से मिटा,विश्व बंधुत्व की भावना जगाएँ।
मेरा भारत सबसे न्यारा, जन-जन में सन्देश फैलाएँ।

नाम : वंशिका तिवारी
उम्र : 13
कक्षा : 8, स्कूल : एलकॉन इंटरनेशनल, मयूर विहार, दिल्ली

आजादी का मतलब

आज़ादी का मतलब क्या है ?
सुना था दादी नानी से
मम्मी की कहानी से
देश था, गुलाम कभी
अंग्रेजों की, गुलामी से
चलाते थे अंग्रेज, अपने मन की
नियम, ना मानने पर, देते थे धमकी
हम अपने मन से, कुछ भी, कर नहीं सकतेथे
आँखों से टप टप, आँसू बरसते थे
फिर हमने लड़ी, आजादी की लड़ाई
तब जाकर स्वतंत्रता पाई
पर, मैं हूँ एक छोटी सी बच्ची
बात कहती हूँ मैं, बिल्कुल ही सच्ची
मेरे लिए आज़ादी क्या है ?
बताती हूँ सच में कि यह क्या है
मेरे लिए तो आज़ादी है
ठंड में, देर तक सोना
मन पसंद चीज़, ना मिलने पर, रोना
जंक फूड खाना
होमवर्क करने से पहले ही, सो जाना
खूब खेलना और गाना
दोस्तों के साथ घूमना
और मस्ती में, डूब जाना।
स्कूल में जा कर, तरह-तरह के
झूले झूल कर, झूम जाना
कक्षा में, टीचर के आने से पहले
किसी काम का बहाना बनाकर
बाहर चले जाना
अपनी इस आज़ादी को पाने के लिए
कैसे क्रांति करूं मैं ?
अपनी इस आज़ादी की
कैसे प्राप्ति करूं मैं ?

अनुष्का झा
उम्र : 9
कक्षा : 5, स्कूल : एलकॉन इंटरनेशनल, मयूर विहार, दिल्ली

एलकॉन इंटरनेशनल के सितारे एलकॉन इंटरनेशनल के सितारे एलकॉन इंटरनेशनल के सितारे

एलकॉन इंटरनेशनल के सितारे एलकॉन इंटरनेशनल के सितारे एलकॉन इंटरनेशनल के सितारे एलकॉन इंटरनेशनल के सितारे

धूप तोड़ लातीं

गुन-गुन धूप तोड़ लाती हैं,
सूरज से मिलकर आती है।
कितनी प्यारी लगें पतंगें,
अंबर में चकरी खाती हैं।
ऊपर को चढ़ती जाती हैं,
फर-फर नीचे आती हैं ।
सर- सर करती फिर,
नीलगगन से बतियाती हैं।
डोरी के संग इठलाती हैं,
ऊपर जाकर मुस्काती हैं ।
जैसे अंगुली करे इशारे,
इधर-उधर उड़ती जाती हैं।
कभी काटती, कभी कट जाती हैं,
आवारा उड़ती जाती हैं।
बिना सहारे हो जाने पर,
कटी पतंगें कहलाती हैं।
तेज़ हवा से फट जाती हैं,
बंद हवा में गिर जाती हैं ।
उठना- गिरना जीवन का क्रम,
बात हमें यह समझाती हैं।

अरनव जैन

नाम : अरनव जैन
उम्र : 9
कक्षा : 5, स्कूल : एलकॉन इंटरनेशनल, मयूर विहार , दिल्ली

नाम : रिदम अग्रवाल
उम्र : 8
कक्षा : 4 , स्कूल : एलकॉन इंटरनेशनल, मयूर विहार , दिल्ली

पेंच लड़ाओ

फर- फर, फर-फर ऊपर जाए,
आसमान में ऊपर उड़ती जाए ।
जैसे ही धागा कट जाए,
नीचे जाकर लूटी जाए ।
पतंग -पतंग इधर आओ,
सब बच्चों को खुश कर जाओ।
सिर के ऊपर से जब जाए,
बच्चें पतंग- पतंग चिल्लाए।
पेंज लड़ाने में मज़ा आए,
पर कटते ही सब उदास हो जाए।
फर-फर फर-फर उड़ती जाए,
आसमान मे ऊपर पहुँच जाए ।

रिदम अग्रवाल

परियों को संदेश पहुँचाए

सुदंर प्यारी मेरी पतंग,
आसमान में उड़ी पतंग।
रंग-बिरंगी मेरी पतंग,
सबसे प्यारी मेरी पतंग।
गगन मे उड़ती है ये जाए,
परियों को संदेश पहुँचाएँ।
काश मैं भी पतंग बन जाऊँ,
सर-सर- सर उड़ती जाऊँ।

रिदिमा भटनागर

नाम : रिदिमा भटनागर
उम्र : 7
कक्षा : 3, स्कूल : एलकॉन इंटरनेशनल, मयूर विहार , दिल्ली

भाई–बहन का प्यार

एक गांव के एक बड़े से घर में वन्दना नाम की लड़की रहती थी। राखी का त्योहार आने ही वाला था। पर वन्दना का भाई राधव पढ़ाई करने के लिए अपनी बुआ के साथ शहर रहने गया था। वह उससे मिलने के लिए कोई उपाय सोच रही थी। वह अपने पिताजी के पास गई और पूछा,"पिता जी मुझे रेलगाड़ी से भाई के पास जाना है, ताकि हम दोनों राखी एक साथ मना सके।" पिता जी ने कहा, "अगर हम रेलगाड़ी से गए, तो तीन दिन का सफर करना पड़ेगा और राखी आने में सिर्फ दो दिन बाकी हैं।"

वन्दना उदास होकर अपने कमरे में चली गई। दो दिन बाद जब घर की घंटी बजी। वन्दना ने दरवाजा खोला और देखा, उसका भाई राधव और बुआ, वन्दना के साथ राखी का त्योहार मनाने आए थे।

वन्दना बहुत खुश हो गई और उसने अपने भाई को राखी बांधी।

गुरनूर कौर

रक्षाबंधन

रक्षाबंधन का त्योहार भाई- बहन के प्रेम का प्रतीक है। इस दिन बहने अपने भाई की सुरक्षा और सफलता की कामना करती है और भाई अपनी बहनों की रक्षा का वचन लेते हैं। यह त्योहार हर साल श्रावण मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है। बहनें अपने भाइयों की कलाई पर राखी बांधने के लिए थाली में कुमकुम, पानी का कलश, आरती के लिए ज्योत, राखी और उनकी पसंदीदा मिठाई रखती है।

साल 2021 में रक्षाबंधन का पर्व 22 अगस्त, रविवार को मनाया जाएगा। पहले बहनें रेशम का धागा भाई की कलाई बांधती थी और भाई उन्हें आशीर्वाद देते थे। परंतु आज के आधुनिक युग में बाजारों में अनेक प्रकार की राखियां उपलब्ध है । जिसमें कुछ तो सोने-चांदी की भी है। आजकल सब भाई अपनी बहनों को उपहार देते हैं। यह बंधन धीरे-धीरे दिखावे में तबदील हो रहा है । आज भाई के दूर रहने पर कोरियर द्वारा राखी भेज दिया जाता है । इसके अतिरिक्त मोबाइल पर भी राखी की शुभकामनाएं दे दी जाती हैं।

पिछले साल यह त्योहार और भी नए और अनोखे अंदाज में मनाया गया था क्योंकि कोविड-19 का दौर चल रहा था। लोगों ने आनलाइन मीटिंग कर एक दूसरे को बधाई दी। दूसरे के लिए आनलाइन उपहार बुक किए। ज्यादातर लोगों ने अपने अपने घर में रहकर ही इस त्योहार का आनंद लिया ।

उम्मीद करती हूं कि इस साल हम सब आपस में मिलकर एक साथ यह त्योहार का मजा ले सके ।

प्रीशा अग्रवाल

धरा के आभूषण

हरे भरे हैं वृक्ष जहाँ,
पृथ्वी पर है स्वर्ग वहाँ
ठंडी होती पेड़ों की छाया
शीतल कर जलती काया।
पेड़ हमारी शान है,
हमारा जीवन और प्राण हैं।
वृक्ष देते शुद्ध हवा,
जीवन को अनमोल दवा
हमारा उद्देश्य और प्रयास,
सब और वृक्षों का विकास
वृक्ष धरा के हैं आभूषण,
दूर करते हैं प्रदूषण।
हरा वृक्ष है जीवनदाता,
बादल रोककर वर्षा लाता
जब पृथ्वी हरी-भरी होगी,
तभी जनता शान्त स्वस्थ होगी।
आओ, मिलकर वृक्ष लगाएँ
अपने विद्यालय को सुन्दर बनाएँ।

निमरत

नाम : गुरनूर कौर
उम्र : 10
कक्षा : 5, स्कूल : एलकॉन इंटरनेशनल, मयूर विहार , दिल्ली

नाम : निमरत
उम्र : 9
कक्षा : 5, स्कूल : एलकॉन इंटरनेशनल, मयूर विहार , दिल्ली

नाम : प्रीशा अग्रवाल
उम्र : 9
कक्षा : 4, स्कूल : एलकॉन इंटरनेशनल, मयूर विहार , दिल्ली

एलकॉन इंटरनेशनल के सितारे एलकॉन इंटरनेशनल के सितारे

बहुमुखी प्रतिभा के धनी

नाम : अनविका शर्मा

उम्र : 5, कक्षा : 1

स्कूल : एलकॉन इंटरनेशनल, मयूर विहार , दिल्ली

नाम : टियाना गुप्ता

उम्र : 4

कक्षा : प्रेप

स्कूल : एलकॉन इंटरनेशनल, मयूर विहार , दिल्ली

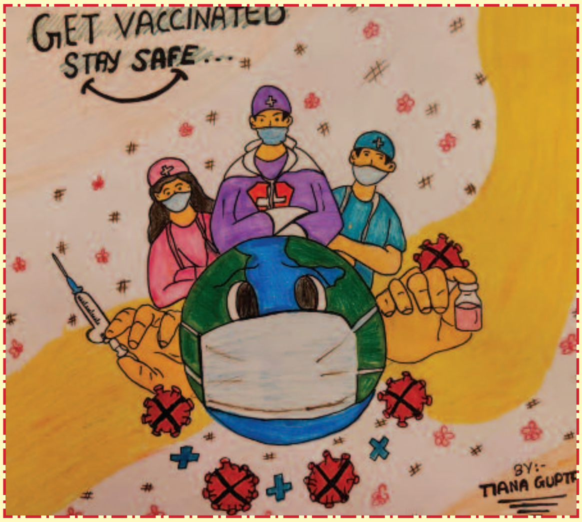

एलकॉन इंटरनेशनल के सितारे एलकॉन इंटरनेशनल के सितारे एलकॉन इंटरनेशनल के सितारे एलकॉन इंटरनेशनल के सितारे

नाम : भूमि सिंह, उम्र : 5, कक्षा :1, स्कूल : एलकॉन इंटरनेशनल, मयूर विहार, दिल्ली

बेटी

माँ दुर्गा की शक्ति हूँ।
मैं भी पढ़ लिख सकती हूँ।
मात पिता की सेवा जानू।
अपने फ़र्ज को मैं पहचानूँ।
जब थी इस दुनिया में आयी।
सारे शहर में बांटी मिठाई
मुझको लाड़ प्यार से पाला।
स्कूल भेज सिखाई वर्णमाला
मैं अपने घर की शान हूँ।
माँ दुर्गा की शक्ति हूँ।

लावण्य श्रीवास्तव

प्रजेश रस्तोगी

लावण्य श्रीवास्तव
उम्र : 9
कक्षा : 4, स्कूल : एलकॉन इंटरनेशनल, मयूर विहार, दिल्ली

प्रजेश रस्तोगी
उम्र : 5,
कक्षा : 1, स्कूल : एलकॉन इंटरनेशनल, मयूर विहार, दिल्ली

एलकॉन इंटरनेशनल के सितारे एलकॉन इंटरनेशनल के सितारे एलकॉन इंटरनेशनल के सितारे एलकॉन इंटरनेशनल के सितारे

ऑनलाइन डिजिटल मासिक बाल पत्रिका

पायस

◆ जो बच्चे अपनी कल्पना के पंख फैलाकर जैसे भी उड़ना चाहेंगे, हम उन्हें पायस में आकाश उपलब्ध करवाएंगे। रचनाकारों के साथ–साथ बच्चों की लिखी कहानी, कविता के साथ अन्य सभी विधाओं को यहां स्थान मिलेगा। आपसे आग्रह है कि अपने आसपास के बच्चों को इसका लाभ उठाने के लिए प्रेरित करें। इसकी पीडीएफ कापी अपने लोगों में शेयर करें।

◆ यह पत्रिका निशुल्क है। पर जो किसी भी रूप में सहायता करना चाहें, पत्रिका को चलाने के लिए आर्थिक सहयोग प्रदान करना चाहें, उनका स्वागत है।

◆ **रचनाकारों से :** प्रकाशन हेतु भेजी जाने वाली रचना अवश्य टाइप की हुई हो। हस्तलिखित अथवा स्कैन करके भेजी गई सामग्री स्वीकार नहीं कर पाएंगे। रचना पीडीएफ में न भेजकर, वर्ड फाइल में भेजें। अभी यह एकल प्रयास है, अतः टाइप करवाना संभव नही है।

◆ **बाल पाठकों से :** प्रकाशन हेतु भेजी जाने वाली रचना अवश्य टाइप की हुई हो। हस्तलिखित अथवा स्कैन करके भेजी गई सामग्री स्वीकार नहीं कर पाएंगे। रचना पीडीएफ में न भेजकर, वर्ड फाइल में भेजें। जो भी चित्र भेजें, उसे बढ़िया से स्कैन करके भेजें। अगर चित्र साफ नहीं होंगे, तो उनका उपयोग नहीं हो पाएगा। हर रचना या पेंटिंग के साथ अपना क्लोजअप फोटो, उम्र, कक्षा, स्कूल का नाम व मोबाइल नंबर लिखकर भेजना न भूलें।

बातचीत व जानकारी के लिए : whatsapp no : 7982014609
रचना भेजने के लिए : email : **payasmagazine@gmail.com**

◆ आपका सहयोग किसी भी रूप में हो सकता है। बाल पत्रिका को संबल प्रदान करने के लिए आप सादर आमंत्रित हैं––

✦ संरक्षक बनकर ✦ मासिक अनुदान देकर ✦ यथासंभव एकमुश्त सहायता देकर ✦ विज्ञापन देकर ✦ हर महीने छपने वाले लेखकों या चित्रकारों के भुगतान की जिम्मेदारी उठाकर ✦ किसी और रूप में, जो आपको उचित लगे।

◆ अनुदान के लिए प्रयोग करें––

ONLINE TRANSFER / UPI

STATE BANK OF INDIA
Anil Kumar Jaiswal
S/A no- 20155811729
Ifsc code SBIN0005943
Mobile number associated with account 9810556533

PAYTM : 7982014609
PHONEPE : 9810556533
GOOGLE PAY : 9810556533
ANIL JAISWAL

अनिल जायसवाल
9810556533, 7982014609
email : **payasmagazine@gmail.com**